लोक कथाओं में फल–1
सेब और सन्तरा

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Cover Title : Lok Kathaon Mein Phal-1-Seb Aur Santara (Fruit in Folktales-1-Apple and Oranges)
Cover Page picture : Apples and Oranges
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail : hindifolktales@gmail.com
Website : www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

सीरीज़ की भूमिका 5

लोक कथाओं में फल–1–सेब और सन्तरा 7

1 डोरोथी और सेब का बीज 9

2 सन्तोष का सेब 15

3 राजकुमार और सेब 27

4 लो अर्न के सुनहरी सेब 35

5 एक छोटा चरवाहा 52

6 सेब वाली लड़की 63

7 चील मुर्गे क्यों खाती है? 70

8 आधा नौजवान 79

9 पोम और पील 93

10 लोकी और इडूना 107

11 एक राजा और सेब 132

12 तीन सुनहरे सन्तरे 139

13 प्यार के तीन सन्तरे 157

14 तीन सन्तरों से प्यार 167

15 जिप्सी रानी 184

16 जादुई सन्तरे का पेड़ 190

17 बेकर का आलसी बेटा 197

18 किसमस का सन्तरा 202

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

लोक कथाओं में फल–1–सेब और सन्तरा

संसार में सब लोग फल खाते हैं चाहे वह मॅहगा हो या सस्ता, छोटा हो या बड़ा, बाजार से खरीदा हुआ हो या घर में उगाया गया। स्वास्थ्य की दृष्टि से डाक्टरों का कहना है कि रोज एक सेब खाना घर से डाक्टर को दूर रखता है। बहुत सारे लोग इसलिये एक सेब रोज जरूर खाते हैं।

तुम लोगों को याद होगा ईसाई धर्म में जब भगवान ने दुनियॉ बनायी तो उसके बाद अपनी शक्ल का एक आदमी बनाया जिसका नाम था ऐडम। फिर उसके साथ के लिये एक स्त्री बनायी जिसका नाम था ईव और उन दोनों को अपने ईडन के बागीचे में रख दिया और उनसे कह दिया कि उस बागीचे में लगे एक पेड़ के फल वे न खायें। वे दोनों बहुत आज्ञाकारी थे सो बहुत दिनों तक उन्होंने वह फल नहीं खाया।

पर एक दिन शैतान उनके दिमाग पर चढ़ गया और उसके असर से उन्होंने वह फल खा लिया। उस फल को खा लेने के बाद उनको ज्ञान हो गया जिससे उनको यह पता चल गया कि वे दोनों नंगे खड़े हैं और एक दूसरे से छिपने की कोशिश कर रहे हैं। भगवान ने जब यह देखा तो वह समझ गये कि इन्होंने उस वर्जित पेड़ का फल खा लिया है सो अपनी आज्ञा का उल्लंघन करने की वजह से उनको इस बागीचे से बाहर निकाल कर धरती पर भेज दिया। सो वह कौन सा फल था जिसको खा कर उनको यह ज्ञान हो गया था – वह था सेब।

वह सेब खा कर ऐडम के गले में एक गॉठ भी पड़ गयी जिसे "ऐडम्स ऐपिल" कहा जाने लगा। उसके बाद तो सेब की कई कहावतें भी निकलीं। सबसे ज़्यादा प्यारी चीज़ को अंग्रेजी में ऐपिल औफ द आई कहते हैं। अमेरिका के मशहूर और दुनियॉ के दूसरे नम्बर के शहर न्यू यौर्क को लोग बिग ऐपिल कह कर पुकारते हैं।

सेब साधारणतया ठंडे देशों का फल है पर अब यातायात की सुविधा के कारण बहुत जगह मिलने लगा है। सेब वहॉ कई साइज़ में, कई आकार में, कई रंगों में और कई स्वादों में पाया जाता है – छोटा बड़ा, गोल लम्बोतरा, लाल पीला, हरा सुनहरा, खट्टा, मीठा और खट्टा–मीठा आदि आदि।

पर क्योंकि सेब ठंडी जलवायु का फल है इसलिये सेब से सम्बन्धित लोक कथाऐं भी ज्यादातर उन्हीं ठंडे देशों में पायी जाती है। और क्योंकि ज़्यादातर ठंडे देश विकसित देश है उनका साहित्य भी लोगों को आसानी से उपलब्ध है चाहे वह अंग्रजी भाषा में ही सही। सेब के साथ साथ सन्तरा भी उन देशों में बहुत प्रसिद्ध है हालॉकि वह वहॉ होता नहीं है फिर भी उसकी भी वहॉ लोक कथाऐं काफी मिलती हैं। इसलिये हमने उन लोक कथाओं को भी इस पुस्तक में जोड़ दिया है।

उनकी ये लोक कथाऐं अपने भारत के हिन्दी भाषी लोगों के लिये इस पुस्तक में हिन्दी में दी जा रही हैं। इन दोनों फलों से सम्बन्धित वहॉ बहुत सारी लोक कथाऐं पायी जाती हैं। सब कथाऐं तो यहॉ देना सम्भव नहीं है पर फिर भी काफी कथाऐं देने की यहॉ कोशिश की जा रही है।

इन कथाओं में केवल एक कथा पश्चिमी अफ्रीका की है जो अफ्रीका के वातावरण की होने के कारण पढ़ने में कुछ अजीब सी लगती है पर....

1 डोरोथी और सेब का बीज[1]

सेब की यह पहली लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के चीन देश की लोक कथाओं से ली है।

चीन देश के एक शहर में एक लड़की रहती थी। उसका नाम था डोरोथी। वह अकेली रहती थी और लोगों के कपड़े धो कर अपना गुजारा करती थी।

हफ्ते के आखीर में जब लोग उसे पैसा देते तब वह अपना खाने का सामान खरीदने जाया करती थी।

लेकिन वह अक्सर भूखी रहती थी। क्योंकि जब भी वह किसी दूकान से सामान खरीद कर बाहर निकलती तभी कोई न कोई भिखारी उसके सामने आ जाता और उससे खाना मॉगता — "डोरोथी, मैंने आज सुबह से कुछ नहीं खाया, कल रात भी खाना नसीब नहीं हुआ। बहुत भूखा हूँ, कुछ खाने को दे दो।"

और डोरोथी जवाब देती — "हॉ हॉ, क्यों नहीं। तुम मेरे घर चलो मैं तुम्हें पेट भर खाना खिलाऊँगी।" और डोरोथी अपना खाना उस भिखारी के साथ बॉट लेती।

[1] Dorothy and the Seed of Apple – a folktale from China, Asia

पर कभी कभी वह भिखारी इतना ज़्यादा खा जाता कि डोरोथी के लिये उसका बनाया खाना बहुत कम पड़ जाता और वह लगभग भूखी ही सो जाती।

एक दिन खूब धूप निकल रही थी। डोरोथी धूप में कपड़े सुखा रही थी कि उसने चीं चीं की आवाज सुनी। उसने इधर उधर देखा पर उसे कोई दिखायी नहीं दिया। फिर किसी जानवर की नन्हीं चीख सुनायी पड़ी।

फिर उसने सुना कोई कह रहा था — "डोरोथी, इधर देखो, मैं हूँ, जल्दी आओ मैं मर रही हूँ। मेरे पंख गिर रहे हैं और मेरा एक पंख तो टूट भी गया है। अब मैं फिर कभी नहीं उड़ सकूँगी, गा भी नहीं सकूँगी।"

और डोरोथी के पैरों के पास एक घायल चिड़िया आ कर गिर गयी। उसने उसे उठाया और अपने घर ले गयी।

चिड़िया ने कहा — "डोरोथी, तुम मुझे अपने पास रख लो। मुझे ठीक कर दो, मैं तुम्हें इसका बदला जरूर चुका दूँगी। मेरे पंख गिर रहे हैं और मेरा एक पंख भी टूट गया है। मुझे उड़ने और गाने के लायक बना दो डोरोथी।"

डोरोथी ज़ोर से बोली — "देखो, मैं तुम्हें ठीक तो कर दूँगी पर तुम मुझसे कभी बदले की बात नहीं करना। मुझे तो वही खुशी काफी है जब मैं तुमको उड़ते और गाते देखूँगी।"

उसने उस चिड़िया को पानी में भिगो कर डबल रोटी खिलायी, पानी पिलाया। उसका टूटा पंख ठीक किया। डोरोथी की उँगलियाँ इतनी नर्म थीं कि चिड़िया को उसके छूने से बिल्कुल भी तकलीफ़ नहीं हुई।

एक हफ्ते तक डोरोथी उसकी सेवा करती रही। एक दिन सुबह उठ कर उसने देखा कि चिड़िया की टोकरी खाली पड़ी थी। उसने खिड़की से बाहर झाँक कर देखा, सूरज चढ़ आया था, हवा शान्त थी और दूर कहीं कोई नन्हीं आवाज गा रही थी।

"डोरोथी, इधर देखो, मैं आकाश में उड़ती हुई तुम्हारे लिये गीत गा रही हूँ। तुमने मेरे पंख ठीक किये हैं इसलिये मैं अब उड़ सकती हूँ और गा सकती हूँ। तुमने रोज मुझे दाना पानी दिया मैं इसका बदला तुम्हें जरूर चुकाऊँगी।"

डोरोथी हँसी और बोली — "अरी ओ चिड़िया, मुझे कुछ भी देने की जरूरत नहीं है, मेरे लिये तो यही बहुत है कि तुम उड़ो और गाओ। पर अगर तुम्हें कभी भी मेरी जरूरत पड़े तो मुझे जरूर याद रखना।"

डोरोथी का पिछला हफ्ता चिड़िया की देख भाल में निकल गया था सो वह कपड़े ही नहीं धो पायी और इसलिये पैसे भी नहीं कमा पायी। और जब पैसा नहीं था तो खाना भी नहीं था। सो डोरोथी बेचारी बहुत भूखी थी।

उसने सारा दिन काम किया और सुस्ताने के लिये सीढ़ियों पर बैठ गयी। तभी उसने फिर चीं चीं की आवाज सुनी और एक चिड़िया उसकी गोद में सेब का एक बीज डाल गयी।

"डोरोथी, तुमने मेरे पंख ठीक किये थे न, इसी लिये अब मैं गा सकती हूँ, उड़ सकती हूँ। और मैंने कहा था न कि मैं इसका बदला जरूर चुकाऊँगी।

देखो तुम्हारी गोद में सेब का एक बीज पड़ा है। इसे तुम अभी बो दो, इसकी देखभाल करो, पानी दो। शायद यह तुम्हारा भाग्य बना दे।"

डोरोथी यह सोच कर हँसी कि यह सेब का बीज मेरा क्या भाग्य बनायेगा। पर वह चिड़िया के दिल को ठेस नहीं पहुँचाना चाहती थी।

सो उसने उस सेब के बीज को वहीं एक गड्ढा खोद कर गाड़ दिया, पानी दिया और पहचान के लिये एक डंडी भी गाड़ दी। फिर वह जा कर सो गयी।

अगली सुबह चिड़िया के गीत से उसकी आँख खुली — "डोरोथी डोरोथी, उठो, देखो मैंने तुम्हारा बदला चुका दिया है। आओ और अपने सेब इकट्ठे कर लो।"

अबकी बार डोरोथी को गुस्सा आ गया। वह बिस्तर से ही चिल्लायी — "अरे तुम मुझसे मजाक क्यों कर रही हो? मैं सेब तोड़ने कहाँ जाऊँ? क्या बगीचे में?

अभी कल रात को ही तो मैंने सेब का बीज बोया था अभी उसमें सेब कहाँ से आ गये? अच्छा तुम कहती हो तो जाती हूँ।" कह कर वह बगीचे में दौड़ गयी।

उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि जहाँ उसने पिछले दिन अपना सेब का बीज बोया था वहाँ तो भरा पूरा सेब का पेड़ खड़ा था जिस पर लाल लाल सेब लदे हुए थे।

चिड़िया फिर भी गाती रही। डोरोथी खुशी से भर गयी। उसने चिड़िया को धन्यवाद दिया और उस पेड़ से सुबह के नाश्ते के लिये एक सेब उचक कर तोड़ लिया।

वह सेब कुछ बड़ा भी था और भारी भी सो वह उसे सँभाल कर घर के अन्दर ले गयी और चाकू से उसके दो हिस्से कर दिये।

पर यह क्या? जहाँ सेब के बीज होने चाहिये वहाँ तो हीरे, मोती, लाल और सोने के टुकड़े भरे हुए थे। डोरोथी ने ऐसा सेब पहले कभी नहीं देखा था। वह तो उस सेब को देखती ही रह गयी।

चिड़िया ने फिर गाया — "डोरोथी, जाओ, इन्हें बेच दो और अपना भाग्य बनाओ।" डोरोथी बहुत खुश हुई। उसके बाद से वह कभी भूखी नहीं रही। वह हमेशा गरीबों की मदद करती थी और भूखों को खाना खिलाती थी।

2 सन्तोष का सेब[2]

सेब की यह दूसरी लोक कथा यूरोप महाद्वीप के एक देश की है।

एक स्त्री थी, उसके तीन लड़कियॉ थीं। उसकी पहली लड़की की दोनों ऑखों में भेंगापन था फिर भी उसकी मॉ उसे बहुत प्यार करती थी क्योंकि उसकी अपनी दोनों ऑखें भी भेंगी थीं।

उसकी दूसरी लड़की का एक कन्धा ऊॅचा और एक कन्धा नीचा था और भौहों के बाल धुॅए की कालिख जैसे काले थे फिर भी उसकी मॉ उसको उतना ही प्यार करती थी जितना कि अपनी पहली लड़की को क्योंकि उसका अपना भी एक कन्धा ऊॅचा और एक कन्धा नीचा था और भौहों के बाल धुॅए की कालिख जैसे काले थे।

पर उसकी सबसे छोटी लड़की पके सेब की तरह सुन्दर थी। उसके रेशम से मुलायम बाल सोने के रंग जैसे थे परन्तु उसकी मॉ उसे बिल्कुल भी नहीं चाहती थी क्योंकि न तो वह स्वयं ही बिल्कुल सुन्दर थी और न उसके बाल ही सुनहरे थे।

दोनों बड़ी बहिनें रोज सुबह शाम बहुत बढ़िया कपड़े पहनती थीं और सारा दिन बाहर धूप में बैठी रहती थीं। जबकि वह अपनी

[2] Apple of Contentment – a folktale from some European country

सबसे छोटी वाली लड़की क्रिस्टीन[3] को बहुत ही घटिया कपड़े पहना कर रखती थी।

क्रिस्टीन बतखों को रोज सुबह पहाड़ी तक ले जाती थी ताकि वह हरी हरी घास खा कर मोटी हो जायें और फिर उनको घर वापस लाती थी।

दोनों बड़ी बहिनों को सफेद रोटी और मक्खन खाने को मिलता था और बढ़िया दूध पीने को मिलता था मगर क्रिस्टीन को सूखी डबल रोटी के टुकड़े ही खाने को मिलते थे।

एक बार क्रिस्टीन अपनी बतखें ले कर पहाड़ी की ओर चली जा रही थी। उसके हाथों में उसकी बुनाई थी। वह धूल भरे रास्ते पर चलती जा रही थी कि एक पुल के पास आयी जो एक नाले पर बना हुआ था।

वहॉ उसने एक लाल रंग की टोपी देखी जिसके ऊपर चॉदी की घंटी लगी थी और जो एक पेड़ की डाल से झूल रही थी।

वह टोपी क्रिस्टीन को बहुत अच्छी लगी। वह सोचने लगी कि क्यों न वह उस टोपी को ले ले क्योंकि ऐसी टोपी उसने पहले कभी नहीं देखी थी।

सो उसने वह टोपी उतार कर अपनी जेब में रख ली और बतखों के साथ आगे बढ़ चली कि उसने एक आवाज सुनी — "क्रिस्टीन, क्रिस्टीन।"

[3] Christine – the name of the girl

उसने इधर उधर देखा तो उसे एक अजीब सा काला आदमी दिखायी दिया। उसका सिर तो बन्द गोभी जितना बड़ा था और टॉगें नन्हीं मूली जैसी थीं।

क्रिस्टीन ने उससे पूछा "तुम्हें क्या चाहिये।" वह आदमी अब तक उसके पास तक आ गया था और वह अपनी टोपी वापस मॉग रहा था क्योंकि उस टोपी के बिना वह पहाड़ी पर अपने घर वापस नहीं जा सकता था।

वह आदमी वहीं रहता था मगर फिर उसकी यह टोपी यहॉ पेड़ पर कैसे लटकी रह गयी यह उसकी समझ में नहीं आया। क्रिस्टीन ने सोचा कि टोपी उसको वापस देने से पहले उस आदमी का नाम तो उस आदमी से उसे मालूम करना ही चाहिये।

असल में वह आदमी वहॉ उस नाले में मछलियॉ पकड़ रहा था कि हवा से उसकी टोपी नाले में गिर गयी थी और उसने उसे पेड़ पर सूखने के लिये डाल दिया था।

पर अब क्या क्रिस्टीन वह टोपी उसे वापस दे देगी? उसने उसे सब कुछ सच सच बता दिया कि उसकी टोपी वहॉ कैसे पहुॅची। सुन कर क्रिस्टीन सोचने लगी कि वह क्या करे? टोपी उसे दे या न दे?

वह बहुत सुन्दर टोपी थी। वह उसको बहुत अच्छी लग रही थी। अगर वह उसको टोपी दे देती है तो वह उसे टोपी के बदले में क्या देगा। वह आदमी उस टोपी के पॉच क्राउन[4] देने को तैयार था

[4] Crown was the then currency in Europe.

पर पॉच क्राउन तो इतनी सुन्दर टोपी के लिये बहुत कम थे, और फिर उसमें चॉदी की घंटी भी तो लगी थी।

पर लो, वह आदमी तो उस टोपी के सौ क्राउन भी देने को तैयार हो गया। नहीं नहीं, उसको पैसों की क्या परवाह, पर इतनी सुन्दर टोपी आयेगी कहॉ से इसलिये उसको तो वह टोपी ही चाहिये पैसे नहीं।

आदमी बोला — "देखो क्रिस्टीन, मैं इस टोपी के बदले में तुमको यह देने के लिये तैयार हूॅ।" कह कर उसने अपना खुला हुआ हाथ उसे दिखाया जिसमें बीन का एक दाना जैसा कुछ था। वह कोयले जैसा काला था।

"यह तो ठीक है पर यह है क्या?"

वह काला आदमी बोला — "यह "सन्तोष के सेब" का बीज है। इसे तुम अपने घर के पास बो देना। इसमें से एक पेड़ निकलेगा और उस पेड़ में लगेगा केवल एक सेब।

जो भी उस सेब को देखेगा वह उसको देख कर ललचायेगा लेकिन तुम्हारे सिवा कोई और उस सेब को उस पेड़ से तोड़ नहीं पायेगा।

जब तुम्हें भूख प्यास लगेगी तब यह मॉस और पानी बन जायेगा और जब तुम्हें ठंड लगेगी तो यह गर्म कपड़े बन जायेगा।

दूसरी अजीब बात इसके बारे में यह है कि जैसे ही तुम यह सेब तोड़ोगी उसी समय इस सेब की जगह दूसरा सेब उग आयेगा और

इस तरह उस पेड़ पर एक सेब हमेशा ही बना रहेगा। क्या अब तुम मेरी टोपी दे दोगी?"

क्रिस्टीन उस जादू वाले बीज को देख कर बहुत ही खुश हुई। उसने उस आदमी को उसकी टोपी वापस कर दी और उससे सेब का बीज ले लिया।

उस आदमी ने अपनी टोपी अपने सिर पर रखी और गायब हो गया। ऐसे कि जैसे फूँक मारने से मोमबत्ती बुझ जाये।

क्रिस्टीन उस बीज को ले कर घर पहुँची और अपने कमरे की खिड़की के सामने उस बीज को बो दिया।

सुबह उठी तो उसने खिड़की से झाँका तो वहाँ सेब का एक बड़ा पेड़ खड़ा था और उस पर एक सेब लटक रहा था। सेब का रंग बिल्कुल सुनहरा था।

वह बाहर गयी और आसानी से उसे तोड़ लिया। जैसे ही उसने उसे तोड़ा तुरन्त ही एक और सेब वहाँ पर आ गया। भूखे होने की वजह से वह सेब उसने खा लिया।

खाने पर उसको लगा कि इतनी अच्छी चीज़ तो उसने पहले अपनी ज़िन्दगी में कभी खायी ही नहीं थी क्योंकि उस सेब का स्वाद तो शहद और दूध से बने केक जैसा था।

कुछ देर बाद उसकी सबसे बड़ी बहिन बाहर आयी और चारों तरफ देखने लगी। उसने वहाँ एक सेब का पेड़ देखा और उस पेड़

पर लटकता हुआ एक सुनहरा सेब देखा तो उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। क्योंकि यह सेब का पेड़ तो वहॉ कभी था ही नहीं। रातों रात यह पेड़ यहॉ कहॉ से आ गया।

उसी समय उसकी उसकी भी सेब खाने की इच्छा हुई। उसे लगा मानो यही इच्छा उसके जीवन की पहली और आखिरी इच्छा थी। उसने सोचा इसे तो मैं ही तोड़ लेती हूँ इसको तोड़ने में क्या है।" पर इसे कहना आसान था बजाय करने के।

जैसे ही उसने सेब तोड़ने के लिये पेड़ पर चढ़ना शुरू किया तो उसे लगा कि वह सेब तोड़ने नहीं बल्कि चॉद पकड़ने जा रही है। वह चढ़ती गयी, और चढ़ती गयी।

चढ़ते चढ़ते उसे लगा कि वह चॉद भी नहीं बल्कि सूरज को पकड़ने जा रही है। दोनों ही काम आसान थे पर सेब उससे अभी भी बहुत दूर था। आखिर उसने हिम्मत छोड़ दी।

फिर उसकी दूसरी बहिन आयी और उसकी भी उस सुनहरे सेब लेने की इच्छा होने लगी पर चाहने और पाने में बहुत फर्क है सो उसको भी वह सेब नहीं मिल पाया।

अन्त में उसकी मॉ आयी। आश्चर्य, उसने भी वह सेब लेना चाहा पर वह भी वह सेब नहीं ले पायी।

तीनों ही उस पेड़ के नीचे खड़ी उस सेब की इच्छा कर रही थीं पर तोड़ उसे कोई भी नहीं पा रहा था। मगर क्रिस्टीन जब भी चाहती वह सेब तोड़ लेती।

जब उसे भूख लगती, पेड़ का सेब उसकी भूख शान्त कर देता, जब कभी उसे प्यास लगती तो भी सेब हाजिर था। अब वह दुनियॉ की सबसे ज़्यादा खुशकिस्मत लड़की थी।

एक दिन एक राजा उधर से अपने आदमियों के साथ गुजर रहा था कि उसने भी उस पेड़ से लटका हुआ वह सुनहरा सेब देखा। तो उसको देखते ही उसके मन में भी उस सेब को खाने की इच्छा जाग उठी।

उसने अपने एक नौकर को बुलाया और कहा कि वह उस सेब को कुछ सोने के सिक्कों के बदले में खरीद लाये।

नौकर उस घर की ओर गया और उस घर का दरवाजा खटखटाया। मॉ ने दरवाजा खोला और पूछा — "क्या बात है? क्या चाहिये तुम्हें?"

नौकर बोला — "कोई खास चीज़ तो नहीं, बाहर एक राजा खड़े हैं वह यह जानना चाहते हैं कि उनको यह सेब इतने सोने के बदले में मिल सकता है या नहीं।"

"हॉ हॉ क्यों नहीं।"

नौकर ने वह सोना उसको दे दिया और वह सेब तोड़ने चल दिया। वह चढ़ा और चढ़ कर उसने डाल हिलायी मगर कोई फायदा नहीं हुआ और वह भी सेब नहीं तोड़ सका।

नौकर राजा के पास वापस गया और बोला — "उस स्त्री ने वह सेब मुझे बेच तो दिया है मगर वह तो तारों से भी दूर लगता है। हाथ में ही नहीं आता।"

राजा ने एक और आदमी भेजा। वह आदमी मजबूत और लम्बा था मगर काफी कोशिशों के बाद वह भी उस सेब को नहीं तोड़ पाया। सो वह भी राजा के पास खाली हाथ वापस लौट आया।

अब राजा खुद गया पर उसको भी वह सेब नहीं मिला और वह भी उसकी सुगन्ध मन में बसाये चला गया।

घर आने के बाद भी राजा के मन से उस सेब को खाने की इच्छा नहीं निकली। वह उसी की बात करता और उसी के सपने देखता।

जितना भी वह उस सेब से दूर होना चाहता उतनी ही उसकी उसको पाने की इच्छा बढ़ती जाती। आखिर वह उदास रहने लगा और एक दिन बीमार पड़ गया।

फिर उसने एक अक्लमन्द आदमी को बुलाया और उससे वह सेब लाने के लिये कहा। उसने राजा को आ कर बताया कि जिसने आपके नौकर को वह सेब बेचा था उसको केवल उस स्त्री की एक बेटी ही तोड़ सकती थी क्योंकि वह उसकी उसी बेटी का पेड़ था।

यह सुन कर राजा अपने आदमियों के साथ वहॉ गया और क्रिस्टीन के घर पहुँचा। वहॉ उसे उसकी मॉ और दोनों बड़ी बहिनें मिलीं क्योंकि क्रिस्टीन तो बतखें ले कर पहाड़ी पर गयी हुई थी।

राजा ने अपना टोप उतार कर झुक कर उनकी मॉ को नमस्कार किया। उस अक्लमन्द आदमी ने उनसे पूछा — "वह आपकी कौन सी बेटी है जिसका यह पेड़ है?"

राजा ने सोचा कि अगर वह उसकी सबसे बड़ी वाली बेटी हुई तो सेब लेने के बाद वह उसे घर ले जायेगा और उससे शादी कर लेगा और अपनी रानी बना लेगा। इस काम में वह बिल्कुल भी देर नहीं करेगा।

स्त्री बोली — "लेकिन क्या वह लड़की आपके और आपके सभी आदमियों के सामने उस पेड़ पर चढ़ेगी? नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता। आप ऐसा कीजिये कि अभी तो आप अपने घर जाइये और मेरी बेटी वह सेब आपको बाद में आपके महल में दे जायेगी।"

राजा बोला — "ठीक है, मगर ज़रा जल्दी।"

जैसे ही राजा गया वैसे ही उसने क्रिस्टीन को बुलाया और कहा — "राजा ने यह सेब मॅगवाया है। तुम यह सेब तोड़ कर अपनी बड़ी बहिन को दे दो। यदि तुमने ऐसा नहीं किया तो मैं तुमको कुँए में फेंक दूँगी।"

क्रिस्टीन ने वह फल तोड़ कर अपनी बड़ी बहिन को दे दिया। उसकी बहिन ने उस सेब को एक रूमाल में लपेटा और राजा के पास चल दी। वह बहुत खुश थी।

खट, खट, खट। वह महल के दरवाजे पर सेब लिये खड़ी थी। उसको तुरन्त ही अन्दर बुला लिया गया। जैसे ही वह राजा के सामने आयी और उसने अपना रूमाल खोला तो – मानो या न मानो, उसमें तो सेब ही नहीं था बल्कि उसमें तो एक गोल पत्थर रखा हुआ था।

जब राजा ने देखा कि वह उसके लिये सेब नहीं पत्थर ले कर आयी है तो उसको बहुत गुस्सा आया और उसने उसे घर से बाहर निकाल दिया।

राजा ने फिर अपना एक आदमी भेजा। उसने जा कर उन लड़कियों की मॉ से पूछा — "क्या तुम्हारी कोई और बेटी भी है?"

"हॉ है, आप घर चलें वह अभी सेब तोड़ कर लाती है।"

नौकर के जाने के बाद उसने फिर क्रिस्टीन को बुलाया और अपनी दूसरी बहिन के लिये सेब तोड़ने के लिये कहा।

क्रिस्टीन ने फिर एक सेब तोड़ा और अपनी दूसरी बहिन को दे दिया। उसने भी सेब को एक रूमाल में लपेटा और उसको ले कर राजा के पास चल दी।

जब वह राजा के पास पहुँची और अपना रूमाल खोला तो उस रूमाल में बजाय सेब के एक मुट्ठी कीचड़ निकली। यह देख कर राजा ने उसको भी अपने महल से भगा दिया।

नौकर फिर उनके घर आया और उनकी माँ से पूछा — "क्या तुम्हारे और भी कोई बेटी है?"

"हाँ है तो, मगर वह तो किसी काम की नहीं है। उसको तो केवल बतखों को पालने का काम आता है।"

"कहाँ है वह?"

"वह तो बतखों को ले कर पहाड़ी पर गयी है।"

उस लड़की को बुलाया गया। कुछ देर बाद वह आयी तो नौकर ने उससे पूछा — "क्या तुम राजा के लिये एक सेब तोड़ सकती हो?"

वह गयी और जंगली बेर की तरह वह सेब तोड़ कर ले आयी। नौकर ने अपना टोप उतार कर उसे झुक कर नमस्कार किया क्योंकि यही वह लड़की थी जिसको वे ढूँढ रहे थे।

उस नौकर ने उस लड़की को राजा के महल को चलने के लिये कहा। क्रिस्टीन ने वह सेब जेब में रख लिया और वह राजा के नौकर के साथ चल दी। और वह नौकर उसको ले कर राजा के महल की तरफ चल दिया।

राजा के घर में उस फटे हाल लड़की को देख कर सभी अपनी अपनी हथेलियाँ मुँह पर रख कर हँसने लगे।

राजा ने पूछा — "क्या तुम सेब लायी हो?"

"जी हॉ।" क्रिस्टीन ने सेब जेब से निकाला और राजा की ओर बढ़ा दिया।

राजा ने उस सेब को थोड़ा सा खाया और उसको लगा कि उस ने क्रिस्टीन जैसी सुन्दर लड़की तो पहले कभी देखी ही नहीं। यह इसलिये था क्योंकि उसने वह सन्तोष का सेब खाया था।

राजा और क्रिस्टीन की शादी हो गयी। उसकी मॉ और बहिनें भी वहॉ आयीं थीं। उन्होंने सोचा कि उनके पास तो उस सेब का पेड़ है पर उनका यह सोचना गलत था। क्योंकि अगले दिन ही वह सेब का पेड़ क्रिस्टीन के महल की खिड़की के सामने खड़ा था।

3 राजकुमार और सेब[5]

सेब की यह तीसरी लोक कथा पश्चिमी यूरोप के देशों में कही सुनी जाती है।

बहुत पुरानी बात है कि यूरोप का एक राजकुमार किसी ऐसी लड़की से शादी करना चाहता था जिसके सेब जैसे लाल लाल गाल हों। सेब के बीज जैसी कत्थई ऑखें हों और सेब के रस जैसा मीठा स्वभाव हो।

लेकिन ऐसी लड़की उसको अपने राज्य में कोई मिली ही नहीं इसलिये वह ऐसी ही एक लड़की की खोज में दूसरे देश को चल दिया।

वह घोड़े पर सवार था। तीन दिन और तीन रात की लगातार सवारी के बाद वह एक ऐसी जगह पहुॅचा जहॉ छोटी छोटी झाड़ियों की एक कतार लगी थी।

उस कतार में एक झाड़ी के नीचे एक बालों वाली टॉग बाहर निकली हुई थी। वह वहॉ रुक गया। तभी उसने एक आवाज सुनी — "उफ़ मेरी बदकिस्मती, मैं यहॉ चिपक गया हूॅ।"

राजकुमार ने पूछा — "तुम कौन हो?"

वही आवाज फिर बोली — "मेरी टॉग खींचो तभी तुमको पता चलेगा कि मैं "मैं" हूॅ।"

[5] A Prince and the Apple – a folktale from Western Europe

"अच्छा" कह कर राजकुमार ने ज़ोर लगा कर उसकी वह टॉग खींची तो एक छोटा आदमी जिसका शरीर गोल था और वह लाल और हरे रंग के कपड़े पहने था बाहर निकल आया। उसने राजकुमार को अपने को बाहर निकालने के लिये धन्यवाद दिया।

राजकुमार ने पूछा — "मुझे तुम्हारी सहायता कर के बड़ी खुशी हुई पर तुम इन झाड़ियों में क्यों पड़े थे, यह तो बताओ।"

वह आदमी बोला — "एक राक्षस ने मेरी बेटी को चुरा लिया है। जैसे ही उसने मेरी बेटी को यहॉ आ कर पकड़ा, तो मैं यहॉ आ कर छिप गया।"

राजकुमार ने पूछा — "तो क्या वह तुम्हारी बेटी को यहॉ से ले गया है?"

"हॉ, उसने उसको अपनी एक उॅगली और अॅगूठे के बीच में दबाया और ले उड़ा। मैं तो बिल्कुल गूॅगा सा हो गया और खॉस भी न सका।"

"यह तो बड़ा बुरा हुआ। वह उसे किस तरफ ले गया है?"

"वह उसे भूखे कुत्ते, थकी हुई जादूगरनी और खाई के पार बने दरवाजे के उस पार ले गया है।" ऐसा उस छोटे आदमी ने राजकुमार को बताया।

राजकुमार ने दोहराया — "भूखे कुत्ते, थकी हुई जादूगरनी और खाई के पार बने दरवाजे के उस पार। मैं तुरन्त ही जाता हूँ और तुम्हारी बेटी को ले कर आता हूँ। मगर वह दिखने में है कैसी?"

उस आदमी ने जवाब दिया — "गाल उसके सेब जैसे लाल हैं, आँखें उसकी सेब के बीज जैसी कत्थई हैं और स्वभाव उसका सेब के रस जैसा मीठा है। अगर तुम.... ।"

यह सुनते ही राजकुमार को इन्तजार कहाँ? इसी लड़की की तो तलाश थी उसको। सो वह तो यह जा और वह जा। वह तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार हो गया और दौड़ चला।

वह हवा की गति से भागा जा रहा था कि एक कुत्ते का घर आया। कुत्ता अपने घर से निकल कर भौंकने लगा — "राजकुमार, राजकुमार, तुम कहाँ जा रहे हो?"

राजकुमार बोला — "मैं राक्षस के किले को जा रहा हूँ जहाँ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की आँख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।"

कुत्ता बोला — "मैं बहुत भूखा हूँ। पहले मुझे हड्डी दो तभी मैं तुमको जाने दूँगा।"

राजकुमार बोला — "तुम भूखे हो तो मेरे पास हड्डी तो नहीं है पर मेरा खाना तुम ले सकते हो। यह लो कुछ रोटियाँ।" कह कर राजकुमार ने उसे अपनी रोटियाँ दे दीं।

कुत्ते ने खुशी से वह रोटियॉ खाईं और राजकुमार से बोला — "जाओ राजकुमार, भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो मगर याद रखना अगर तुम्हें वह लड़की कहीं दिखायी न दे तो वहॉ एक सेब रखा होगा वह सेब उठा लेना।"

राजकुमार फिर अपने घोड़े पर चढ़ा और कुत्ते के ऊपर से छलॉग लगा दी। हवा की गति से अपने घोड़े को दौड़ाता हुआ वह जादूगरनी के घर के पास आया।

जादूगरनी ने पूछा — "राजकुमार, तुम कहॉ जा रहे हो?"

राजकुमार ने जवाब दिया — "मैं राक्षस के किले को जा रहा हूॅ जहॉ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की ऑख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।"

जादूगरनी ने कहा — "मुझे सोने के लिये एक कम्बल चाहिये। जब तुम मुझे एक कम्बल दोगे तभी मैं तुम्हें जाने दूॅगी।"

राजकुमार बोला — "तुम थकी हुई हो। मेरे पास कम्बल तो नहीं है पर मेरे पास यह मखमली कोट है यह तुम ले सकती हो, यह लो।" यह कह कर राजकुमार ने उसे अपना लम्बा मखमली कोट दे दिया।

जादूगरनी ने वह लम्बा कोट अपने शरीर के चारों तरफ लपेट लिया और बोली — "अब तुम जा सकते हो राजकुमार। भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो। पर हॉ याद

रखना अगर तुम्हें वह लड़की न मिले तो वहाँ एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

राजकुमार जादूगरनी के मकान के ऊपर से छलाँग लगाता हवा की सी तेज़ी के साथ फिर उस लड़की की खोज में चल दिया। और अब आया वह खाई के पार एक बड़े दरवाजे के पास।

"चीं चीं, राजकुमार तुम कहाँ जा रहे हो?" दरवाजे ने पूछा।

"मैं? मैं राक्षस के किले को जा रहा हूँ जहाँ सेब जैसे सुर्ख गाल वाली, सेब के बीज जैसी कत्थई रंग की आँख वाली और सेब के रस जैसे मीठे स्वभाव वाली लड़की कैद है।" राजकुमार ने कहा।

"चीं चीं, पहले मेरे जोड़ों[6] में तेल लगाओ तभी मैं तुम्हें यहाँ से जाने दूँगा।" दरवाजे ने कहा।

राजकुमार बोला — "ओह, तुम्हारे जोड़ों में तो बहुत जंग लगी

है। मेरे पास कोई तेल तो नहीं है, हाँ थोड़ा साबुन है, वही ले लो।" यह कह कर उसने दरवाजे के जोड़ों में थोड़ा सा साबुन लगा दिया।

दरवाजा खुश हो कर बोला — "जाओ राजकुमार जाओ। भगवान करे कि तुम उस लड़की को छुड़ाने में कामयाब हो पर एक बात याद रखना अगर तुम्हें वह लड़की न दिखायी दे तो वहाँ एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

[6] Translated for the word "Hinges". See its picture above.

राजकुमार ने दरवाजे के ऊपर से छलॉग लगायी और फिर घोड़ा नचाता चला गया। आखिर वह राक्षस के किले पर पहुँचा। वह सीधा घोड़े को सीढ़ियॉ चढ़ाता सामने वाले दरवाजे पर पहुँचा।

वह किले के पीछे पहुँचा पर उसे न तो वहॉ कोई राक्षस दिखायी दिया और न ही वह लड़की। वह आगे वाले कमरे में गया पर वहॉ भी उसको कोई दिखायी नहीं दिया।

वह रसोई में गया वहॉ भी उसे न राक्षस दिखायी दिया न वह लड़की। अब वह उस राक्षस के सोने के कमरे में पहुँचा।

वहॉ उसने खर्राटों की आवाज सुनी। उसने अन्दर झॉक कर देखा तो राक्षस गहरी नींद सो रहा था और पास ही एक तश्तरी में एक सेब रखा था।

तभी राजकुमार ने सोचा सभी ने मुझसे क्या कहा था। "हॉ, हॉ अगर तुम्हें वह लड़की वहॉ दिखायी न दे तो वहॉ एक सेब रखा होगा उसको जरूर उठा लेना।"

सो उसने हाथ बढ़ा कर वह सेब उठा लेना चाहा पर उसके छूने से पहले ही वह सेब एक लड़की में बदल गया जिसके गाल सेब की तरह सुर्ख थे और ऑखें सेब के बीजों की तरह कत्थई रंग की थी।

लड़की ने रो कर कहा — "राजकुमार, मुझे बचा लो।"

राजकुमार बोला — "आओ चलें, मेरा घोड़ा नीचे खड़ा है।" और वे दोनों वहॉ से भाग लिये। राजकुमार ने लड़की को घोड़े पर बिठाया और दौड़ चला।

तभी राक्षस की ऑख खुल गयी। वह वहीं से चिल्लाया — "दरवाजे, दरवाजे, रोको उसे।"

दरवाजा बोला — "मैं नहीं रोकूॅगा उसको, उसने मेरे जोड़ों में साबुन लगाया है। राजकुमार, तुम जाओ।" और राजकुमार उस लड़की को ले कर दरवाजे के ऊपर से निकल गया।

अब राक्षस उनके पीछे भागा और चिल्लाया — "जादूगरनी, उसे रोको, देखो वह जाने न पाये।"

जादूगरनी बोली — "मैं नहीं रोकूॅगी उसे, उसने मुझे सोने के लिये मखमली कोट दिया है। राजकुमार, तुम जाओ। भाग जाओ यहॉ से।"

और राजकुमार अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ वहॉ से चला गया।

राक्षस अपनी पूरी गति से भाग रहा था। वह फिर चिल्ला कर बोला — "ओ कुत्ते, रोक ले उसको, जाने नहीं देना।"

कुत्ता बोला — "मैं नहीं रोकूॅगा उसको। उसने मुझे खाना दिया है। जाओ राजकुमार जाओ।" और राजकुमार आगे बढ़ गया।

जब राक्षस पीछे से आया तो कुत्ते ने उसके पैर में काट लिया और फिर पकड़ लिया।

राजकुमार भागता ही गया और भागता ही गया जब तक कि वह झाड़ियों की कतार न आ गयी जहॉ उस लड़की का पिता छिपा हुआ था।

वह आदमी वहॉ फिर से छिप गया था। राजकुमार ने फिर उस की टॉग पकड़ कर उसको बाहर निकाला। असल में वह आदमी घोड़ों की टाप की आवाज सुन कर डर गया था और फिर से झाड़ियों में छिप गया था।

उसे अपनी बेटी पा कर बड़ी खुशी हुई और राजकुमार के कहने पर उसने अपनी बेटी की शादी राजकुमार से कर दी।

राजकुमार को अपनी मन पसन्द पत्नी मिल गयी थी। वह उसको ले कर खुशी खुशी घर वापस आ गया और उससे शादी कर के आराम से रहने लगा।

4 लो अर्न के सुनहरी सेब[7]

यह कहानी यूरोप महाद्वीप के आयरलैंड देश के सुनहरी सेबों की है जो जादुई थे।

यह उस समय की बात है जब आयरलैंड के पश्चिमी प्रान्तों का कोई नाम नहीं था। बस जो कोई भी वहॉ पहले बस जाता था उसी के नाम से वह जगह जानी जाती थी जब तक कि वह मर नहीं जाता था। फिर वही जगह दूसरे आदमी के नाम से जानी जाती थी जो कोई वहॉ रहने आ जाता था।

वहॉ एक राजा राज करता था जिसका नाम था कौन[8]। उसकी पत्नी बिटेन की थी जिसका नाम था ऐडा[9]। कौन के राज्य में किसी भी बात की कोई कमी नहीं थी इसलिये उसकी सारी जनता आनन्द से अपने दिन बिता रही थी।

उन दोनों के एक बेटा था जिसका नाम उन्होंने कौन–ऐडा रख दिया क्योंकि किसी ज्योतिषी ने उनको बताया था कि उस लड़के के अन्दर उसके माता और पिता दोनों के गुण आयेंगे।

जैसे जैसे कौन–ऐडा बड़ा होता गया उसके अन्दर सचमुच में ही उसके माता और पिता दोनों के गुण दिखायी देने लगे।

[7] Story of Conn Edda, or Lough Earne's Gold Apples - a folktale of Ireland, Europe
[8] Conn
[9] Edda

पर उसी समय बदकिस्मती से ऐडा बहुत बीमार पड़ी और उसी बीमारी में वह चल बसी। राजा और उसकी जनता ने रानी की मौत का एक साल तक बहुत दुख मनाया और फिर ज्योतिषियों के समझाने पर राजा ने दूसरी शादी कर ली।

नयी रानी बहुत अच्छी थी। बरसों तक वह पुरानी रानी की तरह ही रही और सभी उससे बहुत खुश थे।

इस बीच उसके कई बच्चे हुए पर कुछ साल बाद ही उसको लगने लगा कि राजा कौन–ऐडा को बहुत चाहता है और बाद में भी वह उसी को राजगद्दी देगा और उसके अपने बच्चों की परवाह नहीं करेगा।

यह सोच कर रानी बहुत परेशान हुई। रानी की यह परेशानी इतनी बढ़ी कि उसने कौन–ऐडा को मारने का फैसला कर लिया। वह एक जादूगरनी के पास पहुँची और उसको अपने आने की वजह बतायी।

जादूगरनी वह सब सुन कर बोली — "अगर मैं तुम्हारा यह काम कर दूँ तो तुम मुझे क्या इनाम दोगी?"

रानी बोली — "जो तुम चाहो।"

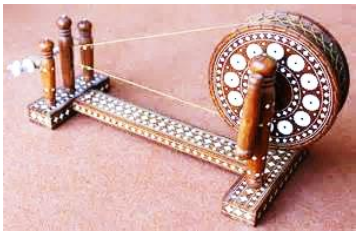

जादूगरनी बोली — "तुमको मेरी बॉह से बनी खाली जगह रुई से भरनी पड़ेगी और जहॉ मैं अपने तकुए[10] से छेद करूँगी वहॉ लाल गेहूँ भरना पड़ेगा।"

रानी बोली — "मैं तैयार हूँ।"

जादूगरनी ने अपने घर के पास अपनी बॉह को नीचे जमीन पर रख कर एक छेद सा बना लिया और अपना घर रुई से भरवा लिया।

फिर वह अपने भाई के घर पर चढ़ गयी। वहॉ उसने तकुए से छेद किया और उसके घर को उसने लाल गेहूँ से भरवा लिया। इस सबको करने के बाद रानी बोली — "अब तुमको अपना इनाम मिल गया अब तुम मेरा काम करो।"

जादूगरनी बोली — "तुम यह शतरंज[11] ले जाओ और राजकुमार के साथ शतरंज खेलो। पहले ही खेल में तुम जीत जाओगी पर खेलने से पहले तुम एक शर्त रखना, वह यह कि जो कोई भी बाजी जीतेगा वह हारने वाले से कोई भी काम करा सकता है।

[10] Takuaa is an iron needle which is a part of Charakhaa which spins the cotton to make its thread. In the picture given above it is on the right hand side where the white cotton can be seen wrapped around it.

[11] Chess – an indoor game. See the picture above

जब तुम बाजी जीत जाओ तब तुम उसको कहना कि या तो वह तुमको एक साल और एक दिन के अन्दर अन्दर फ़िरबोल्ग[12] के बाग में लगे तीन सुनहरे सेब, उसका काला घोड़ा और उसका अनोखी ताकत वाला कुत्ता ला कर दे और वह अगर यह काम नहीं कर सकता तो फिर कभी तुमको अपनी शक्ल न दिखाये।

फ़िरबोल्ग लो अर्न[13] में रहता है और इन सबकी इतनी ज़्यादा देखभाल करता है कि उसके महल में से इनको लाना मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन है।

वह खुद अपनी ताकत से इनको नहीं ला सकता और अगर लाने की कोशिश की तो उसको जान से हाथ धोना पड़ेगा। इस तरह से तुम्हारा काम हो जायेगा।" रानी यह सुन कर बहुत खुश हुई और वह जादूगरनी से शतरंज ले कर घर चली गयी।

घर पहुँचते ही उसने राजकुमार को शतरंज खेलने के लिये बुलाया और दोनों शतरंज खेलने बैठे। जैसा कि जादूगरनी ने कहा था रानी शतरंज की पहली ही बाजी जीत गयी।

परन्तु वह राजकुमार को पूरी तरह से अपने कब्जे में करना चाहती थी इसलिये उसने दूसरी बाजी बिछा दी। परन्तु आश्चर्य, दूसरी बाजी राजकुमार बिना किसी कोशिश के ही जीत गया।

[12] Firbolg

[13] Lough Erne – a place in Ireland

राजकुमार बोला — "क्योंकि पहली बाजी आप जीती थीं इसलिये पहले आप अपनी शर्तें बताइये।"

रानी बोली — "मेरी शर्त यह है कि तुम मुझको एक साल और एक दिन के अन्दर अन्दर फ़िरबोल्ग के बाग में लगे तीन सुनहरे सेब, उसका काला घोड़ा और उसका अनोखी ताकत वाला कुत्ता ला कर दो और अगर तुम यह काम न कर सको तो देश छोड़ कर चले जाओ, और या फिर मरने के लिये तैयार हो जाओ।"

राजकुमार बोला — "ठीक है। तो अब आप मेरी शर्त भी सुन लें। जब तक मैं लौट कर आऊँ आप पास वाली मीनार की चोटी पर बैठें और उतना ही लाल गेहूँ खायें जितना कि आपका तकुआ उठा सकता है और कुछ भी नहीं।

और अगर मैं एक साल और एक दिन तक न लौटूँ तो समय पूरा होने पर आप आजाद हैं।"

कौन–ऐडा को लम्बा सफर करना था सो वह रानी को मीनार की खुली छत पर एक साल और एक दिन के लिये बिठा कर चल दिया।

उसको मालूम था कि वह खुद अपनी ताकत से तो इन चीज़ों को नहीं पा सकता इसलिये वह अपने एक जादूगर दोस्त फ़ियोन डाढना[14] के पास सलाह करने जा पहुँचा। फ़ियोन डाढना ने उसका

[14] Fionn Dadhna

प्रेम से स्वागत किया, गर्म पानी से उसके पैर धोये, कुछ खिलाया पिलाया और फिर उससे उसके वहाँ आने की वजह पूछी।

कौन–ऐडा ने उसको अपनी सारी कहानी बता कर पूछा — "अब यह बताओ कि तुम मेरी इसमें क्या सहायता कर सकते हो?"

फ़ियोन डाढना बोला — "मैं अभी तो तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकता पर कल सुबह मैं अपने हरे कमरे में जाऊँगा और जादू से पता करूँगा कि मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ।"

अगले दिन जब सुबह हुई, सूरज उगा तो फ़ियोन डाढना ने अपने जादू से अपनी पूजा में अपने देवता से बात की।

बाद में उसने कौन–ऐडा को बुला कर कहा — "दोस्त, तुम एक भारी परेशानी में पड़ गये हो। यह जाल तुमको मारने के लिये बिछाया गया है।

क्योंकि धरती पर लो कौरिब की सबसे बड़ी जादूगरनी कैल्लीच[15] जो लो अर्न के राजा की बहिन है और आजकल यहीं आयरलैंड में है, वही रानी को ऐसी सलाह दे सकती है।

वह जादूगरनी मेरी और मैं जिस देवता की पूजा करता हूँ उसकी, हम दोनों की ताकत से बाहर है। पर तुम उम्मीद न छोड़ो।

ऐसा करो कि तुम आदमी के सिर वाली चिड़िया स्लियाभ मिस[16] के पास चले जाओ। उसके बस में अगर कुछ होगा तो वह तुम्हारे

[15] Cailleach of Lough Corrib

[16] Sliyabh Mis

लिये जरूर कर देगी। क्योंकि इस पश्चिमी दुनियॉ में उसके जैसी चिड़िया और कोई नहीं है।

वह भूत, वर्तमान और भविष्य सबके बारे में सब कुछ जानती है। वह कहॉ रहती है यह जानना थोड़ा मुश्किल काम है पर सबसे ज़्यादा मुश्किल काम है उससे जवाब पाना। पर मैं कोशिश करता हूॅ।

तुम इस लम्बे बालों वाले छोटे घोड़े पर बैठ कर चले जाओ क्योंकि वह चिड़िया तुमको आज से तीन दिन बाद दिखायी देगी। यह घोड़ा तुमको उसके रहने की जगह तक ले जायेगा।

हो सकता है कि वह चिड़िया तुम्हारे सवालों के जवाब देने से इनकार कर दे। ऐसी हालत में तुम यह रत्न रखो। यह तुम उसको भेंट में दे देना। इस भेंट को पा कर वह तुम्हें तुम्हारे सवालों के जवाब जरूर दे देगी।"

राजकुमार ने अपने जादूगर दोस्त को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उससे वह रत्न ले कर उस छोटे से लम्बे बालों वाले घोड़े पर बैठ कर चल दिया।

जैसा कि उसके दोस्त ने बताया था वह तीन दिन में ही चिड़िया के पास पहुॅच गया। जा कर उसने चिड़िया को अपने दोस्त का दिया हुआ रत्न भेंट किया और अपना सवाल पूछा।

चिड़िया ने पत्थर पर रखा हुआ रत्न अपनी चोंच में उठाया और एक ऊॅची चट्टान पर जा बैठी और आदमी की आवाज में बोली —

“ए कौन–ऐडा, कुआचेन[17] के राजा के बेटे, अपने दाहिने पॉव के नीचे का पत्थर हटाओ। उसके नीचे एक गेंद और एक प्याला रखा है। उसे उठा लो।

फिर घोड़े पर चढ़ कर उस गेंद को अपने घोड़े के सामने फेंको। उसके बाद तुम्हारा घोड़ा ही तुमको बता देगा कि तुमको क्या करना है।” इतना कह कर चिड़िया तुरन्त उड़ कर वहॉ से चली गयी।

राजकुमार ने बड़ी सॅभाल कर चिड़िया के बताये अनुसार सब कुछ किया। गेंद एक तरफ को लुढ़कती चली गयी और उसका घोड़ा उस गेंद के पीछे पीछे चल दिया।

वह घोड़ा उसको लो अर्न के राज्य की हद तक ले आया। वहॉ आ कर वह गेंद झील के पानी में चली गयी और गायब हो गयी।

अब घोड़ा बोला — “देखो, अब तुम मेरे कान में हाथ डाल कर वहॉ से एक छोटी बोतल और एक टोकरी निकाल लो और मुझे तेज़ी से भगा ले चलो क्योंकि अब तुम्हारे सामने बहुत सारी मुश्किलें आने वाली हैं।”

यह बताने के लिये कौन–ऐडा ने घोड़े को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और उसने घोड़े के कान में हाथ डाल कर एक छोटी बोतल और एक टोकरी निकाल ली।

[17] Cruachen

जब वह घोड़े पर बैठा जा रहा था तो झील का पानी उसके सिर के ऊपर छत की तरह दिखायी देरहा था। लगता था घोड़ा झील के अन्दर घुस गया था। झील में घुसने के बाद उसको वह गेंद फिर दिखायी दे गयी थी।

चलते चलते अब वे एक ऐसी जगह आ गये थे जहॉ से एक रास्ता ऐसा जाता था जिस पर तीन डरावने सॉप पहरा दे रहे थे।

घोड़ा बोला — "देखो, टोकरी खोलो और उसमें से तीन मॉस के टुकड़े इन तीनों सॉपों के मुँह में डाल दो और फिर मेरे ऊपर ठीक से बैठ जाओ ताकि हम इन सॉपों के बीच से गुजर सकें।

अगर तुम इन तीनों सॉपों के मुँह में मॉस के टकड़े ठीक से डाल सके तो हम लोग इनके बीच से ठीक से गुजर जायेंगे नहीं तो बस समझो गये।"

कौन–ऐडा का निशाना अच्छा था सो उसने तीनों मॉस के टुकड़े उन तीनों सॉपों के मुँह में ठीक से डाल दिये। यह देख कर घोड़ा बोला — "तुम्हारी विजय हो राजकुमार।"

और यह कहते हुए उसने छलॉग लगा दी। उस छलॉग में उसने नदी और सॉपों द्वारा रक्षित दोनों ही जगहें पार कर दीं।

घोड़े ने पूछा — "कौन–ऐडा, तुम मेरे ऊपर बैठे हो न?"

राजकुमार बोला — "यह काम तो मेरी आधी ताकत से ही हो गया।"

घोड़ा बोला — "तुम बहुत बहादुर राजकुमार लगते हो। एक खतरा तो हमने जीत लिया पर अभी दो खतरे और बाकी हैं। भगवान ने चाहा तो तुम उनको भी जीत लोगे।"

वे गेंद के पीछे पीछे आगे बढ़ते जा रहे थे। चलते चलते वे एक ऐसे पहाड़ के पास आ गये जो आग उगल रहा था। घोड़ा बोला — "राजकुमार, अब तुम इस खतरनाक कूद के लिये तैयार हो जाओ।"

राजकुमार डर के मारे कॉप गया। उससे कोई जवाब नहीं बन पा रहा था। वह जितनी अच्छी तरह से हो सकता था घोड़े की पीठ को कस कर पकड़ कर बैठ गया।

घोड़े ने दूसरी कूद लगायी और आग उगलते हुए पहाड़ के दूसरी ओर कूद गया। घोड़ा फिर बोला — "कौनमौर के बेटे कौन–ऐडा, तुम ठीक तो हो न?"

राजकुमार बोला — "बस ज़िन्दा हूँ क्योंकि मैं आग से बहुत झुलस गया हूँ।"

घोड़ा बोला — "क्योंकि तुम ज़िन्दा हो इसी लिये मैं कहता हूँ कि तुम अपने काम में जरूर ही सफल होगे। हमारे भयानक खतरे टल गये हैं और आशा है कि अब हम तीसरा और आखिरी खतरा भी ठीक से पार कर लेंगे।"

कुछ दूर और चलने के बाद घोड़ा बोला — "देखो, बोतल में मरहम है सो उसमें से मरहम निकाल कर अपने घावों पर लगा लो।"

राजकुमार ने घोड़े की बात मान कर ऐसा ही किया। मरहम लगाते ही उसके सारे घाव भर गये और वह पहले की तरह से ठीक हो गया।

वे गेंद के पीछे पीछे चलते एक शहर के पास आ गये थे। उस शहर के चारों तरफ ऊँची ऊँची दीवार खड़ी थी।

उस शहर में घुसने का केवल एक ही दरवाजा दिखायी दे रहा था और वह दरवाजा भी हथियारबन्द लोगों से रक्षित नहीं था बल्कि दो ऊँची ऊँची मीनारों से सुरक्षित था जिनमें से आग निकल रही थी।

घोड़ा यहाँ आ कर रुक गया और राजकुमार से बोला — "मेरे दूसरे कान में से एक चाकू निकाल लो। मुझे मार डालो और मेरा पेट चीर कर उसमें बैठ जाओ। इस तरह तुम बिना किसी तकलीफ के इन मीनारों के बीच में से निकल जाओगे।

अन्दर जा कर जब तुम्हारी इच्छा हो तब बाहर निकल आना। एक बार अन्दर जाने के बाद तुम जब चाहो बाहर आ सकते हो और जब चाहो अन्दर जा सकते हो।

इसके बदले में मैं तुमसे दो प्रार्थना करना चाहूँगा। पहली तो यह कि जैसे ही तुम दरवाजे में से शहर के अन्दर घुसोगे तो तुम उन सब शिकारी चिड़ियों को भगा दोगे जो मेरे शरीर को खाने आयेंगीं।

और दूसरी यह कि अगर तुम्हारी बोतल में ज़रा सा भी मरहम बचा हो तो उसे मेरे शरीर पर डाल देना ताकि मेरा शरीर सड़े नहीं।

और अगर हो सके तो एक गड्ढा खोद कर मेरे शरीर को उसमें गाड़ देना।"

कौन–ऐडा बोला — "ओ वफादार घोड़े, तुमने मेरी इतनी ज़्यादा सहायता की है कि ऐसा कह कर तुम मेरा अपमान कर रहे हो।

मैं राजकुमार की हैसियत से तुम्हारा बहुत ही आभारी हूँ और यह कहता हूँ कि मेरे ऊपर कितनी भी बड़ी मुसीबत क्यों न आ जाये मैं कभी अपनी दोस्ती को अपनी जान बचाने के लिये कुर्बान नहीं करूँगा। मैं ऐसा नहीं कर सकता जो तुम मुझसे कह रहे हो।"

घोड़ा बोला — "तुम मेरी फिक्र न करो, जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करो। भगवान तुमको तुम्हारे काम में सफलता दे।"

राजकुमार बोला — "नहीं नहीं, कभी नहीं, मैं ऐसा कर ही नहीं सकता।"

घोड़ा दुखी आवाज में बोला — "राजकुमार, अगर तुम ऐसा नहीं करोगे तो हम दोनों ही बर्बाद हो जायेंगे और फिर हम कभी नही मिल पायेंगे।

पर अगर तुम जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करोगे तो सब कुछ इतना आसान हो जायेगा कि तुम अभी उसे सोच भी नहीं सकते।

मैंने तुम्हें अभी तक कभी धोखा नहीं दिया इसलिये तुम्हें मेरी इस सलाह पर भी शक नहीं करना चाहिये इसलिये जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही तुम करो वरना मेरी मौत से भी बदतर हालत होगी। और

अगर अब भी तुमने मेरा कहा न माना तो समझ लेना कि हमारी तुम्हारी दोस्ती खत्म।"

राजकुमार को घोड़े की बात समझ में आ गयी। और दूसरा कोई उपाय दिखायी न देने पर राजकुमार ने घोड़े के दूसरे कान में से चाकू निकाला और कॉपते हाथों से उसकी गर्दन पर चला दिया। राजकुमार की ऑखों से टपाटप ऑसू बह निकले।

पर जैसे ही वह चाकू उसने उसकी गरदन में घुसाया वह जैसे किसी जादुई ताकत से वहीं अटक कर रह गया। घोड़ा मर गया और गिर पड़ा।

राजकुमार दुख से बहुत ज़ोर ज़ोर से रोया और इतना रोया कि रोते रोते बेहोश हो गया। कुछ देर बाद जब उसे होश आया तो उसने घोड़े के कहे अनुसार काम करना शुरू किया।

उसने घोड़े का पेट चीरा। उसकी खाल को उसने उसके शरीर से अलग कर लिया और उसमें छिप कर वह उस शानदार शहर में चला।

वह बिना किसी रोक टोक के उस शहर में घूम रहा था। वह शहर बड़ा और शानदार था पर राजकुमार अपने दोस्त घोड़े के मर जाने से बहुत दुखी था।

वह केवल पचास कदम ही चला होगा कि उसको घोड़े की आखिरी बात याद आयी। वह लौटा तो क्या देखता है कि बहुत सारी मॉस खाने वाली चिड़ियें घोड़े का मॉस खाने पर लगी हुई हैं।

उसने कुछ ही पल में वे सारी चिड़ियें भगा दीं और बोतल में से निकाल कर मरहम की कुछ बूँदें उस घोड़े के शरीर पर डाल दीं।

मरहम की वे बूँदें घोड़े के शरीर पर पड़ते ही उसमें कुछ बदलाव आये और देखते ही देखते वह एक सुन्दर नौजवान में बदल गया। दोनों एक दूसरे से लिपट गये।

जब एक की खुशी कम हुई और दूसरे का आश्चर्य, तो वह नौजवान राजकुमार से बोला — "ओ कुलीन राजकुमार, आज तुम को देख कर मैं धन्य हो गया। मैं लो अर्न शहर के राजा फ़िरबोल्ग का भाई हूँ। उस बदमाश फ़ियोन डाढना ने मुझे घोड़ा बना कर रखा हुआ था।

उसको मुझे तुम्हें देना ही पड़ा क्योंकि मैं अपनी शर्त तोड़ चुका था। फिर भी जैसा मैंने तुमसे कहा था अगर तुमने वैसा नहीं किया होता तो मैं कभी भी अपने इस रूप को वापस नहीं पा सकता था।

वह मेरी ही बहिन थी जिसने तुम्हारी सौतेली माँ को वह सब लाने के लिये कहा जो मेरे भाई के पास है। पर तुम मेरा विश्वास करो कि मेरी बहिन तुमको किसी तरह का नुकसान नहीं पहुँचाना चाहती थी बल्कि तुम्हारा कुछ भला ही करना चाहती थी, यह तुम बाद में जानोगे।

क्योंकि अगर वह तुम्हारा ज़रा सा भी बुरा चाहती तो बिना किसी कठिनाई के कुछ भी कर सकती थी। पर वह तुमको आगे

आने वाले खतरों से भी बचाना चाहती थी और साथ में मुझे भी मेरा पुराना रूप वापस दिलवाना चाहती थी।

आओ, तुम मेरे साथ आओ। घोड़ा, वह अनोखी ताकत वाला कुत्ता और सुनहरी सेब सब कुछ तुम्हारा है। मेरे भाई के घर में तुम्हारा बड़ा शानदार स्वागत किया जायेगा क्योंकि तुम केवल इन्हीं के नहीं बल्कि और बहुत कुछ चीज़ों के भी अधिकारी हो।"

समय गॅवाने की बजाय वे दोनों लो अर्न के राजा के महल की तरफ चल दिये। राजा और उसके दरबारियों ने सचमुच ही उन दोनों का बड़ा शानदार स्वागत किया।

जब राजा ने कौन–ऐडा के आने की वजह सुनी तो उसने कौन–ऐडा को काला घोड़ा, अनोखी ताकत वाला कुत्ता और जिन्दगी देने वाले तीन सुनहरे सेब जो उसके बगीचे में लगे थे एक शर्त पर उसको दे दिये कि जब तक उसका एक साल और एक दिन पूरा होता है वह उसका मेहमान बन कर रहेगा।

कौन–ऐडा राजी हो गया और आनन्द से वहॉ रहा।

जब उसके जाने का समय आया तो राजा ने अपने आनन्द भवन के बगीचे के क्रिस्टल के पेड़ से तीन सुनहरी सेब तोड़ कर उसे दे दिये। कुत्ते के गले में चॉदी की एक जंजीर बॉध कर कौन–ऐडा के हाथ में पकड़ा दी गयी और घोड़े के ऊपर उसका साज सजा कर कौन–ऐडा की सवारी के लिये तैयार कर दिया गया।

राजा ने खुद कौन–ऐडा को उस घोड़े पर चढ़ाया और उसके हाथों में कुत्ते की चॉदी की जंजीर दी।

राजा ने कौन–ऐडा को यह भी यकीन दिलाया कि रास्ते में उसको अब आग उगलने वाला पहाड़, मीनार और दोनों सॉपों से डरने कोई जरूरत नहीं है क्योंकि वह घोड़ा उन सबसे बचा कर उसको उसके देश पहुॅचा देगा।

उन्होंने कौन–ऐडा से भी एक वायदा लिया कि वह हर साल कम से कम एक बार उन लोगों से मिलने जरूर आता रहेगा।

कौन–ऐडा ने दोनों से विदा ली। उसका दोस्त बहुत दुखी था। कौन–ऐडा बिना किसी रोक टोक के आराम से अपने घर पहुॅच गया।

उधर रानी यह सोचे बैठी थी कि कौन–ऐडा तो अब वापस आयेगा नहीं इसलिये राजगद्दी अब उसी के बेटों को मिलेगी। पर जब उसने कौन–ऐडा को काले घोड़े पर सवार और कुत्ते को उसके पीछे आते देखा तो उसकी सारी आशाओं पर पानी फिर गया और वह दुखी हो कर मीनार से कूद गयी। नीचे गिरते ही वह मर गयी।

राजा अपने बेटे को देख कर बहुत खुश हुआ। वह तो एक साल से इसी लिये दुखी था कि पता नहीं उसका बेटा ज़िन्दा है भी या नहीं। जब उसको रानी के बुरे इरादों का पता चला तो गुस्से के मारे उसने रानी का शरीर जला दिया।

कौन–ऐडा ने वे तीनों सेब अपने बगीचे में लगा दिये और उन को बोते ही वहॉ एक हरा पेड़ निकल आया जिसके ऊपर वैसे ही तीन फल लगे थे।

इस पेड़ की मेहरबानी से उनके राज्य में खूब पैदावार होने लगी। घोड़ा और कुत्ता भी राज्य के बहुत काम आये। इसी कौन–ऐडा के नाम पर उस जगह का नाम कौनौट[18] पड़ गया।

[18] Cannaught – there is a Cannaught Place in Delhi, India too. Maybe this name has come from there only.

5 एक छोटा चरवाहा[19]

सेब की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ले गयी है।

एक बार एक लड़का था जो भेड़ चराया करता था। वह लड़का साइज़ में एक छोटे से कीड़े से ज़्यादा बड़ा नहीं था।

एक दिन जब वह अपनी भेड़ों को चराने के लिये घास के मैदानों की तरफ जा रहा था तो वह एक अंडे बेचने वाली के पास से गुजरा। वह अंडे बेचने वाली एक टोकरी में अंडे भर कर उनको बेचने के लिये बाजार ले कर जा रही थी।

उसको देख कर उसे शरारत सूझी। उसने उस अंडे बेचने वाली की टोकरी की तरफ एक पत्थर फेंका और उस एक ही पत्थर से उस स्त्री की टोकरी में रखे सारे अंडे टूट गये।

इससे उस स्त्री को गुस्सा आ गया तो उसने उस लड़के को शाप दे दिया — "तुम इससे बड़े कभी नहीं होगे जब तक तुम तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना[20] को नहीं ढूँढ लोगे।"

उस दिन के बाद से वह लड़का फिर और बड़ा नहीं हुआ बल्कि और पतला दुबला होता चला गया। उसकी माँ उसकी जितनी

---

[19] The Little Shepherd – a folktale from Genoa, Italy, Europe.
Adapted from the book "Italian Folktales" by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980. Hindi translation of its most stories is available from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

[20] Bargaglina – name of the girl of three singing apples

ज़्यादा देखभाल करती वह उतना ही और पतला दुबला होता जाता।

एक दिन उसकी मॉ ने उससे पूछा — "बेटा, तुझे क्या हो गया है? क्या तूने किसी का कुछ बुरा किया है जो उसने तुझे शाप दे दिया है? तू बड़ा ही नहीं होता।"

तब उसने अपनी नीचता की कहानी अपनी मॉ को सुनायी कि कैसे उसने पत्थर मार कर एक अंडे बेचने वाली की टोकरी में रखे सारे अंडे तोड़ दिये थे।

और फिर उसने उस स्त्री के शब्द भी दोहरा दिये — "तुम इससे बड़े कभी नहीं होगे जब तक तुम तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को नहीं ढूँढ लोगे।"

उसकी मॉ बोली — "अगर ऐसी बात है तो तुम्हारे पास इसके सिवा और कोई चारा नहीं है बेटा कि तुम उस तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढो।"

यह सुन कर वह लड़का उस तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने चल दिया।

चलते चलते वह एक पुल के पास आया। वहॉ एक स्त्री एक अखरोट के खोल में बैठी झूल रही थी। उसने उस लड़के को देखा तो पूछा — "उधर कौन जा रहा है?"

चरवाहा बोला — "एक दोस्त।"

"ज़रा मेरी पलक तो उठा दो ताकि मैं तुमको देख सकूँ।"

चरवाहे ने उसकी पलक उठा दी तो उसने उसी तरफ देख कर पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो?"

"मैं तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने जा रहा हूँ। क्या तुमको उसका कुछ अता पता मालूम है?"

"नहीं वह तो मुझे नहीं मालूम है पर तुम यह पत्थर लेते जाओ शायद यह तुम्हारे काम आये।" कह कर उसने चरवाहे को एक पत्थर पकड़ा दिया। चरवाहे ने उससे वह पत्थर ले लिया और आगे चल दिया।

आगे जा कर उसको एक और पुल मिला जहॉ एक और छोटी स्त्री एक अंडे के खोल में बैठी नहा रही थी। उसने भी पूछा — "इधर कौन जा रहा है?"

चरवाहे ने जवाब दिया — "एक दोस्त।"

वह स्त्री बोली — "ज़रा मेरी पलक तो उठा दो ताकि मैं तुम्हें देख सकूँ।"

चरवाहे ने उसकी भी पलक उठा दी तो उसने उसको देख कर पूछा — "तुम कहॉ जा रहे हो?"

"मैं तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को ढूँढने जा रहा हूँ। क्या तुमको उसका कुछ अता पता मालूम है?"

"नहीं वह तो मुझे नहीं मालूम है पर तुम यह हाथी दॉत की कंघी लेते जाओ तुम्हारे काम आयेगी।" कह कर उसने चरवाहे को

एक कंघी दे दी। चरवाहे ने वह कंघी अपनी जेब में रखी, उसको धन्यवाद दिया और आगे चल दिया।

चलते चलते वह एक नाले के पास आया जहॉ एक आदमी उस नाले के पास खड़ा खड़ा अपने थैले में कोहरा भर रहा था। उस चरवाहे ने उस आदमी से भी पूछा कि क्या वह तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को जानता था। पर उसने भी वही जवाब दिया कि वह उसको नहीं जानता था।

पर उस आदमी ने उस चरवाहे को एक जेब भर कर कोहरा दे दिया और कहा कि वह उसको अपने साथ ले जाये उसके काम आयेगा। चरवाहे ने उस आदमी से कोहरा लिया और उसको धन्यवाद दे कर आगे बढ़ गया।

चलते चलते वह एक चक्की के पास आया जो एक लोमड़े की थी। चरवाहे ने लोमड़े से भी पूछा कि क्या वह तीन गाने वाले सेबों की सुन्दर बरगैगलीना को जानता था।

लोमड़ा बोला — "हॉ मैं जानता हूँ कि वह सुन्दर बरगैगलीना कौन है पर तुमको उसे ढूँढने में बहुत परेशानी होगी। तुम यहॉ से सीधे चले जाओ तो वहॉ तुमको एक घर मिलेगा। उस घर का दरवाजा खुला होगा।

तुम उस दरवाजे से अन्दर चले जाना तो वहॉ तुमको क्रिस्टल का एक पिंजरा दिखायी देगा। उस पिंजरे में बहुत सारी छोटी छोटी घंटियॉ लगी हैं। उसी पिंजरे में वे गाने वाले सेब रखे हैं।

तुम वह पिंजरा उठा लेना पर वहॉ एक बुढ़िया का ध्यान रखना क्योंकि वहॉ एक बुढ़िया भी होगी। अगर उसकी ऑखें खुली हों तो समझना कि वह सो रही है और अगर उसकी ऑखें बन्द हों तो समझना कि वह सब कुछ देख रही है।"

उस लोमड़े की इस सलाह के साथ वह चरवाहा और आगे बढ़ा और उस घर तक आ गया जो उसको लोमड़े ने बताया था। उस घर का दरवाजा वाकई खुला हुआ था सो वह उस घर के अन्दर चला गया।

घर के अन्दर जा कर उसने देखा कि वहॉ एक क्रिस्टल का एक पिंजरा रखा है जिसमें घंटियॉ लगी हुईं हैं और उसी के पास एक बुढ़िया बैठी है जिसकी ऑखें बन्द हैं।

क्योंकि उसकी ऑखें बन्द थीं इसलिये लोमड़े के कहे अनुसार वह सब कुछ देख रही थी। उस बुढ़िया ने चरवाहे से कहा — "ज़रा देखना तो मेरे बालों में कहीं कोई जूँ[21] तो नहीं हैं?"

उसने उस बुढ़िया के बालों में झॉका तो वहॉ उसको उसके बालों में कुछ जूँ दिखायी दीं। वह उसके सिर की जूँ निकालने

[21] Translated for the word "Lice". See its picture above.

लगा। जब वह उसके सिर में से जूँ निकाल रहा था तो उस बुढ़िया की ऑखें खुल गयीं। अब उसको पता चल गया कि वह अब सो गयी थी।

उसको सोता देख कर चरवाहे ने तुरन्त ही क्रिस्टल का वह पिंजरा वहॉ से उठाया और भाग लिया। पर उस पिंजरे को ले जाते समय उसकी छोटी छोटी घंटियॉ बज उठीं और वह बुढ़िया जाग गयी। उसने उस चरवाहे के पीछे सौ घुड़सवार भेजे।

जब चरवाहे ने देखा कि वे घुड़सवार उसके काफी पास आ गये हैं तो उसने अपनी जेब में रखा पत्थर का टुकड़ा निकाल कर अपने पीछे फेंक दिया।

जमीन पर पड़ते ही उस पत्थर का एक बहुत बड़ा पहाड़ बन गया। उस बुढ़िया के कुछ घोड़े उससे टकरा कर मर गये और कुछ की टॉगें टूट गयीं। घोड़े बेकार होने की वजह से वे और आगे नहीं जा सके और वे सब घुड़सवार वापस लौट गये।

उन घुड़सवारों को वापस आया देख कर उस बुढ़िया ने अबकी बार दो सौ घुड़सवार उसके पीछे भेजे। चरवाहे ने एक नया खतरा देखा तो अपनी जेब से हाथी दॉत की कंघी निकाल कर अपने पीछे फेंक दी।

वह कंघी जहॉ गिरी थी वहॉ एक शीशे जैसा चिकना पहाड़ खड़ा हो गया जिस पर चढ़ते ही सारे घोड़े फिसल फिसल कर गिर पड़े और मर गये। सो वे दो सौ घुड़सवार भी वापस चले गये।

उनको वापस आया देख कर उस बुढ़िया ने अबकी बार तीन सौ घुड़सवार भेजे। इतने सारे घुड़सवारों के देख कर उस चरवाहे ने अपनी जेब से कोहरा निकाल कर फेंक दिया। वह कोहरा सारे में फैल गया और वे सारे घुड़सवार उस कोहरे में खो कर रह गये।

इस बीच वह चरवाहा वहॉ से बच कर भाग तो लिया पर रास्ते में उसको प्यास लग आयी। रास्ते में उसके पास पीने के लिये कुछ भी नहीं था सो उसने सोचा कि वह पिंजरे में से गाने वाला एक सेब निकाल कर खा लेता है।

उसने पिंजरे में से एक सेब निकाला और उसको काटा तो उसमें से एक छोटी सी आवाज आयी — "सेब ज़रा धीरे से काटो वरना मुझे बहुत तकलीफ होगी।"

यह सुन कर उसने वह सेब बड़ी धीरे काटा। उसमें से उसने आधा सेब खाया और दूसरा आधा सेब अपनी जेब में रख लिया। फिर वह अपने रास्ते चल पड़ा।

चलते चलते वह अपने घर के पास वाले कुँए पर आ गया। वहॉ उसने अपनी जेब में से दूसरा आधा सेब निकालने के लिये हाथ डाला तो वहॉ उसको उसका बचा हुआ सेब तो नहीं मिला, हॉ एक छोटी सी लड़की वहॉ जरूर खड़ी थी।

चरवाहा तो यह देख कर आश्चर्यचकित रह गया। वह लड़की बोली — "मैं सुन्दर बरगैगलीना हूँ और मुझे केक बहुत पसन्द है। मुझे केक खाना है मुझे बहुत भूख लगी है।"

उस कुँए के चारों तरफ एक दीवार थी और बीच में एक छेद था सो चरवाहे ने उस सुन्दर बरगैगलीना को उस कुँए की दीवार पर बिठा दिया और उससे कहा कि जब तक वह उसके लिये केक ले कर आता है वह उसका वहीं इन्तजार करे।

इसी बीच बदसूरत नाम की एक दासी वहाँ आयी। वह वहाँ उस कुँए से पानी खींचने आयी थी।

उसको वहाँ वह सुन्दर सी छोटी सी लड़की दिखायी दी तो उसने अपने मन में सोचा — "यह कैसे हुआ कि यह तो इतनी छोटी सी है और इतनी सुन्दर है और मैं इतनी बड़ी हूँ और इतनी बदसूरत हूँ।"

यह सोच कर ही वह दासी इतनी गुस्सा हुई कि उसने उस छोटी सी लड़की को कुँए में फेंक दिया। जब चरवाहा उस छोटी सुन्दर बरगैगलीना के लिये केक ले कर वहाँ आया तो उसने देखा कि उसकी सुन्दर बरगैगलीना तो वहाँ थी ही नहीं।

उसका दिल टूट गया। कितनी मुश्किल से तो वह उसको ले कर आया था और अब जब वह मिल गयी थी तो वह गायब भी हो गयी।

उस चरवाहे की मॉ भी उसी कुॅए पर पानी भरने आती थी। एक दिन पानी भरते समय उसकी बालटी में एक छोटी सी मछली आ गयी।

वह उस मछली को घर ले गयी और उसको खाने के लिये तल लिया। मॉ ने वह तली हुई मछली खुद भी खायी और अपने बेटे को भी खिलायी। और उसकी हड्डियॉ बाहर फेंक दीं।

उस मछली की हड्डियॉ जहॉ जा कर गिरीं वहॉ एक पेड़ उग आया और समय के साथ साथ वह पेड़ इतना बड़ा हो गया कि उसने चरवाहे के घर की रोशनी रोक दी।

यह देख कर उस चरवाहे ने उस पेड़ को काट डाला और उसकी लकड़ी को आग जलाने के काम में लाने के लिये घर के अन्दर रख लिया।

यह सब करते करते चरवाहे की मॉ मर गयी और अब वह घर में अकेला रह गया। वह और भी दुबला होता जा रहा था। वह अपने बड़ा होने के लिये कुछ भी करता पर वह बड़ा ही नहीं हो पा रहा था।

रोज सुबह ही वह घास के मैदानों में चला जाता और रात होने पर ही घर लौटता। घर आ कर उसको बहुत आश्चर्य होता जब वह देखता कि सुबह जो बर्तन वह गन्दे छोड़ गया था वे सब साफ रखे हैं और उसका घर भी साफ है।

उसने सोचा कि यह जानने के लिये कि उसके घर में उसके पीछे यह सब कौन कर रहा है उसको एक दिन घर में रुकना ही पड़ेगा।

सो अगले दिन वह घर से बाहर जाने के लिये निकला तो पर बाहर नहीं गया। वह वहीं दरवाजे के पीछे छिप गया और देखता रहा कि उसके घर में उसके पीछे कौन आता है।

कुछ समय बाद ही उसने देखा कि लकड़ी के ढेर में से एक ब्हुत ही सुन्दर सी लड़की निकली। उसने उसके सारे बरतन साफ किये, घर को झाड़ा बुहारा, उसका बिस्तर ठीक किया। फिर उसने आलमारी खोली और केक खाया।

बस इसी समय वह चरवाहा उछल कर दरवाजे के पीछे से बाहर निकल आया और उससे पूछा — "तुम कौन हो और तुम अन्दर कैसे आयीं?"

लड़की बोली — "मैं सुन्दर बरगैगलीना हूॅ। वह लड़की जिसको तुमने अपनी जेब में रखे आधे सेब में पाया था। जब तुम मुझको वहॉ कुॅए पर बिठा कर चले गये तब वहॉ एक बदसूरत दासी आयी और उसने मुझे कुॅए में धकेल दिया। कुॅए में गिर कर मैं मछली बन गयी।

उसके बाद तुम लोगों ने मुझे तल कर खा लिया और मेरी हड्डियॉ बाहर फेंक दीं। वहॉ गिर कर मैं एक पेड़ बन गयी। तुमने वह पेड़ काट कर उसकी लकड़ी अपने घर में रख ली। अब जब तुम घर में नहीं होते तो मैं सुन्दर बरगैगलीना बन जाती हूॅ।"

चरवाहा यह सुन कर बहुत खुश हो गया कि उसको सुन्दर बरगैगलीना फिर से मिल गयी थी। अब वह चरवाहा दिन दूना रात चौगुना बढ़ने लगा था और उसके साथ साथ वह सुन्दर बरगैगनीना भी बढ़ने लगी।

जल्दी ही वह चरवाहा बढ़ कर एक सुन्दर नौजवान हो गया और सुन्दर बरगैगलीना भी बड़ी हो कर और सुन्दर हो गयी। दोनों ने आपस में शादी कर ली और दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

6 सेब वाली लड़की[22]

सेब की यह कहानी यूरोप महाद्वीप के इटली देश की एक ऐसी कहानी है जिसमें एक लड़की सेब के अन्दर ही रहती है।

एक बार एक राजा और एक रानी थे जो इसलिये बहुत दुखी रहते थे क्योंकि उनके कोई बच्चा नहीं था। रानी बराबर पूछती रहती — "मेरे भी उसी तरीके से बच्चे क्यों नहीं होते जैसे इस सेब के पेड़ के ऊपर सेब लगते है?"

सो हुआ यह कि एक दिन बजाय एक लड़के को जन्म देने के उस रानी ने एक सेब को जन्म दिया। पर यह सेब दुनियॉ के सब सेबों से ज़्यादा लाल और ज़्यादा सुन्दर था। राजा ने उस सेब को एक सोने की तश्तरी में रख कर अपनी बालकनी में रख दिया।

राजा के महल की सड़क के दूसरी तरफ भी एक राजा रहता था।

एक दिन वह दूसरा राजा अपनी खिड़की में खड़ा बाहर देख रहा था तो उसने देखा कि उसके सामने वाले राजा की बालकनी में एक बहुत ही सुन्दर नहायी धोयी लड़की खड़ी अपने बालों में कंघी कर रही थी। वह लड़की सेब जैसी गोरी और गुलाबी थी।

[22] Apple Girl – a folktale from Italy from its Florence area.
Adapted from the book : "Italian Folktales: selected and retold by Italo Calvino". Translated by Philip Martin in 1980.

उसको देख कर तो उसका मुँह खुला खुला रह गया और वह उसकी तरफ देखता का देखता रह गया।

पर जैसे ही उस लड़की को यह लगा कि कोई उसको देख रहा है तो वह वहाँ से भागी और तश्तरी में रखे सेब के अन्दर जा कर गायब हो गयी।

राजा को तो उससे पागलपन की हद तक प्यार हो गया था। सो उसके दिमाग ने कुछ काम किया और वह सड़क पार कर के उस दूसरे राजा के महल की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने महल का दरवाजा खटखटाया तो रानी ने दरवाजा खोला।

राजा बोला — "रानी जी आप मेरे ऊपर एक कृपा करें।"

रानी बोली — "कहिये। पड़ोसी ही पड़ोसी के काम आते हैं।"

राजा बोला — "आपकी बालकनी में जो सेब रखा है वह आप मुझे दे दें।"

रानी बोली — "राजा साहब क्या आप जानते हैं कि आप क्या कह रहे हैं? मैं उस सेब की माँ हूँ और आपको पता होना चाहिये कि मुझे उसके लिये कितना इन्तजार करना पड़ा।"

पर राजा को तो ना नहीं सुनना था इसलिये सेब के माता पिता को उस सेब को उस दूसरे राजा को देना ही पड़ गया ताकि पड़ोसियों में आपस में सम्बन्ध अच्छे रह सकें।

इस तरह वह राजा उस सेब को ले कर अपने घर आ गया और उसको ले जा कर सीधा अपने कमरे में चला गया। वहॉ उसने उस तश्तरी को अपने कमरे की एक मेज पर रख दिया। उसके नहाने धोने के लिये सब कुछ बाहर रख दिया।

अब वह लड़की रोज सुबह उस सेब में से नहाने और अपने बाल ठीक करने के लिये उस सेब में से निकलती और वह राजा उसको देखता रहता।

बस यही था जो वह सेब में से बाहर निकल कर करती थी। न तो वह कुछ खाती थी और न कोई बात करती थी। बस केवल नहाती थी और अपने बाल बनाती थी और फिर सेब के अन्दर चली जाती थी।

यह राजा अपनी सौतेली मॉ के साथ रहता था। उसकी मॉ को कुछ शक हुआ जब उसने देखा कि उसका बेटा लगातार अपने कमरे में अकेले ही रह रहा था। कहीं बाहर निकलता ही नहीं था।

उसने सोचा "चाहे मुझे कुछ भी करना पड़े पर मुझे यह जरूर मालूम करना है कि मेरा बेटा अपने कमरे में बैठा बैठा क्या करता रहता है।"

उसी समय किसी और राजा ने उनके राज्य पर हमला कर दिया सो उस राजा को लड़ाई के लिये जाना पड़ गया।

जब उसको अपना सेब छोड़ना पड़ा तो उसका दिल टूट गया। उसने अपने एक बहुत ही भरोसे के नौकर को बुलाया और उससे

कहा — "मैं अपने कमरे की चाभी तुम्हारे पास छोड़े जा रहा हूँ। ज़रा ध्यान रखना कि कोई मेरे कमरे में न जाने पाये।

रोज उस सेब वाली लड़की के लिये पानी और कंघा बाहर रख देना और इस बात का भी ध्यान रखना कि उसको और भी जो चाहिये वह उसको मिल जाये। और हॉ भूलना नहीं कि वह मुझे सब बताती रहे।"

हालॉकि यह गलत था क्योंकि वह तो कभी बोली ही नहीं थी पर राजा ने सोचा कि नौकर को यह झूठ बताना जरूरी था।

"अगर मेरे पीछे उसका बाल भी बॉका हुआ तो मैं तुमको जान से मार दूँगा।"

नौकर बोला — "आप बिल्कुल बेफिकर रहिये, राजा साहब। मैं अपनी तरफ से उनकी बहुत अच्छी तरह से देखभाल करूँगा।"

जैसे ही राजा चला गया उसकी सौतेली मॉ ने अपनी हर कोशिश की कि वह राजा के कमरे में घुस जाये पर उसको मौका ही नहीं मिला।

एक बार उसने नौकर की शराब में अफीम मिला दी और जब वह उसको पी कर सो गया तो उसने उसके पास से राजा के कमरे की चाभी चुरा ली।

फिर उसने राजा के कमरे का दरवाजा खोला और अपने बेटे के इस अजीब से बर्ताव को जानने के लिये उसका सारा कमरा उलट

पुलट कर दिया ताकि उसको यह पता चल जाये कि वह ऐसा क्यों कर रहा था।

पर जितना वह ढूँढती थी उतना ही उसको कुछ नहीं मिल पा रहा था। बहुत सारी साधारण चीज़ों में उसको केवल एक ही अलग सी चीज़ दिखायी दी, और वह था एक शानदार सेब जो एक सोने के कटोरे में रखा था।

उसको लगा कि शायद यही सेब होगा जिसके बारे में वह हमेशा सोचता रहता होगा।

रानियॉ हमेशा ही एक छोटा सा चाकू अपने कपड़ों में छिपा कर रखती हैं सो उसने अपना वह चाकू निकाला और उस सेब को चारों तरफ से गोदना शुरू किया।

उसके सेब के हर गोदने से खून की एक धारा सी बह निकली। यह देख कर सौतेली मॉ डर गयी और उस सेब को वहीं छोड़ कर वहॉ से भाग ली। चाभी उसने नौकर की उसी जेब में रख दी जहॉ से उसने निकाली थी।

जब नौकर की ऑख खुली तो उसको तो पता नहीं था कि क्या हुआ। वह राजा के कमरे में गया तो देखा कि वहॉ तो सारी जगह खून बिखरा पड़ा था।

उस बेचारे के मुँह से निकला — "उफ, अब मैं क्या करूँ?" और वह भी वहॉ से भाग लिया। वहॉ से भाग कर वह अपनी एक

चाची के पास गया जो एक परी थी और उसके पास बहुत तरीके के जादुई पाउडर थे।

उसने जब जा कर अपनी उस चाची को अपना सारा किस्सा सुनाया तो उसने दो जादुई पाउडर मिलाये – एक तो उन सेबों के लिये जिन पर जादू किया गया होता है और दूसरा उन लड़कियों के लिये जिन पर जादू किया गया होता है।

उसने उन दोनों पाउडरों को मिलाया और उस पाउडर को नौकर को दे कर कहा कि वह जा कर उसको सेब के ऊपर छिड़क दे।

नौकर भागा भागा आया और वह पाउडर उसने उस सेब पर छिड़क दिया। सेब टूट कर खुल गया और सेब में से वह लड़की बाहर निकल आयी। पर उसके सारे शरीर पर पट्टियॉ बॅधी थीं और कई जगह प्लास्टर बॅधा था।

राजा घर आया तो वह लड़की पहली बार उससे बोली — "क्या तुम विश्वास करोगे कि तुम्हारी सौतेली मॉ ने मेरे सारे शरीर पर चाकू मारे?

पर तुम्हारे नौकर ने मेरी बड़ी सेवा की जिससे मैं ठीक हो सकी। मैं अठारह साल की हूॅ और एक जादू में थी। अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हारी पत्नी बन सकती हूॅ।"

"अरे यह तुम क्या कहती हो कि मैं पसन्द करूॅ तो? मैं तो कब से तुमसे शादी करना चाहता हूॅ।"

बस फिर क्या था दोनों तरफ से शादी की तैयारियॉ शुरू हो गयीं और दोनों की शादी हो गयी।

दोनों महलों में खूब आनन्द मनाया। इस आनन्द मनाने के समय में केवल एक ही आदमी नहीं था – और वह थी राजा की सौतेली मॉ।

7 चील मुर्गे क्यों खाती है?[23]

आश्चर्यजनक रूप से सेब की यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के नाइजीरिया देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत दिनों पहले की बात है कि एक गॉव में एक पति पत्नी रहते थे जिनके कोई बच्चा नहीं था। समय गुजरता गया और उस पत्नी को उसके पड़ोसियों ने चिढ़ाना शुरू कर दिया कि उसके कोई बच्चा नहीं था।

एक दिन उसके एक पड़ोसी जिसके साथ उसकी बहुत लड़ाई रहती थी ने उसे इतना चिढ़ाया कि उसका दिल टूट गया। उस रात जब वह सोने गयी तो वह रो पड़ी। उसने अपने ची[24] से प्रार्थना की वह उसको उसका अपना एक बच्चा दे दे।

इस बार उसकी प्रार्थना सुन ली गयी और उसने एक बहुत ही सुन्दर सी बेटी को जन्म दिया। उसने उसका नाम रखा अडॉमा[25]। अडॉमा, यानी सुन्दर लड़की, को लोग मा[26], यानी सुन्दरता भी कहते थे।

[23] Why the Hawk Preys on Chicks? – an Igbo folktale from Nigeria, West Africa
Adapted from - The Orphan Girl and the Other Stories.
[24] Chi – one's personal God.
[25] Adanma
[26] Nma

उसका नाम बिल्कुल उसके लायक था क्योंकि वह वाकई बहुत सुन्दर थी। जब वह बड़ी हो गयी तो उस गॉव का हर आदमी उससे शादी करने की इच्छा रखने लगा।

पर अडॉमा में एक गड़बड़ थी जिसकी वजह से उसके माता पिता उसकी शादी के लिये परेशान थे। उसकी उडाला[27] यानी सेब खाने की इच्छा बहुत ज़्यादा थी।

प्यारी बेटी होने की वजह से उसको सेब की कभी कोई कमी भी नहीं होने दी जाती थी बल्कि उसके लिये घर में बहुत सारे सेब रखे रहते। पर बहुत जल्दी ही सेब के लिये उसका यह लालच उसके माता पिता के लिये एक बहुत बड़ी परेशानी बन गया।

एक दिन जब मा के माता पिता कहीं बाहर जाने वाले थे तो उन्होंने घर में सब तरह का खाने पीने का सामान और कई टोकरी भर कर बहुत स्वाददार रसीले सेब ला कर रख दिये।

मा की मॉ ने उसको बुलाया और कहा — "मा, देखो तुम्हारे पिता और मैं ज़रा बाहर जा रहे हैं। घर में वह सब कुछ है जो तुमको चाहिये। मुझसे वायदा करो कि जब तक हम बाहर से लौट कर नहीं आते तुम घर छोड़ कर बाहर कहीं नहीं जाओगी।

और तुम बाहर सेब तोड़ने तो बिल्कुल ही नहीं जाओगी, खास कर के पूरे चॉद की रात को क्योंकि उस दिन वहॉ भूत सेब तोड़ने के लिये आते हैं।"

[27] Udala – means apple

मा ने वायदा किया कि वह वैसा ही करेगी जैसा कि उसकी मॉ ने कहा है।

जब मा के माता पिता चले गये तो मा ने अपने दोस्तों को अपने घर बुलाया और घर में सेब और दूसरे खाने की दावत की। दूसरे दिन रात गये तक मा का पूरा खाना खत्म हो गया।

अब वह इतनी ज़्यादा भूखी हो गयी कि वह यह भी भूल गयी कि उसकी मॉ ने उससे क्या कहा था। वह सेब के बड़े वाले पेड़ के पास सेब तोड़ने के लिये भागी गयी।

उस दिन पूरे चॉद की रात थी और उसको इस बात की भी याद नहीं थी कि उस दिन भूत वहॉ पहले से ही सेब तोड़ने के लिये आये हुए थे।

एक भूत ने कुछ रसीले सेब तोड़े और मा के पैरों के पास डाल दिये। मा को लगा कि यह तो उसकी अच्छी किस्मत थी कि उसके पास सेब अपने आप ही आ गये सो उसने उनको तुरन्त ही उठा लिया।

वह उनको खाने ही वाली थी कि उस भूत ने उससे शादी करने के लिये कहा — "मा, मुझसे शादी कर लो और ये सेब मेरे प्यार की निशानी समझ कर ले जाओ।"

यह सुन कर मा डर गयी और इधर उधर देखने लगी। उसको आश्चर्य हुआ कि यह आवाज कहॉ से आयी। पर उसको कहीं कोई दिखायी नहीं दिया सो वह वे सेब ले कर घर भाग गयी।

अगले दिन जब उसके माता पिता लौटे तो वे अपनी बेटी को घर में देख कर बहुत खुश हुए। उन्होंने उसको गले से लगाया और बहुत सारा अच्छा सामान दिया जो वे उसके लिये ले कर आये थे।

उस रात आधी रात को उनके घर के दरवाजे पर रात के सन्नाटे को तोड़ती हुई एक खटखटाहट हुई — थप थप, थप थप, और वहॉ से बड़ी तेज़ चॉदनी की एक किरन आयी। कोई दरवाजा खटखटा रहा था।

मा का पिता धीरे से दरवाजे के पास गया और उसे खोला तो बाहर उसको एक अजीब सी शक्ल का बूढ़ा खड़ा दिखायी दिया।

मा के पिता को उस बूढ़े का चेहरा बिल्कुल भी नहीं दिखायी दे रहा था क्योंकि चॉद की वजह से उसकी अपनी परछॉई उसके चेहरे पर पड़ रही थी।

मा के पिता ने पूछा — "आपको क्या काम है?"

बूढ़ा बोला — "मैं अपनी पत्नी को लेने आया हूॅ।"

इस बीच मा की मॉ भी तभी जाग गयी थी जब उसका पति अपने बिस्तर से उठ कर आया था। वह अपने पति के पास आयी और आ कर उसके पीछे खड़ी हो गयी।

जैसे ही उसको यह महसूस हुआ कि उसकी बेटी ने क्या कर लिया है उसके दिल की धड़कन तो बहुत तेज़ हो गयी जैसे अफ्रीका के बहुत सारे हाथी एक साथ भागे जा रहे हों।

वह उस बूढ़े से भीख सी माँगती हुई बोली — "ओ अजनबी, मेहरबानी कर के मेरी एकलौती बेटी को मुझसे दूर मत ले जाओ। मैं तुमको दुनियाँ का सारा सोना दे दूँगी। इसके अलावा जो भी तुम चाहो वह मैं तुमको दूँगी। मैं अपनी एक नौकरानी भी तुमको दे दूँगी।"

अजनबी ने ना में सिर हिलाया और मा की माँ उसका इरादा न बदल सकी। सो इससे पहले कि वह अजनबी उसकी बेटी को अपने साथ ले जाये मा की माँ अपनी बेटी से आखिरी बार बात करने के लिये उसके कमरे में गयी।

उसने उससे कहा — "अगर तुम मुझे और अपने पिता को फिर से देखना चाहती हो तो मेरी बात ध्यान से सुनो। जब वह बूढ़ा गहरी नींद सो जाये तो तुमको वहाँ से भाग आना चाहिये। वह गहरी नींद में कब है यह तुम उसके खर्राटों से जान जाओगी। जब वह खर्राटे मारे —

गर्र फी फी फी फी – भूत सोते हैं जागते नहीं

तब समझो कि वह सो गया है और वही समय वहाँ से भागने का होगा। जाओ और समय मत बरबाद करो और वहाँ से भाग कर तुम सीधी घर आना क्योंकि वह गहरी नींद में सो गया है। क्या तुम सुन रही हो जो मैंने तुमसे कहा?"

मा सुबकती हुई बोली — "हाँ माँ।"

तब मा की मॉ ने मा को फटे हुए कपड़े पहनाये और एक नौकरानी को बहुत सुन्दर कपड़े और गहने पहनाये जो उसने मा के लिये खरीदे थे।

फिर वह इस उम्मीद मे उस नौकरानी को उस अजनबी के पास ले गयी कि शायद वह उसको मा समझ लेगा और उसको ले जायेगा पर ऐसा नहीं हुआ।

अजनबी ने उसको पहचान लिया और उसको लेने से इनकार कर दिया तो मा की मॉ को लगा कि उसकी यह चाल तो बेकार ही गयी।

सो उसने मा को उस बूढ़े को दे दिया और वह उसको अपनी कभी न वापस आने वाली जगह ले गया। वे लोग सात जंगल और सात समुद्र पार करने के बाद भी अपनी जगह नहीं आ पाये थे।

वे लोग अगली रात को अपनी जगह पर पहुॅच पाये। उनको सोने के लिये लेटने के लिये भी करीब करीब सुबह हो चुकी थी। वे जब सोने के लिये लेटे तो मा को बहुत डर लग रहा था।

हालॉकि वह बहुत थकी हुई थी पर वह सो नहीं सकी। किसी तरह से उसकी ऑख लगी ही थी कि ज़ोर ज़ोर के खर्राटों से उसकी ऑख खुल गयी —

गर्र फी फी फी फी, भूत सोते हैं भूत जागते नहीं
गर्र फी फी फी फी, भूत सोते हैं भूत जागते नहीं

मा तुरन्त ही बिस्तर से कूद पड़ी और वहॉ से भाग ली। वह चॉद की धीमी रोशनी में जंगल में इधर से उधर भटकती रही।

भटकते भटकते वह थक गयी और एक बड़े से ओक के पेड़[28] के सहारे आराम करने के लिये बैठ गयी। बैठते ही उसको नींद आ गयी और वह वहीं सो गयी।

फिर उसने अपनी तरफ आती हुई कुछ पैरों की आहट सुनी। एक आवाज बोली — "मैं उसको बहुत जल्दी ही पकड़ लूॅगा और फिर उसको अपना बना लूॅगा।"

दूसरा बोला — "पर याद रखना कि वह मेरी पत्नी है।

मा ने जबरदस्ती अपनी ऑखें खोलीं तो देखा कि सवेरा हो चुका है। वह जल्दी से उठी और उसने फिर से भागना शुरू कर दिया।

उसने ऊपर देखा तो आसमान में उड़ती हुई उसे एक चील दिखायी दी जो अपने लिये खाना ढूॅढ रही थी।

वह उससे प्रार्थना करती हुई चिल्लायी — "ओ चील, मेहरबानी कर के मेरी सहायता कर और मुझे इस कभी न वापस आने वाली जगह से निकाल।"

जैसे ही भूत उसको पकड़ने वाले थे कि उस चील ने नीचे की तरफ एक कूद लगायी और मा को एक बड़े से ओक के पेड़ के ऊपर ले गयी।

[28] Oak tree is a kind of a large shady tree

इससे तो वे भूत गुस्से से पागल से हो गये। उन्होंने लम्बे वाले चाकू और कुल्हाड़ियॉ लीं और उस पेड़ को काटना शुरू कर दिया।

जब वह पेड़ गिरने ही वाला था कि चील ने मा को फिर से उठा लिया और मा के गॉव की तरफ उड़ चली।

जब उसने भूतों की दुनियॉ की सीमा पार कर ली तो भूतों को लगा कि अब वे उसको नहीं पकड़ सकते थे सो उन्होंने अपनी कोशिश छोड़ दी और वे अपने घर चले गये।

जब वह चील मा के गॉव में आ गयी तो उसने गाना शुरू किया —

मा तो भूतों के देश में थी मा की शादी तो एक भूत से हुई थी
मा अब जिन्दा लोगों के देश में आ गयी है इस प्यारी सी बेटी की मॉ कौन है?

मा के माता पिता को तो अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ कि उनकी बेटी घर आ गायी है। जैसे जैसे वह उस गीत को सुनते रहे वह और तेज़ होता गया।

सो वे अपने घर के बाहर निकले और अपनी बेटी को सही सलामत देख कर बहुत खुश हुए। उन्होंने चैन की सॉस लेते हुए कहा — "चलो आखिर हमारी बेटी घर वापस आ गयी।"

मा के माता पिता अपनी बेटी को वापस देख कर बहुत खुश थे उन्होंने उसको गले लगाया और चील को धन्यवाद दिया। उन्होंने

उसको खाने और सोने की भेंटें दीं पर उसने उनकी कोई भी भेंट नहीं ली।

उसकी ऑखें तो बस एक मुर्गी और उसके बच्चे पर लगी हुई थीं जो उनके घर के ऑगन में कीड़े के लिये अपने पंजों से जमीन खुरच रहा था।

मा की मॉ ने कहा — "अगर तुमको यह मुर्गी और उसका यह बच्चा पसन्द है तो ये दोनों तुम्हारे हैं।" चील यह सुन कर बहुत खुश हुई।

मा की मॉ ने एक टोकरी भर कर मुर्गियॉ उसको दे दीं। चील ने उसको धन्यवाद दिया और अपनी मुर्गियों की टोकरी ले कर अपने घर की तरफ उड़ चली।

पर जब वह अपने घर जा रही थी तो उनमें से एक मुर्गी नीचे गिर पड़ी। बाकी की मुर्गियॉ भी कहीं नीचे न गिर जायें इसलिये उसने उसको जाने दिया।

वह वहीं से चिल्लायी — "ओ किसानों यह मुर्गी तुम लोग रख लो। इसको तुम मेरा अपने ऊपर उधार समझना पर मैं इसका ब्याज वसूल करने आती रहूॅगी।"

उस दिन से चील मुर्गियॉ खा खा कर अपन ब्याज वसूल करती रहती है। उनको लगता है कि सारी मुर्गियॉ उनकी दादी की दादी की दादी की मुर्गी के बच्चे हैं। उनको तो यह भी नहीं पता कि उस एक मुर्गी का ब्याज कितना होता था।

8 आधा नौजवान[29]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इसमें एक जादूगरनी एक बच्चे को दो टुकड़ों में बॉट कर उसका एक हिस्सा खुद रख लेती है और दूसरा हिस्सा उसकी मॉ को दे देती है।

एक बार एक लड़की को बच्चे की आशा हुई तो उसकी पार्सले[30] खाने की इच्छा हुई। उसके घर के बराबर में एक जादूगरनी रहती थी। इस जादूगरनी का पार्सले का एक बहुत बड़ा बागीचा था और उस बागीचे का दरवाजा हमेशा खुला रहता था।

क्योंकि पार्सले वहॉ बहुत पैदा होता था सो उस बागीचे में कोई भी अन्दर आ सकता था और अपने आप पार्सले तोड़ कर ले जा सकता था।

सो वह लड़की भी उस जादूगरनी के बागीचे में पार्सले तोड़ने के लिये चली गयी। उसकी पार्सले खाने की इच्छा इतनी ज़्यादा थी कि वह उस जादूगरनी के बागीचे का करीब करीब आधा पार्सले खा गयी।

---

[29] Cloven Youth – a folktale from Venice, Italy, Europe. Adapted from the book: "Italian Folktales" by Italo Calvino. 1956. Translated by George Martin in 1980.

[30] Parsley is a kind of herb, looks like green coriander leaves (cilanthro). It is most used in Italian dishes both as fresh and dried herbs. See its picture above.

जब वह जादूगरनी वापस आयी तो उसने देखा कि उसके बागीचे से तो आधा पार्सले गायब हो चुका था। उसने सोचा कि वह अगले दिन उस पर नजर रखेगी कि उसका इतना सारा पार्सले कौन ले गया।

वह लड़की वहाँ बचा हुआ पार्सले खाने के लिये अगले दिन भी गयी। उसने मुश्किल से उस बागीचे के पार्सले का आखिरी पौधा खाया होगा कि वह जादूगरनी वहाँ आ गयी और बोली — "आहा, तो वह तुम हो जो मेरे बागीचे का सारा पार्सले खा गयीं।"

वह लड़की बेचारी डर गयी और गिड़गिड़ाती हुई बोली — "मेहरबानी कर के मुझे जाने दो। मैं एक बच्चे की माँ बनने वाली हूँ। मेरी पार्सले खाने की इच्छा हुई तो मैं यहाँ आ गयी।"

जादूगरनी बोली — "ठीक है मैं तुमको जाने देती हूँ पर जो भी बच्चा तुमको होगा, चाहे वह लड़का हो या लड़की, जब वह सात साल का हो जायेगा तब वह आधा मेरा होगा और आधा तुम्हारा।"

यह सुन कर वह लड़की बहुत डर गयी सो वह जल्दी से उसको हाँ कर के वहाँ से चली आयी। समय आने पर उसके एक बेटा हुआ। बेटा अपने समय से बड़ा होने लगा।

जब उसका बेटा छह साल का हो गया तो एक दिन सड़क पर उसको वह जादूगरनी मिली। उस बच्चे को देख कर वह बोली — "अपनी माँ को याद दिलाना कि बस अब एक साल ही और बाकी है।"

बच्चा घर आया और अपनी मॉ से बोला — "मॉ आज मुझे अपनी पड़ोसन मिली थी। वह कह रही थी कि अपनी मॉ को याद दिलाना कि बस अब एक साल ही और बाकी है।"

मॉ बोली — "अगर अबकी बार वह तुमको फिर मिले और फिर यह कहे कि "बस अब एक साल ही और बाकी है।" तो तुम कहना कि "तुम पागल हो"।"

जब उस बच्चे के सात साल पूरे होने में तीन महीने बाकी रह गये तो एक दिन उस पड़ोसन ने फिर उस बच्चे से कहा — "अपनी मॉ से कहना कि बस अब केवल तीन महीने ही और बाकी रह गये हैं।"

बच्चे ने घर आ कर अपनी मॉ को अपनी पड़ोसन के शब्द जैसे के तैसे दोहरा दिये। उसकी मॉ ने फिर कहा कि "अगर अब की बार वह तुमसे ऐसा वैसा कुछ कहे तो तुम उससे कहना कि "मैम तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है क्या"।"

बच्चे ने मॉ के शब्द उस पड़ोसन को बोल दिये तो पड़ोसन बोली — "देखते हैं किसका दिमाग खराब होता है।"

तीन महीने बाद बुढ़िया जादूगरनी उस बच्चे को सड़क पर से उठा कर ले गयी और अपने घर ले जा कर उसे एक मेज पर पीठ के बल लिटा दिया। फिर एक बड़ा सा चाकू उठाया और सिर से ले कर पैर तक उसको दो बराबर हिस्सों में बॉट दिया।

एक हिस्से से उसने कहा — "तुम घर जाओ।" और दूसरे हिस्से से कहा — "तुम मेरे पास रहो।" सो एक हिस्सा अपनी मॉ के पास अपने घर चला गया और दूसरा हिस्सा उसके अपने पास रह गया।

एक हिस्सा जो घर चला गया था अपनी मॉ से जा कर बोला — "देखा मॉ? उस बुढ़िया ने मेरे साथ क्या किया और तुम कहती थी कि उसका दिमाग खराब हो गया है, वह पागल हो गयी है।"

उसकी मॉ ने गुस्से में आ कर अपने हाथ पैर फेंके पर अब वह कर ही क्या सकती थी उसका बेटा तो आधा हो ही चुका था। अब यह आधा लड़का और बड़ा होने लगा पर उसको यही पता नहीं था कि वह आगे चल कर अपनी ज़िन्दगी में क्या करेगा।

आखिर उसने मछियारा बनने का निश्चय किया। एक दिन जब वह ईल मछली[31] पकड़ रहा था तो उसने एक इतनी लम्बी ईल मछली पकड़ी जितना लम्बा वह खुद था।

जब उसने उसे बाहर खींचा तो वह ईल बोली — "तुम मुझे जाने दो और फिर तुम मुझे दोबारा पकड़ना।"

यह सुन कर उस लड़के ने उस मछली को फिर से पानी में फेंक दिया। उस मछली के कहे अनुसार उसने अपना मछली पकड़ने

[31] Eel fish – a kind of fish like a snake. See its picture above

वाला जाल फिर से पानी में डाला और जब फिर से उसे खींचा तो अबकी बार उस जाल में बहुत सारी ईल मछलियॉ थीं।

वह अपनी ईल मछलियों से भरी नाव ले कर किनारे आ गया और उस दिन उसने उनको बेच कर बहुत सारा पैसा कमाया।

अगले दिन जब वह मछली पकड़ने गया तो उसके जाल में वही बड़ी ईल मछली फिर से आ गयी। अबकी बार उसने लड़के से कहा — "मुझे जाने दो और छोटी ईल की कसम खा कर जो कुछ भी तुम मॉगोगे तुम्हारी वह इच्छा पूरी होगी।" सो उसने उस बड़ी ईल को फिर पानी में छोड़ दिया।

एक दिन जब वह मछली पकड़ने जा रहा था तो वह राजा के महल के पास से गुजरा। महल की खिड़की पर राजा की बेटी अपनी दासियों के साथ बैठी हुई थी।

उसने रास्ते पर जाता एक ऐसा आदमी देखा जो सिर से पैर तक आधा था – आधा शरीर, आधा सिर, एक बॉह, एक टॉग। वह ऐसे अजीब आदमी को देख कर हॅस पड़ी।

उसकी हॅसी की आवाज सुन कर लड़के ने ऊपर देखा और बोला — "तुम मेरे ऊपर हॅस रही हो? छोटी ईल के लिये, राजा की बेटी के मुझसे एक बच्चा होगा।" यह कह कर वह आगे बढ़ गया।

कुछ समय बाद ही राजा की बेटी को बच्चे की आशा हुई तो राजकुमारी घबरायी।

उसके माता पिता को भी इस बात का पता चल गया तो उन्होंने अपनी बेटी से पूछा — "इसका क्या मतलब है?"

बेटी बोली — "पिता जी, मैं भी आप ही की तरह से इस बात से बिल्कुल अनजान हूँ। मुझे कुछ नहीं मालूम।"

माता पिता बोले — "हमारी यह समझ में नहीं आया कि हमारी तरह तुम इस बात से अनजान कैसे हो? इसका पिता कौन है?"

राजा की बेटी रुआँसी हो कर बोली — "पिता जी, मुझे सचमुच ही कुछ पता नहीं है। मैं इसके बारे में वाकई कुछ भी नहीं जानती।"

उसके माता पिता उससे कई बार पूछते रहे और यह भी कहते रहे कि वह उनको सच सच बता दे। उसकी अगर कोई भी गलती होगी तो वे उसको माफ कर देंगे पर वह अपनी इसी बात पर अड़ी रही कि उसको इस बारे में कुछ पता नहीं है और वह बेकुसूर है।

जब उस लड़की ने कुछ बता कर नहीं दिया तो उन्होंने उसको बुरा भला कहना शुरू किया और उसके साथ बुरा बर्ताव करना शुरू कर दिया।

समय आने पर उसके एक बेटा हुआ। बजाय खुश होने के उस लड़की के माता पिता खूब रोये क्योंकि उनके घर में एक बिना बाप का बेटा पैदा हुआ था।

इस बात की पहेली सुलझाने के लिये उन्होंने एक जादूगर को बुलवाया। जादूगर बोला — "एक साल तक इन्तजार करो जब तक यह एक साल का होता है तब शायद कुछ पता चले।"

एक साल के बाद जादूगर ने कहा — "तुमको इस बच्चे के जन्म पर एक शानदार दावत देनी चाहिये और उसमें सारे कुलीन लोगों को बुलाना चाहिये।

जब वे सब यहॉ आ जायें तो एक सोने का और एक चॉदी का सेब इस बच्चे के हाथ में देना चाहिये। फिर यह बच्चा उन सेबों को ले कर सबके सामने जाये। यह बच्चा सोने का सेब अपने पिता को दे देगा और चॉदी का सेब अपने नाना को दे देगा।"

सो राजा ने अपने धेवते[32] के लिये दो सेब बनवाये एक सोने का और एक चॉदी का। और फिर उसके जन्म की खुशी में एक बहुत बड़ी शानदार दावत का इन्तजाम किया।

इस दावत में बहुत सारे जाने माने लोगों को बुलाया गया। एक बड़े बन्द कमरे में दीवार के सहारे कुर्सियॉ लगवायी गयीं। जब लोग वहॉ आना शुरू हुए तो उनको उन कुर्सियों पर बिठाया गया।

जब सब लोग वहॉ आ गये तो बच्चे को उसकी आया के साथ वहॉ लाया गया और उसके हाथ में दो सेब, एक सोने का और एक चॉदी का, दे दिये गये।

[32] Grandson – daughter's son is called Dhevataa or Navaasaa

बच्चे की आया बच्चे और सेबों को ले कर उस कमरे में चारों तरफ घूमने लगी। चारों तरफ घूम कर वह बच्चा राजा के दिये हुए सेबों के साथ वापस आ गया और उसने चॉदी का सेब ला कर राजा को दे दिया।

राजा बोला — "मैं इतना तो अच्छी तरह जानता हूॅ कि मैं तुम्हारा नाना हूॅ पर मैं जानना चाहता हूॅ कि तुम्हारा पिता कौन है।" बच्चे को उस कमरे में कई बार चक्कर लगवाया पर वह बिना किसी को सेब दिये हुए ही राजा के पास वापस आ गया।

वह जादूगर फिर से बुलवाया गया तो उसने कहा कि अबकी बार आप अपने शहर के सब गरीब आदमियों को बुलवाइये। सो राजा ने अबकी बार अपने राज्य के सारे गरीब लोगों के लिये एक दावत का इन्तजाम किया और उसमें उन सबको बुलवाया।

जब उस आधे नौजवान ने यह सुना कि राजा के महल में सब गरीबों के लिये एक दावत हो रही है तो वह अपनी मॉ से बोला — "मॉ मेरी सबसे अच्छी वाली आधी कमीज, आधी पैन्ट, एक जूता, और मेरी आधी टोपी निकाल दो क्योंकि आज मैं राजा के महल में जा रहा हूॅ। आज उन्होंने मुझे वहॉ खाने का न्यौता दिया है।"

मॉ ने वैसा ही किया और वह अपने सबसे अच्छे कपड़े पहन कर राजा के महल की तरफ चल दिया। कमरा खचाखच भरा था – मछियारे, भिखारी सब तरह के गरीब वहॉ जमा थे। वे सब बैन्चों

पर बैठे थे। राजा ने उनके लिये भी बैन्चें दीवार के सहारे सहारे ही लगवा रखी थीं।

जब सब लोग आ गये तो बच्चे की आया बच्चे को ले कर वहाँ आयी। राजा ने बच्चे के हाथ में सोने का सेब दे कर आया को उसको कमरे में चारों तरफ घुमाने के लिये कहा।

आया बच्चे को ले कर चल दी। घुमाते घुमाते वह उस बच्चे से कहती जाती थी — "बेटे, यह सेब अपने पिता को दे दो।"

जैसे ही वह बच्चा उस आधे आदमी के पास पहुँचा तो वह चिल्लाया — "पिता जी यह सेब लीजिये।"

सारे गरीब आदमी यह सुन कर ज़ोर से हँस पड़े — "हा हा हा हा। ज़रा देखो तो राजा की बेटी पड़ी भी तो किसके प्रेम में पड़ी।"

केवल एक राजा ही था जो उस समय पूरे तरीके से शान्त था। वह बोला — "अगर ऐसा है तो यही मेरी बेटी का पति होगा।" और उसने अपनी बेटी की शादी उस आधे नौजवान के साथ कर दी।

नये शादीशुदा पति पत्नी चर्च से निकले तो उन्होंने सोचा कि उनको वहॉ से ले जाने के लिये कोई बग्घी उनका इन्तजार कर रही होगी पर वहॉ कोई बग्घी तो नहीं, हॉ एक बड़ा सा खाली बैरल[33] रखा था।

राजा ने उस बैरल में उस आधे नौजवान, उसकी पत्नी और उनके बच्चे को रख कर उस बैरल को बन्द कर दिया और उसे समुद्र में फेंक दिया।

समुद्र में उस समय तूफान आया हुआ था सो वह बैरल लहरों के ऊपर खूब ऊपर नीचे उछल रहा था। कुछ ही पलों में वह ऑखों से ओझल हो गया। राजा के महल के हर आदमी ने सोचा कि वह बैरल तो अब हमेशा के लिये समुद्र में चला गया।

पर वह बैरल डूबा नहीं था। वह बाहर की तरफ तैरने लगा। आधे नौजवान ने महसूस किया कि राजा की बेटी बहुत डरी हुई थी सो उसने उससे कहा — "प्रिये, क्या तुम चाहती हो कि मैं यह बैरल समुद्र के किनारे ले चलूँ?"

राजा की बेटी डर से सहमी सी बोली — "हॉ, अगर तुम इस को वहॉ ले जा सकते हो तो।" पर उसके कहने से पहले ही यह हो गया।

---

[33] A barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). See its picture above.

"छोटी ईल के लिये, ओ बैरल, समुद्र के किनारे चलो।" और वह बैरल समुद्र के किनारे आ कर लग गया। उस आधे नौजवान ने उस बैरल का तला तोड़ा और वे तीनों उसमें से बाहर निकल आये।

यह खाना खाने का समय था सो वह आधा नौजवान बोला — "छोटी ईल के लिये, हमको खाना चाहिये।" बस तुरन्त ही एक मेज लग गयी जिस पर बहुत सारा खाना लगा था।

जब वे पेट भर कर खाना खा चुके तो उस आधे नौजवान ने अपनी पत्नी से पूछा — "क्या तुम मुझसे खुश हो?"

राजा की बेटी बोली — "तुम मुझे तब और ज़्यादा अच्छे लगते जब तुम पूरे होते।"

इस पर उसने अपने आपसे कहा — "छोटी ईल के लिये, क्या मैं पूरा और एक सुन्दर नौजवान बन सकता हूँ?" तुरन्त ही वह आधा नौजवान एक सुन्दर और पूरा नौजवान बन गया और एक कुलीन आदमी की तरह दिखायी देने लगा।

उसने राजा की बेटी से फिर पूछा — "अब तो तुम खुश हो न?"

"मैं तब ज़्यादा खुश होती जब तुम एक बढ़िया महल में रह रहे होते। बजाय इसके कि हम समुद्र के इस उजाड़ किनारे पर खड़े हुए हैं।"

उस नौजवान ने फिर कहा — "छोटी ईल के लिये, क्या हम एक बढ़िया महल में रह सकते हैं जिसमें दो सेब के पेड़ लगे हों। एक सेब के पेड़ पर सोने के सेब लगे हों और दूसरे पेड़ पर चॉदी के सेब लगे हों। हमारे पास बहुत सारे दास दासियॉ हों, रसोइये हों और वह सब कुछ हो जो एक महल में होना चाहिये।"

तुरन्त ही वहॉ सब कुछ आ गया – महल, सेब के पेड़, रसोइये, दास, दासियॉ, आदि आदि।

कुछ दिन बाद उस आधे नौजवान ने जो अब आधा नहीं रह गया था बल्कि एक सुन्दर और पूरा नौजवान बन गया था सब राजाओं और कुलीन लोगों को एक दावत का न्यौता भेजा। इसमें उसकी पत्नी के पिता भी शामिल थे।

जब सब लोग उसके घर आये तो उस नौजवान ने उन सबका अपने दरवाजे पर स्वागत किया और कहा — "मैं आप सबको चेतावनी देता हूॅ कि कोई भी इन सोने और चॉदी के सेबों को न छुए। अगर आप लोग इनको छुऐंगे भी तो फिर भगवान ही आपकी रक्षा करे।"

वे सब बैठ गये और खाने पीने लगे। आधे नौजवान ने चुपके से कहा — "छोटी ईल के लिये, एक सोने का और एक चॉदी का सेब मेरे ससुर जी की जेब में चला जाये।"

ऐसा ही हुआ। एक सोने का और एक चॉदी का सेब उस नौजवान के ससुर की जेब में चला गया।

जब सबने खाना खा लिया तो वह अपने सब मेहमानों को अपने बागीचे में घुमाने के लिये ले गया तो वहॉ पाया कि उसके दो सेब गायब हैं। उस नौजवान ने पूछा — "अरे मेरे दो सेब गायब हैं एक सोने का और एक चॉदी का। किसने लिये हैं मेरे सेब?"

सब बोले "मैंने नहीं लिये", "मैंने नहीं लिये"।

सबकी तलाशी ली गयी पर किसी के पास भी वे सेब नहीं निकले। आधा नौजवान बोला — "मैंने आप सबको पहले ही कहा था कि इन सेबों को छूना नहीं पर अब मैं सब राजाओं की तलाशी लेने के लिये मजबूर हूॅ।"

सो वह भीड़ में खड़े हर राजा रानी की तलाशी लेता चल दिया। आखीर में वह अपनी पत्नी के पिता के पास आया और उनकी दोनों जेबों में उसने दो सेब पाये।

वह बोला — "किसी और की तो सेबों को छूने की हिम्मत भी नहीं हुई और आपने दो सेब चुरा लिये? आपको मुझे इन दोनों सेबों का हिसाब देना पड़ेगा।"

राजा ने उसको समझाने की कोशिश करते हुए कहा — "पर मैं इन सेबों के बारे में कुछ भी नहीं जानता। मैंने इनको नहीं चुराया। मैंने तो इनको छुआ भी नहीं। मैं कसम खाता हूॅ।"

आधा नौजवान बोला — "पर सारे सबूत तो आपके खिलाफ हैं फिर भी आप कह रहे हैं कि आप बेकुसूर हैं?"

"हॉ मैं यह इसलिये कह रहा हूॅ क्योंकि मैं बेकुसूर हूॅ।"

"ठीक। जैसे आप बेकुसूर हैं वैसे ही आपकी बेटी भी तो बेकुसूर हो सकती थी। पर जो बर्ताव आपने उसके साथ किया अगर वैसा ही बर्ताव मैं आपके साथ करूँ तो शायद इसमें कोई अन्याय नहीं होगा।"

उसी समय उसकी पत्नी भी आ गयी और बोली — "अब ऐसा कुछ मत कहना या करना कि मेरे पिता को मेरी वजह से कुछ सहना पड़े। वह अगर मेरे लिये बेरहम थे भी फिर भी वह मेरे पिता हैं और मैं तुमसे उनके ऊपर दया करने की भीख माँगती हूँ।"

आधे नौजवान ने दया कर के राजा को माफ कर दिया।

राजा अपनी बेटी को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश था जिसको उसने मरा समझ लिया था और साथ में यह जान कर भी बहुत खुश था कि वह बेकुसूर थी।

राजा उन तीनों को फिर अपने घर ले गया। वहाँ वे सब खुशी खुशी रहने लगे। जब तक वे जिये तब तक सब आपस में हिल मिल कर रहे।

9 पोम और पील[34]

यह लोक कथा यूरोप के इटली देश की है जिसमें एक सेब से दो लड़के पैदा होते हैं – एक उसके छिलके से दूसरा उसके गूदे से। तो लो पढ़ो यह लोक कथा सेब से पैदा हुए दो लड़कों की।

एक बार की बात है कि किसी समय में एक बहुत ही भले पति पत्नी रहते थे। उनके कोई बच्चा नहीं था सो उनको एक बेटे की बहुत इच्छा थी।

एक दिन पति कहीं बाहर गया हुआ था कि रास्ते में उसको एक जादूगर मिला। उसने उस जादूगर से कहा — "जादूगर साहब, मुझे एक बेटा चाहिये। मैं एक बेटा पाने के लिये क्या करूँ?"

जादूगर ने उसको एक सेब दिया और कहा — "लो यह सेब लो और इसको अपनी पत्नी को खिला देना और नौ महीने बाद उसको एक बहुत ही अच्छा बेटा हो जायेगा।"

पति उस सेब को ले कर घर वापस आ गया। वह सेब उसने अपनी पत्नी को दे कर कहा — "लो यह सेब खा लो। यह सेब मुझे एक जादूगर ने दिया है और कहा है कि इसको खा कर तुम्हारे एक बेटा हो जायेगा।"

---

[34] Pom and Peel – a folktale from Venice, Italy, Europe. Adapted from the book: "Italian Folktales" by Italo Calvino. 1956. Translated by George Martin in 1980.

उसकी पत्नी तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गयी। उसने तुरन्त अपनी दासी को बुलाया और उस सेब को छील कर लाने के लिये कहा।

दासी वह सेब छील कर ले आयी। छिला हुआ सेब तो उसने अपनी मालकिन को दे दिया पर उसके छिलके उसने अपने पास रख लिये और उनको उसने खुद खा लिया।

पत्नी को नौ महीने बाद एक बेटा हुआ और उसी दिन उस दासी को भी एक बेटा हुआ। पत्नी का बेटा सफेद रंग का था जैसा कि सेब के गूदे का रंग होता है और दासी का बेटा लाल रंग का था जैसा कि सेब के छिलके का रंग होता है।

पत्नी के बेटे का नाम था पोम और दासी के बेटे का नाम था पील। दोनों बच्चे बड़े होते गये। दोनों बच्चे एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे और भाइयों की तरह से रहते थे।

एक बार वे दोनों बाहर घूम रहे थे तो उन्होंने सुना कि एक जादूगर की बेटी है जो सूरज की तरह चमकीली है पर किसी ने उसको देखा नहीं था क्योंकि वह अपने घर से कभी बाहर ही नहीं निकलती थी। यहॉ तक कि वह कभी खिड़की में से भी नहीं झॉकती थी।

पोम और पील के पास एक तॉबे का घोड़ा था जो अन्दर से खोखला था। एक दिन वे दोनों उसमें वायलिन और बिगुल ले कर बैठ गये और क्योंकि वे उस घोड़े को

उसके पहियों को अन्दर से घुमा कर चला सकते थे सो वे उस घोड़े में बैठ कर अपनी वायलिन और बिगुल बजाते हुए उस घोड़े को उसके पहियों को अन्दर से घुमाते हुए चला कर जादूगर के महल की तरफ चल दिये।

जब वे जादूगर के महल के पास पहुँचे तो जादूगर ने बाहर देखा तो उसको एक बहुत ही बढ़िया तॉबे का घोड़ा दिखायी दिया जिसमें से संगीत निकल रहा था।

वह उस घोड़े को अन्दर ले आया और उस आश्चर्यजनक चीज़ दिखाने के लिये अपनी बेटी को अन्दर से बाहर बुलाया। उस संगीत वाले घोड़े को देख कर उसकी बेटी भी बहुत खुश हुई।

पर जैसे ही वह उस घोड़े के साथ अकेली रह गयी पोम और पील दोनों उस घोड़े में से बाहर निकल आये। उनको देख कर वह लड़की डर गयी।

उन्होंने उससे कहा — "तुम डरो नहीं। हमने सुना था कि तुम बहुत सुन्दर हो तो बस हम तो तुमको केवल देखना चाहते थे सो यहॉ इस तरीके से हमने तुम्हें देख लिया।

अब अगर तुम यह चाहती हो कि हम लोग यहॉ से चले जायें तो हम चले जायेंगे पर अगर तुमको हमारा संगीत पसन्द हो और तुम चाहती हो कि हम तुम्हारे लिये वह संगीत बजाते रहें तो हम वह संगीत बजाते रहेंगे। फिर किसी के बिना जाने कि हम यहॉ कभी आये भी थे हम चले जायेंगे।"

लड़की को उनका संगीत अच्छा लगा तो वे वहॉ रुक गये और अपना संगीत उसको सुनाते रहे और फिर कुछ देर बाद तो वह उनको खुद ही जाने नहीं देना चाहती थी।

तो पोम बोला — "अगर तुम हमको यहॉ से नहीं जाने देना चाहतीं तो फिर चलो हमारे साथ। मैं तुमसे शादी करना चाहता हूँ।"

वह लड़की तैयार हो गयी। वे तीनों उस घोड़े के पेट में छिप गये और वह घोड़ा फिर अपने पहियों पर चलने लगा। वे तीनों वहॉ से चल कर रात काटने के लिये शाम को आ कर एक सराय में ठहर गये।

जैसे ही वे लोग वहॉ से गये वह जादूगर घर लौटा और अपनी बेटी को आवाज लगायी पर कोई नहीं बोला। उसको उसने इधर उधर भी ढूँढा पर जब उसको उसके महल में नहीं पाया तो अपने चौकीदारों से पूछा तो उन्होंने बताया कि उन्होंने तो उसको महल से बाहर जाते नहीं देखा।

तब उस जादूगर को लगा कि उसके साथ चाल खेली गयी है। यह सोच कर वह बहुत गुस्सा हो गया। वह अपने महल के छज्जे पर गया और अपनी बेटी को तीन शाप दिये।

"उसको तीन घोड़े मिलेंगे, एक सफेद, एक लाल और एक काला। वे सब घोड़े प्यारे होंगे जैसे कि उसने अभी एक घोड़े से

प्यार किया। वह सफेद घोड़े पर चढ़ेगी और यह सफेद घोड़ा उसका किया हुआ सब कुछ बेकार कर देगा।

फिर उसको तीन सुन्दर छोटे छोटे कुत्ते मिलेंगे, एक सफेद, एक लाल और एक काला। वह काले कुत्ते को पसन्द करेगी जैसे कि वह करती है और वह काला कुत्ता भी उसका किया हुआ सब कुछ बेकार कर देगा।

फिर जब वह रात को सोने के लिये अपने बिस्तर पर जायेगी तो उसके कमरे में एक बहुत बड़ा सॉप आयेगा। वह खिड़की के रास्ते से आयेगा और उसको काट कर मार देगा।"

जब वह जादूगर ये तीन शाप अपने छज्जे पर से चिल्ला रहा था तो तीन बूढ़ी परियॉ नीचे सड़क पर से गुजर रहीं थी। उन्होंने ये शाप सुने और वे ये शाप सुनती हुई चलती गयीं और चलती गयीं।

अपनी लम्बी यात्रा के बाद शाम को थक कर वे परियॉ भी इत्तफाक से उसी सराय में रुकीं जिसमें पोम, पील और जादूगर की वह बेटी रुके हुए थे।

जैसे ही वे अन्दर घुसीं तो एक परी बोली — "ज़रा उस जादूगर की बेटी को देखना। अगर उसको अपने पिता के तीनों शापों का पता चल जाये तो वह तो बेचारी तो ठीक से सो भी नहीं सकेगी।"

उसी सराय में एक बैन्च पर पोम, पील और जादूगर की बेटी भी सो रहे थे। पोम और जादूगर की बेटी तो सो गये थे पर पील को अभी नींद नहीं आयी थी।

पील इतना अक्लमन्द था कि वह एक ऑख खोल कर सोता था इसी लिये उसको पता रहता था कि उसके चारों तरफ क्या हो रहा है और इसी लिये यह परी भी क्या कह रही थी यह सब भी उसने सुन लिया था।

परी आगे बोली — "अगर उस जादूगर की यह इच्छा है कि उसकी बेटी को तीन घोड़े मिलें – सफेद, लाल और काला और वह सफेद घोड़े पर बैठे जो उसके सारे किये कराये को बेकार कर देगा तो ऐसा ही होगा।"

तो दूसरी परी बोली — "पर अगर कोई दूर का देखने वाला आदमी यहॉ मौजूद हो और वह उस सफेद घोड़े का सिर तुरन्त ही काट दे तो उस लड़की को कुछ नहीं होगा।"

इस पर तीसरी परी बोली — "और जो भी इस बात को अपने मुॅह से निकालेगा वह पत्थर बन जायेगा।"

इसके बाद पहली परी फिर बोली — "इसके बाद जादूगर की इच्छा है कि उसकी बेटी को तीन छोटे छोटे सुन्दर कुत्ते मिलें और वह उन कुत्तों में से उसी कुत्ते को चुने जिसको वह जादूगर उससे चुनवायेगा यानी काले कुत्ते को चुने और वह उसके किये कराये को बेकार कर देगा तो ऐसा ही होगा।"

तो दूसरी परी बोली — "पर अगर कोई दूर देखने वाला आदमी यहॉ मौजूद हो तो वह उस काले कुत्ते का सिर काट देगा और फिर उसको कुछ नहीं होगा।"

तीसरी परी बाली — "और अगर इसके बारे में वह किसी से कुछ भी बोला तो वह पत्थर का बन जायेगा।"

पहली परी फिर बोली — "उसकी तीसरी और आखिरी इच्छा यह है कि जब वह रात को अपने बिस्तर पर सोने जाये तो उसकी खिड़की से एक बहुत बड़ा सॉप आयेगा और उसको मार डालेगा। तो यह भी हो कर ही रहेगा।"

तो दूसरी परी फिर बोली — "पर अगर कोई दूर देखने वाला आदमी यहॉ मौजूद हो तो वह उस सॉप का सिर काट देगा और फिर उसे कुछ नहीं होगा।"

तीसरी परी बाली — "और अगर इसके बारे में वह एक शब्द भी किसी को बतायेगा तो वह पत्थर का बन जायेगा।"

इस तरह पील को तीनों भयानक भेदों का पता चल गया जिनको अगर वह ठीक से बर्तता तो जादूगर की बेटी की जान बचा सकता था और अगर किसी और को बताता तो वह खुद पत्थर का बन जाता।

अगले दिन पोम, पील और वह जादूगर की बेटी तीनों वह सराय छोड़ कर आगे चले जहॉ पोम का पिता उन लोगों के लिये

तीन घोड़े लिये इन्तजार कर रहा था – एक सफेद, एक काला और एक लाल।

जादूगर की बेटी तुरन्त ही कूद कर सफेद घोड़े पर बैठ गयी पर पील भी तेज था। उसने भी तुरन्त ही उस घोड़े का सिर काट दिया।

पोम बोला — "यह तुमने क्या किया पील? क्या तुम्हारा दिमाग खराब हो गया है जो तुमने उसे मार डाला? वह घोड़ा तो मुझको बहुत ही प्यारा था।"

पील बोला —"मुझे अफसोस है कि मैंने तुम्हारा वह प्यारा घोड़ा मार दिया पर यह सब मैं तुमको अभी नहीं बता सकता।"

जादूगर की बेटी बोली — "पोम, इस पील का दिल तो बहुत ही खराब है। मैं अब इसके साथ नहीं जाऊँगी।"

पर पील ने यह मान लिया कि उसने पागलपन में उस घोड़े को मार डाला था और उसने इस बात के लिये जादूगर की बेटी से माफी भी माँग ली। जादूगर की बेटी ने उसको माफ कर दिया।

पोम के पिता उन सबको ले कर अपने घर पहुँचे तो वहाँ तीन छोटे छोटे सुन्दर कुत्ते उनका स्वागत करने आये – एक सफेद, एक काला और एक लाल।

जादूगर की बेटी तुरन्त ही काले छोटे कुत्ते को उठाने के लिये झुकी कि पील ने अपनी तलवार से तुरन्त ही उस काले कुत्ते का सिर काट दिया।

जादूगर की बेटी बड़ी ज़ोर से चिल्लायी — "तुम तो बहुत ही पागल और बेरहम आदमी हो पील। दूर हो जाओ मेरी नजरों से। तुमने पहले मेरा घोड़ा मार दिया और अब यह प्यारा सा छोटा सा कुत्ता भी मार दिया।"

उसी समय पोम के माता पिता भी बाहर निकल आये। उन्होंने खुशी खुशी अपने बेटे और बहू का स्वागत किया और बहू को समझाया कि वह एक बार पील को फिर से माफ कर दे।

पर शाम को खाने के समय जबकि सब लोग बहुत खुश थे पील कुछ उदास और अकेला सा बैठा था। कोई उसको उकसा कर अपने साथ बातें करने पर मजबूर भी नहीं कर पा रहा था।

लोगों ने उससे पूछने की कोशिश भी की कि वह उदास सा क्यों था पर उसने सबको यह कह कर टाल दिया था कि कोई खास बात नहीं थी बस वह ज़रा थका हुआ था।

वह दावत से पहले ही यह कह कर उठ कर वहाँ से चला गया कि अपनी थकान की वजह से उसको नींद आ रही थी और वह सोने जा रहा था। पर वह अपने कमरे की बजाय पोम के सोने के कमरे में जा कर उसके पलंग के नीचे छिप गया।

जब पोम और जादूगर की बेटी सोने के लिये अपने कमरे में आये और अपने पलंग पर लेटे तो पील पलंग के नीचे से उनके कमरे की खिड़की पर निगाह जमाये हुए था।

जब पोम और जादूगर की बेटी गहरी नींद सो गये तो पील ने उस कमरे की खिड़की का शीशा टूटने की आवाज सुनी। उसकी ऑखें तो खिड़की की तरफ ही लगी थीं।

उसने देखा कि बहुत बड़ा सॉप उस खिड़की से हो कर कमरे के अन्दर आने की कोशिश रहा था। पील तुरन्त ही पलंग के नीचे से बाहर निकला और अपनी तलवार से उसका सिर काट दिया।

इस शोर से जादूगर की बेटी की ऑख खुल गयी। उस समय उसको वह बड़ा सॉप तो दिखायी नहीं दिया क्योंकि वह तो गायब हो गया था बस केवल पील ही अपने हाथ में नंगी तलवार लिये वहॉ खड़ा दिखायी दिया।

उसको इस तरीके से खड़ा देख कर वह ज़ोर से चिल्लायी — "बचाओ बचाओ। हत्या हत्या। यह पील हमको मारना चाहता है। मैंने उसको दो बार तो माफ कर दिया पर अबकी बार मैं उसको माफ नहीं कर सकती। इस बार तो इस जुर्म के लिये उसको मरना ही पड़ेगा।"

यह सुन कर सब जाग गये और पोम के सोने के कमरे की तरफ भागे। पील को पकड़ कर जेल भेज दिया गया और तीन दिन बाद उसको फॉसी लगाने का दिन निश्चित कर दिया गया।

यह सोच कर कि अब चाहे वह यह भेद किसी को बताये या न बताये उसे तो मरना ही है सो उसने मरने से पहले पोम की पत्नी को

तीन बातें बताने की इजाज़त माँगी। उसको इजाज़त दे दी गयी। पोम की पत्नी उससे मिलने के लिये जेल में आयी।

पील ने उससे कहा — "तुम्हें याद है जब हम तुम्हारे पिता के घर से भाग कर पहली बार एक सराय में रुके थे?"

"हाँ हाँ बिल्कुल याद है।"

"उस समय तुम और तुम्हारा पति तो सो रहे थे पर मुझे नींद नहीं आ रही थी। मैं उस समय जागा हुआ था। उस समय वहाँ तीन परियाँ आयीं और उन्होंने आपस में बात की कि तुम्हारे जादूगर पिता ने तुमको तीन शाप दिये।

पहला शाप तो यह कि तुमको तीन घोड़े मिलेंगे – सफेद, लाल और काला। पर तुम सफेद घोड़े पर चढ़ोगी जो तुम्हारा सब कुछ खत्म कर देगा। पर अगर कोई सफेद घोड़े का गला काट देगा तो तुम बच जाओगी। और जो भी यह बात किसी और से कहेगा तो वह पत्थर का हो जायेगा।"

जैसे ही पील ने अपनी यह बात खत्म की उस बेचारे के पैर और टाँगें संगमरमर की हो गयीं। जादूगर की बेटी समझ गयी। वह रुआँसी हो कर बोली — "पील, बस इतना काफी है और आगे कुछ मत बोलना।"

पर वह आगे बोलता ही गया — "मुझे तो मरना ही है चाहे मैं बोलूँ या न बोलूँ इसलिये मैं बोलने के बाद मरना ज़्यादा पसन्द करूँगा।

उन तीनों परियों ने यह भी कहा कि जादूगर का अपनी बेटी को दूसरा शाप यह था कि फिर उसको तीन छोटे छोटे सुन्दर कुत्ते मिलेंगे – सफेद, लाल और काला।

पर वह काले कुत्ते को अपनी गोद में उठायेगी जो उसका सब कुछ खत्म कर देगा। पर अगर कोई उस काले कुत्ते को मार देगा तो वह बच जायेगी। और जो भी यह बात किसी और से कहेगा वह पत्थर का हो जायेगा।"

जब पील ने कुत्ते वाला शाप पोम की पत्नी को बताया तो उसका शरीर उसकी गर्दन तक संगमरमर का हो गया। जादूगर की बेटी यह सब सुन कर रो पड़ी।

वह रोते रोते बोली — "पील, मेहरबानी कर के मुझे माफ कर दो। मैं समझ गयी। अब कुछ और मत कहो।"

पर क्योंकि अब पील का गला पत्थर का हो चुका था और उसका जबड़ा भी पत्थर का हो रहा था उसकी आवाज भर्रा रही थी।

उसी भर्रायी हुई आवाज में उसने कहा — "और जो कोई इस बात को अपने मुँह से कहेगा वह पत्थर का हो जायेगा।" और यह कहने के बाद तो वह सिर से पैर तक संगमरमर की मूर्ति ही बन गया।

पील की पत्नी बहुत ज़ोर से रो पड़ी और रो रो कर कहने लगी — "आह यह मैंने क्या किया। मैंने एक ऐसे वफादार आदमी को मार दिया जिसने मेरी जान बचायी।"

फिर कुछ सोच कर उसने अपने ऑसू पोंछे और बोली अगर इस आदमी को कोई फिर से ज़िन्दा कर सकता है तो वह हैं मेरे पिता जी खुद।

सो उसने अपने पिता को एक चिट्ठी लिखी — "प्रिय पिता जी, आप मुझे माफ कर दें और मेहरबानी कर के तुरन्त ही यहॉ आ जायें।"

वह जादूगर अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था सो उसकी चिट्ठी मिलते ही वह अपनी बेटी के पास दौड़ा चला आया।

उसकी बेटी ने उसे चूमा और बोली — "पिता जी, मुझे आपसे एक सहायता चाहिये। ज़रा इस बेचारे नौजवान को देखिये। आपके तीन शापों से मेरी रक्षा कर के मेरी जान बचाने के बदले में यह बेचारा सारा का सारा पत्थर का हो गया है। मेहरबानी कर के आप इसको ज़िन्दा कर दीजिये।"

जादूगर बोला — "बेटी तुम्हारे प्यार की खातिर मैं यह भी करूॅगा।" उसने अपनी जेब से बालसम[35] के मरहम की एक शीशी निकाली

[35] Balsam (also called Turpentine) is a kind of sweet smelling sap of certain trees and shrubs used for medicinal purposes. It has flowers also. See the picture of its flower above.

और पील के सारे शरीर पर चुपड़ दी। उस मरहम के लगाते ही पील तुरन्त ही ज़िन्दा हो गया।

इस तरह फिर उसे फॉसी के फन्दे की तरफ ले जाने की बजाय वे लोग उसको एक गाड़ी में बिठा कर गाते बजाते और "पील जिन्दाबाद" के नारे लगाते हुए घर ले गये।

इस तरह पील ने जादूगर की बेटी की जान बचायी और जादूगर की बेटी ने पील की जान बचायी।

10 लोकी और इडूना[36]

सेब की यह दंत कथा यूरोप महाद्वीप के नौर्स देशों की दंत कथाओं से ली गयी है। लोकी और इडूना नौर्स देशों के देवता और देवी हैं। नौर्स देश यूरोप महाद्वीप के सुदूर उत्तर में स्थित पॉच देश हैं – डेनमार्क फिनलैंड आइसलैंड नौर्वे और स्वीडन। ये पॉच देश मिल कर नौर्स या स्केन्डिनेवियन या फिर नौर्डिक देश कहलाते हैं।

लोकी इडूना[37] और उसके सेबों दोनों की चोरी के लिये जिम्मेदार है। लोकी थोर के साथ कई बार बाहर घूमने के लिये जोटुनहीमर जाया करता था। वह थोर की बहुत सारी शर्मनाक बातों में भी उसका साथ देता था जैसे कि जब थोर फ्रेया का रूप रखता है उस समय लोकी उसकी आया बन जाता है।

यह बहुत पुरानी बात है जब नौर्वे[38] के देवता लोग आसगार्ड[39] की जमीन पर रहते थे। हवा उनके शानदार महलों के कमरों से हो कर बहती थी और उनकी कहानी सुना करती थी।

---

[36] Iduna and the Magic Apples – a mythological tale from Norway, Europe. Adapted from the book : "Iduna and the Magic Apples". by Marianna Meyer. 1-story picture book.

[37] One of the goddesses is Iduna in Nordic mythology. Iduna is an apple-bearing goddess who owns a garden of apples which keep a person always young and immortal. It is believed that Odin became immortal only by eating her apples. Her husband is the Skaldic god Bragi or Braggi.

[38] Norway – a far northern country of Europe continent and one Nordic country among the five Nordic countries – Denmark, Finland, Iceland, Norway and Sweden.

[39] Asgard – pronounced as Aasgaard, a place of gods' palaces connected to the earth with a rainbow bridge named Bifrost

हवा उस समय गर्मी की ठंडी हवा की तरह जवान थी और वह जंगली बागीचों से हो कर उन हरी हरी घाटियों में बहती थी जहॉ केवल देवता घूमा करते थे।

हालॉकि ऐसे समय को बीते बहुत दिन बीत गये पर हवा को उन देवताओं की कहानियॉ अभी भी याद हैं। अगर तुम कभी ध्यान से सुनो तो तुम भी इडूना[40] और उसके जादू के सेबों की कहानी उस हवा से फुसफुसाते हुए सुन सकते हो।

वह हवा तुमको बतायेगी कि किस तरह इडूना के जादू के सेबों के खजाने ने ओडिन देवता[41] को और उसके भाई लोकी[42] को और दूसरे देवताओं को भी बूढ़ा होने से रोके रखा।

पर नीच राक्षस थियासी[43] इन देवताओं से बहुत जलता था सो उसने एक बार इन देवताओं को मारने की सोची। एक बार ...

आसगार्ड के सारे बागीचों में से कोई भी बागीचा इडूना के बागीचे से ज्यादा सुन्दर नहीं था। बड़ा देवता ओडिन और दूसरे देवता उसको "सदाबहार बागीचे"[44] के नाम से पुकारते थे।

क्योंकि जिस समय से इडूना उस बागीचे में घुसी थी उसकी कोई भी चीज़ मुरझाई नहीं थी और उसकी कोई भी चीज़ मरी नहीं थी।

[40] Iduna – a goddess
[41] Odin god
[42] Gods – Odin and his half-brother Loki – otherwise Loki is the trickster of Scandinavian folktales
[43] Thiassi is the Demon
[44] Evergreen

नीले, जामुनी, गुलाबी, पीले, पीले गुलाबी, और बहुत सफेद सभी रंगों के फूल वहॉ बहुतायत से होते थे और चमक में एक दूसरे से होड़ करते रहते थे।

पेड़ों की एक ही शाख पर सारे साल चमकीले फूल और मीठे रसीले फल एक साथ ही लगते थे। वहॉ की घास भी बहुत चमकीली, कोमल और हरी थी।

हवा उस बागीचे में बहुत ही धीमी बहती थी और ताजा नये नये फूलों से फुसफुसाती सी चलती थी –

जब मैं बहती हूँ तो नाचो अपना सिर इधर उधर करो
तुम कभी नहीं थकोगे क्योंकि इडूना तुम्हारी देखभाल करती है

हवा का यह गाना सुन कर चिड़ियें भी उस गाने को गाने लगतीं और उसे गाते हुए सारे बागीचे में घूमती रहतीं।

इस शानदार बागीचे के लिये इडूना एक बहुत अच्छी रानी थी। उसके मीठे स्वभाव और सुन्दरता की वजह से जंगली हंस उसकी गोद में अपना सिर रखने पर मजबूर हो जाते। चिड़ियें भी उसके लिये हमेशा अपना सबसे मीठा गाना गातीं। असल में सारे जंगली जानवर उसको बहुत प्यार करते।

यहॉ तक कि जब वह झील के किनारे घूमती तो उसके पानी में पड़ी हुई मछलियॉ भी उसी की हो जातीं। वे किनारे पर आ जातीं और उसके चेहरे को प्यार से देखती रहतीं।

इडूना सारा समय बागीचे में ही रहती थी। वह कभी भी बागीचे से बाहर नहीं जाती थी। वही उसका घर था। जब तक वह उस बागीचे की दीवारों के अन्दर रहती तो उसको खुद को या जिसको भी वह प्यार करती थी उसको भी कोई नुकसान नहीं पहुँच सकता था।

पर अगर उसको वह बागीचा छोड़ना पड़ता तो क्या होता? शायद बहुत सारी चीज़ें बदल जातीं।

यह छोटा सा स्वर्ग बहुत ही खुशी की जगह थी। ओडिन और दूसरे देवता यहाँ अक्सर आते रहते थे। वे इडूना की दया और उसके हॅस के बात करने के तरीके से बहुत खुश थे।

लेकिन उनके वहाँ आने की एक और वजह भी थी। इडूना के पास एक ऐसा खास खजाना था जो उनको वहाँ बार बार ले आता था – और वह खजाना था जादू के सेबों से भरी उसकी एक सोने की सन्दूकची।

उस सन्दूकची के सेब को अगर कोई खा लेता था तो वह हमेशा के लिये जवान रहता था।

वह सचमुच में ही बहुत ही कीमती फल था जो देवताओं को अमर रखता था। ओडिन इन सेबों की कीमत को जानता था इस लिये वह जब भी किसी सफर पर जाता था तो वह वहाँ से बिना कुछ सेब अपने साथ लिये आगे नहीं बढ़ता था।

आज भी वह अपने सौतेले भाई लोकी के साथ इडूना से मिलने आया था। आज वे लोग एक साधारण किसान का रूप रख कर पैदल ही दुनियॉ को देखने के लिये जा रहे थे ताकि उनको कोई पहचान न सके।

इडूना ने जितने भी जादू के सेब उसके पास थे वे सारे उनको दे दिये थे। पर जैसे ही उसने अपनी वह सन्दूकची खाली की वह अपने आप ही फिर से अमर रखने वाले सेबों से भर गयी थी।

शाम को इडूना ने अपने दोस्तों को विदा कहा और नदी किनारे की तरफ चली गयी। वहॉ जा कर वह बैठ गयी और नदी के पानी में पड़ती आसमान की परछॉई देखती रही। डूबते सूरज के समय में पानी में बादलों की परछॉई गुलाबी से लाल होती जा रही थी।

तभी अचानक एक साया पानी के ऊपर पड़ा। वह साया बहुत बड़ा और काला था जिसके पंख चारों तरफ को फैले हुए थे।

इडूना ने ऊपर देखा तो डर गयी। एक बहुत बड़ा चिड़ा जिसका बड़ा नीच सा आदमी का चेहरा था उसके ऊपर मॅडरा रहा था।

उसने उसकी तरफ से अपनी नजर हटानी चाही और वहॉ से भागने की कोशिश की पर उस चिड़े की चुभती हुई नजरें बहुत तेज़ थीं। इडूना तो हिल भी न सकी।

पर तभी अचानक वह चिड़ा ऊपर को उड़ा और अपने तेज़ पंजों को सिकोड़ता हुआ ऊपर की तरफ उड़ गया। इडूना के बागीचे ने इडूना को बचा लिया था।

वह बड़ा चिड़ा उसको पकड़ना चाहता था पर वह वहॉ उसको पकड़ नहीं पाया था सो अब उसको इडूना को पकड़ने का कोई दूसरा रास्ता निकालना था। जल्दी ही वह बड़ा चिड़ा लाल बादलों में एक बिन्दु के बराबर दिखायी देने लगा।

जैसे ही वह चिड़ा वहॉ से गायब हुआ उसके कुछ काले पंख नीचे पानी में गिर गये और तैरने लगे और फिर वे पंख काले कीड़ों में बदल गये। उन कीड़ों के पंख नुकीले थे और उनके आगे के बाल जहरीले थे।

अचानक उन कीड़ों ने इडूना को चारों तरफ से घेर लिया। उस ने उनको हटाने की कोशिश भी की पर उनमें से एक उसकी पोशाक की तह में घुस गया और उसने उसको काट लिया।

उन कीड़ों के झुंड को पता चल गया कि एक कीड़ा अपना काम करने में कामयाब हो गया है सो वे सन्तुष्ट हो कर वहॉ से चले गये।

उस कीड़े के काटने से जो जहर इडूना के शरीर में फैला तो उस जहर से वह बहुत कमजोरी महसूस करने लगी। और बस उसी समय से सब कुछ बिगड़ने लगा।

इडूना के खतरे से बेखबर ओडिन और लोकी अपने सफर पर निकल चुके थे। इन दोनों यात्रियों का यह जोड़ा भी एक अजीब जोड़ा था। हालॉकि वे सौतेले भाई थे पर वे एक दूसरे से बहुत अलग थे।

ओडिन एक बहुत ही ताकतवर राजा था और अपनी ताकत को ठीक से और दया से इस्तेमाल करता था जबकि लोकी बहुत ही मतलबी और शरारती था।

वह अपनी शक्ल इतनी आसानी से बदल सकता था जितनी आसानी से कोई अपनी वफादारी बदलता है। जब भी ओडिन नहीं होता तो वह हमेशा ही कोई न कोई शरारत करने में कामयाब हो जाता।

इस बार उसके पीछे लोकी कोई परेशानी न खड़ी कर दे इसी लिये ओडिन लोकी को अपने साथ ही ले आया था।

पर यह बड़ी बदकिस्मती की बात है कि कोई कितनी भी होशियारी से कोई प्लान बनाये पर जो होना होता है उसको तो होने से कोई नहीं रोक सकता।

उस शाम को बहुत दूर का सफर करने के बाद ओडिन और लोकी दोनों साथियों को जंगल में एक ऐसी जगह मिल गयी जहॉ वे रात को आराम कर सकते थे।

वे भूखे थे सो शाम को खाने के लिये उन्होंने कुछ मॉस भूनने के लिये आग जलायी। जब आग काफी तेज जलने लगी तो ओडिन ने

मॉस को जल्दी से भूनने के लिये जलते हुए कोयलों से उसे ढक दिया।

उसी समय एक वैसा ही चिड़ा जैसा कि इडूना के पास आया था और जिसने उसके शरीर में जहर फैलाया था वहॉ आया और एक ऊॅचे से पेड़ के ऊपर आ कर बैठ गया।

वहॉ वह उस पेड़ की पत्तियों में छिप कर सब कुछ देखता रहा और कोई बुरी चाल सोच सोच कर अपने होठ ऐंठता रहा।

आखिर लोकी बोला — "मुझे तो बहुत भूख लगी है ओडिन। घंटों हो गये हैं इस मॉस को आग में रखे। अब तक तो यह पक कर तैयार हो ही गया होगा।"

ओडिन बोला — "हॉ काफी देर हो गयी है इसको रखे हुए। अब तक तो इसको पक जाना चाहिये। देखो तो ज़रा कि यह खाने लायक हो गया कि नहीं।"

पर जब उन्होंने उसको देखा तो मॉस तो तभी भी कच्चा ही पड़ा था। लोकी परेशान सा पीछे को बैठ कर फिर उसके पकने का इन्तजार करने लगा।

और समय बीत गया। उन्होंने उसको फिर से देखा पर वह तो अभी भी पहले जैसा ही था। और यह मॉस इतना कच्चा था कि खाया नहीं जा सकता था।

ओडिन ने ऑख उठा कर लोकी की तरफ देखा और गुस्से में बोला — "मुझे लगता है कि हम कितनी भी देर क्यों न इन्तजार कर

लें पर यह मॉस नहीं पकने वाला। ऐसा लगता है कि आज की रात जरूर ही कोई काला जादू काम कर रहा है।"

जैसे ही वह यह बोला तो पेड़ के सायों में से बड़े ज़ोर की हॅसी की आवाज़ सुनायी दी। वह हॅसी उस बड़े चिड़े की थी।

वह बड़ा चिड़ा वहीं से बोला — "जब तक तुम अपना यह मॉस मुझे भी नहीं दोगे तब तक मैं यकीन के साथ कह सकता हूॅ कि तुम भी भूखे ही रहोगे।"

ओडिन तुरन्त ही पहचान गया कि यह कोई असली चिड़ा नहीं थी। उसको शक हुआ कि वह थियासी[45] था। क्योंकि वही नीच राक्षस अक्सर शिकारी चिड़े का रूप रख लेता था।

पर ओडिन को अपनी इस बात पर पूरा यकीन नहीं था। इस लिये इस मुसीबत को टालने के लिये वह उस चिड़े की मॉग मानने के लिये राजी हो गया।

जैसे ही वह राजी हुआ वैसे ही वह मॉस भी भुन गया। ओडिन ने उस बड़े चिड़े को इशारा किया कि वह आ कर अपना हिस्सा ले ले।

वह चिड़ा उड़ कर नीचे आया और उसने उस मॉस का सबसे अच्छा हिस्सा ले लिया। अब ओडिन और लोकी के खाने के लिये कुछ भी नहीं बचा था।

[45] Thiassi – a demon

गुस्से में भर कर लोकी ने एक डंडी उठायी और उस चिड़े को उस डंडी से मारा। पर वह चिड़ा उस डंडी को अपने पंजों में ले कर तुरन्त ही ऊपर उड़ गया।

लोकी देखता ही रह गया पर उसके हाथों ने उस डंडी के दूसरे सिरे को कस कर पकड़ रखा था। उसने कितनी भी कोशिश की कि वह डंडी छोड़ दे पर वह डंडी उसके हाथ से छूटी ही नहीं रही थी।

असल में वह चिड़ा वाकई में थियासी ही था। उसने अपने बुरे जादू से लोकी को उस डंडी से बॉधे रखा। थियासी नीचे नीचे उड़ता रहा और लोकी डंडी पकड़े पकड़े जमीन पर जंगलों में होता हुआ घिसटता रहा। पेड़ों और झाड़ियों के बीच से गुजरने की वजह से उसके शरीर पर घाव हो गये और खून भी बह निकला।

लोकी ने उससे दया की भीख मॉगी कि वह उसको छोड़ दे पर थियासी तो आसगार्ड में रहने वाले सब देवताओं का दुश्मन था। वह इडूना को नहीं पकड़ पाया था इसलिये वह लोकी को पकड़ने से बहुत खुश था। क्योंकि इसको पकड़ने में उसका अपना एक प्लान था।

वह बड़ा चिड़ा जब एक बहुत ही खतरनाक पहाड़ियों में से होकर गुजरने वाला था तो वह लोकी से बोला — "मैं तुमको एक शर्त पर छोड़ सकता हूँ।"

लोकी आने वाले खतरे को देख कर चिल्लाया — "कुछ भी, कुछ भी, जो तुम चाहो।"

वह चिड़ा बहुत ज़ोर से हॅसा और बोला — "तुम बड़े ही डरपोक हो लोकी। अगर तुम यह वायदा करो कि तुम मुझे इडूना और उसके जादू वाले सेबों का खजाना मुझे दे दोगे तो मैं तुमको आजाद कर दूँगा।"

लोकी बेचारा क्या करता। उसको तो इस समय अपनी जान की पड़ी थी। वह बिना सोचे समझे कि इसका इडूना पर या देवताओं पर क्या असर पड़ेगा तुरन्त ही इस बात पर राजी हो गया कि वह इडूना और उसका सेबों वाला खजाना उसको दे देगा।

चिड़े ने भी उसको तुरन्त ही छोड़ दिया ओर इस तरह लोकी की जान बच गयी।

लोकी पहला मौका पाते ही इडूना के उस सदाबहार बागीचे में जा पहुँचा। वहॉ उसको इडूना अपने सेबों के पेड़ों के पास अकेली बैठी मिल गयी।

वहॉ बैठी वह कुछ सोच रही थी। वह सोचने में इतनी मग्न थी कि उसने लोकी को देखा ही नहीं जब तक कि वह उसके बिल्कुल ही पास आ कर नहीं बैठ गया।

उसने इडूना को करीब से देखते हुए कहा — "इडूना, ज़रा सोचो तो मैं कहॉ गया था। पर पहले मुझे अपना यह बढ़िया वाला सेब तो दो।"

इडूना ने अपनी सोने की सन्दूकची निकाली और उसमें से एक चमकता हुआ सेब निकाल कर उसको दे दिया। पर लोकी ने उसमें

से एक कौर भी नहीं खाया बल्कि उसको एक हाथ से दूसरे हाथ में उछालता रहा।

तिरछी नजरों से इडूना को देखते हुए वह कुछ गुस्से से में बोला — "असल में मैं यही सोच रहा था कि तुम्हारे सेब उन सेबों के सामने कुछ भी नहीं हैं जो मैंने अभी अभी देखे हैं।"

इडूना यह सुन कर चौंक उठी पर मुस्कुराते हुए बोली — "मुझे यकीन है कि तुमसे जरूर ही कहीं कोई गलती हुई है लोकी। ओडिन जिसने दुनियॉ भर की यात्रा की है वह तो यही कहता है कि इन सेबों के जैसा दूसरा कोई सेब नहीं है।"

लोकी चालाकी से हॅसा तो उसकी हॅसी की आवाज से इडूना घबरा गयी।

लोकी बोला — "लगता है कि ओडिन को कहीं गलती लग गयी है। मैं तुमको यकीन दिलाता हूॅ कि अगर वह भी वह वाले सेब देख लेगा जो मैं अभी अभी देख कर आया हूॅ तो वह भी जल्दी ही अपने राय बदल लेगा।"

लोकी के इन कठोर शब्दों ने इडूना को बहुत तकलीफ पहुॅचायी। वह तुरन्त ही उठ कर खड़ी हो गयी। पर जैसे ही वह खड़ी हुई उसके दिल में बहुत ज़ोर का दर्द उठा।

उसने अपने दिल को अपने हाथ से दबाया और लोकी से बोली — "अच्छा हो अगर हम इस बारे में बात न करें।" और वहॉ से जाने लगी।

लोकी को अपने शब्दों की ताकत मालूम थी। वह बोलता हुआ जल्दी जल्दी उसके पीछे पीछे चला — "ठीक है ठीक है, तुम मत सुनो मेरी। पर तुम पछताओगी जब लोग तुम्हारे इस बागीचे को भूल जायेंगे और सेब लेने के लिये दूसरे नये बागीचे में जाने लगेंगे। मुझे अफसोस है कि तब तक तुमको बहुत देर हो जायेगी।"

इडूना ने एक गहरी साँस ली। शायद उस कीड़े के जहर ने अपना काम करना शुरू कर दिया था। वह इन व्यंग्य भरे शब्दों के बोझ को भी अपने ऊपर से हटाने में बहुत कमजोरी महसूस कर रही थी।

जैसे जैसे उसकी कमजोरी बढ़ती जा रही थी उसका दिमाग भी ठीक से काम नहीं कर पा रहा था।

लोकी साँप की सी तेज़ी से बोला — "मुझे एक बार तो तुमको इस नये बागीचे में ले कर जाना ही चाहिये इडूना। यह बागीचा पास में ही है और वहाँ जा कर तुम अपने आप ही देख लोगी कि मैं जो कह रहा हूँ वह सच है या नहीं।

यह जरूरी नहीं है कि तुम मुझ पर अभी यकीन करो ही करो। हम एक साथ वहाँ जायेंगे और वहाँ के सारे सेब इकट्ठा कर लेंगे। तब तुम बताना कि वे सेब तुम्हारे सेबों से ज़्यादा अच्छे हैं कि नहीं। और अगर तुमको वे सेब अच्छे लगें तो फिर मैं उन सेबों के बीज तुम्हारे बागीचे में बोने में तुम्हारी सहायता करूँगा।

यह बात हम दोनों के बीच में ही रहेगी और मैं कसम खाता हूँ कि कम से कम मैं तो यह बात किसी से भी नहीं कहूँगा।"

और यह कहते कहते लोकी उसके और करीब आ गया और यह कहते हुए उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया — "ओह इडूना, इससे पहले कि हमको देर हो जाये तुमको वे सेब लेने के लिये मेरे साथ अभी वहाँ चलना चाहिये।"

इडूना ने लोकी की आँखों में देखते हुए पूछा — "क्या वह बागीचा पास ही है लोकी? असल में मैं अपना बागीचा नहीं छोड़ना चाहती पर अगर तुम वायदा करो कि तुम जल्दी ही लौट आओगे... तो शायद मैं तुम्हारे साथ जा सकूँ।"

लोकी हँस कर बोला — "बहुत जल्दी इडूना बहुत जल्दी। हम लोग बहुत जल्दी ही वापस आ जायेंगे। अब तुम यह मत कहना कि तुम इस बागीचे को कुछ पलों के लिये भी नहीं छोड़ सकतीं।

मैं तो तुम्हारी भलाई के लिये ही कह रहा हूँ और मुझे यकीन है कि तुम मुझे मना नहीं करोगी।"

हारते हुए इडूना ने अपनी सोने की सन्दूकची उठायी और बोली — "ठीक है पर हमको जल्दी करनी चाहिये।"

इडूना का हाथ कस कर पकड़े हुए लोकी ने बागीचे की सड़क पर दरवाजे की तरफ भागना शुरू किया। उसको इस बात की भी चिन्ता नहीं थी कि उसके पीछे इडूना ठीक से चल भी पा रही थी या नहीं। इडूना की साँस बार बार फूल रही थी।

उस बेचारी के पास तो यह सोचने का समय ही नहीं था कि वह क्या कर रही थी। वह तो बस लोकी के पीछे पीछे चलती जा रही थी। उधर लोकी भी कहीं नहीं रुका जब तक कि वह इडूना के बागीचे के दरवाजे के पास तक नहीं पहुँच गया।

इडूना के बागीचे का दरवाजा सारी दुनियॉ के लिये बन्द रहता था। दरवाजे से बाहर निकलने से पहले इडूना थोड़ा हिचकिचायी और उसने एक बार पीछे हटने की कोशिश भी की पर लोकी उसको बुरी तरह से खींचता हुआ उस दरवाजे के और उस बागीचे के बाहर ओर ले गया।

जैसे ही वह बागीचे से बाहर निकली तो उसने सुना कि उसके बागीचे के सब पेड़ पौधे रो रो कर उससे कह रहे थे — "इडूना, तुम कहॉ जा रही हो। हमको छोड़ कर मत जाओ। वापस आ जाओ इडूना, वापस आ जाओ।"

पर अब तो बहुत देर हो चुकी थी। उसके बाहर निकलते ही दरवाजा एक ज़ोर की आवाज़ के साथ बन्द हो गया और जिन सबको वह प्यार करती थी उन सबसे अलग वह केवल लोकी के साथ अकेली खड़ी रह गयी।

सूरज डूबने वाला था। आगे के रास्ते पर बहुत घास उगी हुई थी और उसके ऊपर साये मॅडरा रहे थे। रात की बर्फीली हवा इडूना के बालों में से हो कर बह रही थी, उसके गालों पर चुभ रही थी और उससे उसको कॅपकॅपी आ रही थी।

इडूना फुसफुसायी — "लोकी हमको जल्दी चलना चाहिये क्योंकि मुझे वापस भी आना है पर लोकी ने इस बात का कोई जवाब नहीं दिया। इस पर उसने लोकी की तरफ देखा तो लोकी ने अपना चेहरा काले आसमान की तरफ कर लिया।

इडूना की निगाह भी लोकी की निगाह के पीछे पीछे ऊपर की तरफ गयी तो वहाँ उसने जो कुछ देखा तो उसको देख कर तो वह डर के मारे चीख ही पड़ी।

उसके ऊपर तो नीच थियासी का चेहरा घूम रहा था। उसके पंख चारों तरफ को खुले हुए थे। जैसे जैसे वह नीचे आता जा रहा था उसका साया इडूना के ऊपर भी फैलता जा रहा था।

इससे पहले कि वह चिल्लाने के लिये साँस भी ले पाती कि थियासी के काले पंजों ने उसे उठा लिया और उसको आसमान में ऊँचा और और ऊँचा ले गया।

लोकी उनको तब तक जाते हुए चुपचाप देखता रहा जब तक वे दोनों उसकी आँखों से ओझल नहीं हो गये।

फिर उसने अपने कन्धे उचकाये और बोला — "मुझे इससे क्या फर्क पड़ता है अगर थियासी इडूना को बन्दी बना कर रख ले। मेरे ऊपर तो किसी को शक भी नहीं होगा।" पर फिर भी अन्दर उसको कहीं कुछ खटकता रहा।

जब वह वहॉ से चला तो वह जमीन पर देखता जा रहा था। उसने इडूना को अपने दिमाग से निकालने की बहुत कोशिश की पर वह उसको निकाल नहीं सका।

आखिर में वह रुक गया और अपने आपसे पूछने लगा — "क्या हो अगर ओडिन ठीक ही कहता हो कि वे इडूना के सेब ही हों जिनकी वजह से हम सब इतने ताकतवर और जवान हों?

बिना इडूना के सेबों के हमको दुख सहने पड़ें और हम लोग बूढ़े हो जायें। हालॉकि यह मुमकिन तो नहीं लगता पर.... ।" यह सोच कर वह डर के मारे कॉप गया।

तभी लोकी ने एक आवाज सुनी तो उसने ऊपर अपनी बेटी और मौत की देवी हीला[46] को देखा।

पर फिर वह वहॉ से चला गया। हीला भी एक पल के लिये रुकी और फिर लोकी की तरफ देखा। उसकी नजर उसके पिता के दिल में डर पैदा करने के लिये कभी फेल नहीं हुई थी।

उसका एक तरफ का चेहरा तो बहुत सुन्दर था पर उस पर मौत का पीलापन छाया हुआ था जबकि उसका दूसरी तरफ का चेहरा केवल हड्डी का था जो बिल्कुल मौत जैसा ही लगता था। लोकी उसको देख कर डर गया था।

देवताओं को बहुत जल्दी ही पता चल गया कि इडूना गायब हो गयी है क्योंकि वह सदाबहार बागीचा तुरन्त ही मुरझाने लगा, उसके

[46] Hela – pronounced as Heelaa. The daughter of Loki and she is the goddess of Death

फूलों की पत्तियॉ नीचे गिरने लगीं, उसके पेड़ों की पत्तियॉ पीली पडने लगीं और बागीचे में उत्तरी ठंडी हवा बह बह कर उनको शाखों से तोड़ तोड़ कर नीचे गिरा रही थी।

ऊपर काले काले बादल छाने लगे और उनसे सूरज भी छिप गया। यह तेज हवा बारिश भी ले आयी जो बहुत जल्दी बरफ में बदल गयी। हर चीज बरफ की सफेद परत में ढक गयी।

लोकी जिधर भी जाता सब तरफ चिन्ता भरी नजरें उसे देखतीं और उससे पूछतीं — "इडूना कहॉ जा सकती है लोकी? और यह कैसे हो सकता है कि इडूना हममें से किसी से भी कुछ भी कहे बिना अपना यह बागीचा छोड़ कर चली गयी? क्या हममें से कोई ऐसा नहीं है जो हमसे ज़्यादा जानता हो?"

धीरे धीरे दिन ब दिन इडूना की कमी का सारे लोगों पर असर पड़ने लगा। चिन्ता की लकीरें झुर्रियों में बदलने लगी थीं।

उन लोगों के बालों की चमक चली गयी थी और जल्दी ही वे सफेद भी होने लगे थे। वे देवता जो हमेशा जवान दिखायी देते थे अब बूढ़े होने लगे थे।

ऐसे समय में लोकी की बेटी हीला ओडिन के महल वल्हला[47] में प्रगट हुई तो ओडिन ने उसको वहॉ से जाने को कहा।

[47] Valhalla – the name of the palace of Odin

पर हीला हॅसी और बोली — "मैं जल्दी ही तुम सबको खा जाने वाली हूॅ। बिना इडूना के सेबों के तुम लोग जवान नहीं रह सकते और इसी लिये तुम लोग अब मौत से भी सुरक्षित नहीं हो।

तुम्हारा समय अब खत्म हो रहा है। मैं चली तो जाऊॅगी पर मैं तुम लोगों के मरने के बाद अपनी जमीन पर तुम्हारे लिये जगह बनाने के लिये ही जाऊॅगी।" यह कह कर वह वहॉ से चली गयी।

उसके जाने के बाद ओडिन का बेटा ब्रैगी[48] बोला — "अगर हम इडूना का पता नहीं लगा सके तो इसके लिये तो हमको अपने आपको ही जिम्मेदार ठहराना चाहिये।

अब तो कई महीने बीत गये है और हममें से कोई भी उसको ढूॅढने के लिये नहीं गया है। बताइये क्या हम लोग इतने कमजोर हैं कि हम उसको ढूॅढने के लिये अपनी ज़िन्दगी दॉव पर नहीं लगा सकते? कम से कम मैं तो इतना कमजोर नहीं हूॅ।"

ओडिन तुरन्त बोला — "ब्रैगी ठीक कह रहा है। वह और मैं दोनों अभी "किस्मत की तीन बहिनों"[49] के पास जाते हैं। वे हमको बतायेंगी कि हम इडूना को कहॉ ढूॅढें।"

ये "किस्मत की तीन बहिनें" भूत वर्तमान और भविष्य सबके बारे में सब कुछ बता सकती थीं पर वे पहेलियों में जवाब देती थीं जिनको केवल ओडिन ही सुलझा सकता था।

---

[48] Bragi – the son of Odin

[49] Three Sisters of Fortune – there were three sisters of Fortune who knew everything ablout past, present and future.

सो वे दोनों उन बहिनों के पास गये। वहॉ जा कर उनको पता चला कि लोकी ने इडूना को चुराने में थियासी की सहायता की थी और अब लोकी ही उसको बचा कर ला सकता था।

यह अच्छा काम कर के अपनी उस बुराई को वह अच्छाई में बदल सकता था क्योंकि उसने ही वह बुराई की थी।

इसके अलावा उन बहिनों ने उनको यह भी बताया कि उस राक्षस के बर्फ के महल तक पहुॅचने के लिये लोकी को फाख्ता के पंख लगा कर उड़ना पड़ेगा।

वहॉ से लौट कर वे लोग लोकी के पास गये और उससे इडूना को वापस लाने के लिये कहा पर लोकी ने उस राक्षस का फिर से सामना करने से मना कर दिया क्योंकि वह उससे बहुत डरता था।

इस पर देवताओं ने उसको जान से मारने की धमकी दी तब कहीं जा कर वह माना।

बड़े बेमन से उसने उन लोगों को अपने कन्धे पर फाख्ता के पंख[50] बॉधने दिये। पंख बॉधते ही वह एक फाख्ता बन गया और आसमान में उड़ कर थियासी के महल की तरफ चल दिया।

[50] These dove feathers belonged to Freya. With these feathers on one could transform oneself in dove bird.

जैसे जैसे लोकी उस महल के पास पहुँच रहा था आसमान काला और और काला होता जा रहा था और हवा भी बहुत ठंडी होती जा रही थी।

आखिर उसको बरफीले पहाड़ दिखायी देने लगे जो थियासी के राज्य को चारों तरफ से घेरे खड़े थे। थियासी का राज्य वाकई केवल बर्फ का था। उसमें कोई चमक नहीं थी क्योंकि वहाँ सूरज ही नहीं चमकता था।

लोकी ने ऐसी जगह पहले कभी नहीं देखी थी। थियासी का सारा महल बर्फ के पहाड़ में से कटा हुआ था। यहीं उसने इडूना को भी कैद कर रखा था।

इस डर से कि एक दिन देवता लोग इडूना को ढूँढ ही लेंगे थियासी ने उसको एक ऐसे कमरे में बन्द कर रखा था जिसमें न तो रोशनी आती थी और न ही ताजा हवा। वह वहाँ अकेली रहती थी और थियासी के अलावा और किसी से भी नहीं मिलती जुलती थी।

थियासी रोज उससे एक बार बस यही सवाल पूछता — "तुम मुझे वह कब दोगी इडूना जो मैं तुमसे माँगूँगा। मुझे वे जादू के सेब चाहिये और तुम मुझे मेरी दुलहिन के रूप में चाहिये। मेरे शब्द याद रखना। जल्दी या देर से तुमको मेरी बात माननी तो पड़ेगी ही।"

इडूना यह सुन कर काँप जाती पर उसकी धमकियों के बावजूद हिम्मत से उसको "नहीं" में ही जवाब देती।

इडूना जानती थी कि थियासी को जादू के सेब देना बहुत खतरनाक है क्योंकि उन सेबों की अच्छी ताकत थियासी के हाथों में पहुँचते ही बुरी ताकत में बदल जायेगी।

वह उन सेबों को जबरदस्ती भी ले सकता था पर जब भी वह उसकी वह सोने की सन्दूकची में से उनको निकालने की कोशिश करता तो उसके हाथ में पहुँचते ही वे सेब छोटे छोटे बीजों में सिकुड़ जाते और फिर वे बीज उसके हाथ से उसी सन्दूकची में ही फिसल कर गिर जाते।

उस सन्दूकची में गिर कर वे उसके कोनों में छिप जाते और वहाँ तब तक छिपे रहते जब तक कि इडूना खुद उनको अपना हाथ डाल कर नहीं निकालती। उसके निकालने पर वे फिर से पके हुए सेब बन जाते।

एक दिन वह राक्षस समुद्र के उस पार गया तो इडूना उसके पहरे से थोड़ी देर के लिये आजाद हुई। वह एक छोटी सी खुली दरार के पास गयी जहाँ अगर वह कान लगा कर सुनती तो वह दूर के समुद्र की आवाज भी सुन सकती थी।

उसने सोचा कि काश वह अपने बागीचे में वापस जा सकती। तभी उसने किसी को अपना नाम पुकारते सुना। उसने उस दरार से झाँक कर देखा तो वहाँ तो लोकी था। वह एक फाख्ता के रूप में था और तेज़ हवा से बचने के लिये उसने अपने पंख फैला रखे थे।

वह चिल्लाया — "जल्दी से अपनी सोने की सन्दूकची उठा लो इडूना।"

इडूना बोली — "वह तो मेरे पास ही है।"

फिर लोकी ने जादू के कुछ शब्द बोले तो इडूना तो एक छोटी सी भूरी चिड़िया में बदल गयी और उसकी सन्दूकची एक छोटे से लौकेट में बदल गयी जो उस चिड़िया के पंखों के नीचे छिप गया।

इडूना उस दरार में से तीर की तरह से बाहर आयी। तेज़ हवा उसके नाजुक पंखों को तोड़े डाल रही थी पर वह उस तेज़ हवा से बराबर बचने की कोशिश कर रही थी।

लोकी बोला — "आओ मेरे पीछे पीछे आ जाओ वरना हम दोनों हमेशा के लिये खो जायेंगे। आसगार्ड देश को यह वाला रास्ता जाता है। चलो इधर से चलेंगे।"

अपने घर और अपने प्यारे बागीचे के बारे में सोच कर इडूना में एक नयी ताकत आ गयी। वह फुसफुसायी — "अब थियासी नहीं जीत पायेगा।" और उसने तेज़ी से उड़ना शुरू कर दिया।

पर वे अभी बहुत दूर नहीं जा पाये थे कि उन्होंने गुस्से में भरी चिल्लाहटें सुनी। ये चिल्लाहटें थियासी राक्षस की थीं जो वापस आ गया था और उसको पता लग गया था कि इडूना बच कर भाग निकली है।

थियासी एक बहुत बड़ी चिड़िया बन गया और उनके पीछे पीछे उड़ने लगा। तीन लम्बे दिन और तीन लम्बी रात तक वह उन दोनों

का पीछा करता रहा। हालॉकि उसने उनसे बाद में उड़ना शुरू किया था फिर भी वह उनके काफी पास तक आ गया था।

जबसे लोकी गया था तबसे देवता वल्हाला[51] की ऊँची मीनार पर नजर रखे हुए थे कि कब वहॉ से कोई इशारा आता है।

चौथी रात को ओडिन की तेज़ ऑखों ने एक फाख्ता को और उसके पीछे एक और छोटी सी चिड़िया को उड़ते देखा और फिर उनके पीछे एक बड़ी सी चिड़िया को आते देखा।

उनके उड़ने की गति को देख कर उसने दुखी हो कर दूसरों से कहा — "वे लोग उससे नहीं बच सकते। हमारे पास आने से पहले ही थियासी इडूना को पकड़ लेगा।"

सो ओडिन ने सबको आग जलाने के लिये कहा। जब तक आग अच्छी तरह से जली वे चिड़ियें पास आ चुकी थीं। अब सब लोगों को बस यही लग रहा था कि इडूना के वहॉ पहुँचने से पहले ही वह बड़ी चिड़िया इडूना को पकड़ लेगी।

पर अचानक वह फाख्ता आग से बचने के लिये ऊपर उड़ी। वह छोटी चिड़िया भी उसके पीछे पीछे उड़ ली।

वे दोनों चिड़ियें तो छोटी और हल्की थीं सो वे काफी ऊपर उड़ गयीं पर वह बड़ी चिड़िया ऊपर उड़ने के लिये काफी भारी थी। वह नहीं उड़ सकी सो आग ने उसके पंख जला दिये और वह आग में गिर पड़ी।

[51] Valhalla is the palace of the dead and Odin

इडूना ने अपनी आखिरी कोशिश की और वह आग से ऊपर उठ कर उड़ती हुई ओडिन के पैरों पर गिर पड़ी। ओडिन ने उसी समय उसे अपने हाथों में उठा लिया।

ओडिन के हाथों में आते ही इडूना अपने असली रूप में आ गयी।

उस दिन इडूना के आने का बहुत बड़ा उत्सव मनाया गया। इडूना की जीत की खुशी में गीत लिखे गये। वल्हला के कमरों में संगीत गूँज उठा।

एक बड़ी सी चमकीली मेज पर बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया गया। इडूना ने अपनी सोने की सन्दूकची खोली और हर देवता को अपना जादू का सेब दिया।

जैसे ही उन्होंने वह सेब खाया उनके शरीरों में एक नयी ताकत दौड़ गयी और वे फिर से ताकतवर और जवान हो गये।

जब दावत खत्म हुई तो इडूना अपने सदाबहार बागीचे में लौट गयी। जैसे ही वह उसके अन्दर घुसी सूरज और ज़्यादा ज़ोर से चमकने लगा और गरम हो गया।

सब जगह वसन्त आ गया और इडूना की गैरहाजिरी में जो कुछ मर सा गया था वह सब फिर से ज़िन्दा हो गया। पेड़ और लम्बे और हरे हो गये। फूलों के झुके हुए सिर उठ गये। हवा धीरे धीरे बहने लगी और चिड़ियें इडूना के लौटने की खुशी में चहचहाने लगीं।

11 एक राजा और सेब[52]

सेब की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के जियोर्जिया देश की लोक कथाओं से ले गयी है।

एक बार की बात है कि या तो था और या फिर बिल्कुल ही नहीं था एक राजा रहा करता था। वह बहुत बूढ़ा हो गया था और उसकी मौत का समय पास आ गया था।

सो उसने अपने बेटे को बुलाया और उससे कहा — "लो बेटा यह सन्दूकची तुम अपने पास रखो। जिस दिन तुम शिकार के लिये पूर्व की तरफ जाओ और बहुत परेशानी में हो तब इसे खोलना।"

यह कह कर राजा मर गया। उसको जिस तरह वह चाहता था उसी तरह से दफ़ना दिया गया। पिता की मौत के बाद राजकुमार बहुत दुखी हो गया और इतना दुखी हो गया कि उसने घर से बाहर ही निकलना बन्द कर दिया।

आखिर राज्य के मन्त्री लोग अपने नये राजा के पास आये और उसको सलाह दी कि उसको शिकार के लिये जाना चाहिये ऐसे घर में बैठे रहने से कैसे काम चलेगा।

[52] The King and the Apple – a folktale from Georgia, Europe.
Taken from the book "Georgian Folk-Tales" by Marjorie Wardrop. Its Hindi translation is available from hindifolktales@gmail.com in e-book form free of charge.

राजा को यह विचार अच्छा लगा और वह शिकार के लिये चल दिया। वे लोग पूर्व की तरफ गये और उन्होंने बहुत सारे शिकार मारे।

जब वे लोग लौट रहे थे तो नौजवान राजा ने सड़क के पास एक मीनार देखी। उसको देख कर उसने यह इच्छा प्रगट की कि वह उसमें जा कर देखे कि उसमें क्या है।

उसने अपने एक मन्त्री से कहा कि वह उसके अन्दर जाये और जा कर देखे कि उसके अन्दर क्या है। उसने राजा का हुक्म माना पर कहा — "मुझे लगता है कि मैं इसमें से तीन दिनों में वापस आ जाऊँगा और अगर मैं न आऊँ तो समझियेगा कि मैं मर गया।"

तीन दिन बीत गये। मन्त्री नहीं लौटा। राजा ने दूसरा मन्त्री भेजा फिर तीसरा मन्त्री भेजा फिर चौथा मन्त्री भेजा पर चारों में से कोई भी मन्त्री वापस लौट कर नहीं आया। तब वह खुद उठा और उसमें अन्दर जाने के लिये तैयार हुआ।

जब वह दरवाजे के पास पहुँचा तो उसने देखा कि दरवाजे के ऊपर लिखा था "तुम घुसोगे तो तुम पछताओगे। और नहीं घुसोगे तो तुम पछताओगे।"

राजा ने सोचा "तो मुझे कुछ न कुछ तो करना ही है। मैं घुसूँ या फिर न घुसूँ। मैं घुस कर भी पछताऊँगा और बिना घुसे भी। तो फिर मैं घुस कर ही क्यों न पछताऊँ।" उसने दरवाजा खोला और उसके अन्दर घुस गया।

लो वहॉ तो बारह आदमी नंगी तलवारें हाथ में लिये खड़े थे। उन्होंने उसका हाथ पकड़ा और उसको बारह कमरों में से निकाल कर ले गये।

जब वह बारहवें कमरे में आया तो उसने वहॉ एक सोने का काउच देखा जिस पर एक आठ नौ साल की उम्र का लड़का लेटा हुआ था। उसकी ऑखें बन्द थीं और वह एक शब्द भी नहीं बोला।

राजा को बताया गया कि वह लड़के से तीन सवाल पूछेगा और अगर वह लड़का उन सवालों को नहीं समझता और उन सब सवालों के जवाब नहीं देता तो तुम्हारा सिर कटवा दिया जायेगा।

यह सुन कर तो राजा बहुत दुखी हो गया कि वह अब क्या करे। पर फिर उसको अपने पिता की दी हुई सन्दूकची का ध्यान आया। उसने सोचा "इससे ज़्यादा मेरी बदकिस्मती क्या होगी कि मुझे मरना पड़ रहा है।"

सो उसने सन्दूकची निकाली और उसे खोला। खोलते ही उसमें से एक सेब निकल कर नीचे गिर पड़ा। गिर कर वह काउच की तरफ लुढ़क गया। राजा ने सोचा "यह मेरी क्या सहायता करेगा।"

वह यह सोच ही रहा था कि सेब बोलने लगा। उसने लड़के को नीचे लिखी हुई कहानी सुनायी —

"एक आदमी अपनी पत्नी और भाई के साथ यात्रा कर रहा था। चलते चलते उनको रात हो गयी। उनके पास खाना भी नहीं

था। सो भाई पास के गॉव में डबल रोटी खरीदने गया। रास्ते में उसको डाकू मिल गये जिन्होंने उसे लूट लिया और उसका सिर काट दिया।

जब आदमी ने देखा कि उसका भाई लौट कर नहीं आया तो वह उसको देखने गया। उसका भी वही हाल हुआ जो उसके भाई का हुआ था। अगले दिन वह दुखी स्त्री उनको देखने गयी। बीच रास्ते में उसने अपने पति और उसके भाई की लाशें पड़ी देखीं जिनका सिर नहीं था।

पास में ही उनके सिर पड़े थे। उनके चारों तरफ खून बिखरा पड़ा था। वह स्त्री बेचारी वहीं बैठ गयी। वह अपने बाल नोचने लगी और उसने बहुत ज़ोर ज़ोर से रोना शुरू कर दिया।

तभी वहॉ एक छोटा सा चूहा आया और उसने खून चाटना शुरू कर दिया। इस पर स्त्री ने एक पत्थर उठाया उसको चूहे पर दे मारा जिससे चूहा मर गया।

अब चूहे की मॉ बाहर आयी और बोली — "मेरी तरफ देख। मैं तो अपने बच्चे को ज़िन्दा कर सकती हूँ पर तू अपने पति और उसके भाई के लिये क्या कर सकती है।" कह कर उसने एक जड़ी बूटी उखाड़ी और उसे चूहे के शरीर पर मल दिया और लो वह चूहा तो ज़िन्दा हो गया। बस फिर वे दोनों अपने बिल में घुस गये।

यह देख कर वह स्त्री तो बहुत खुश हो गयी। उसने भी वही जड़ी बूटी तोड़ी अपने पति और उसके भाई के सिर उनके धड़ से

जोड़े और वह जड़ी बूटी उनके ऊपर लगा दी। उसका पति और उसके पति का भाई दोनों ज़िन्दा हो गये। पर उससे एक गलती हो गयी। उसने वे सिर गलत शरीरों पर लगा दिये।

अब मेरे नौजवान बेटे तुम यह बताओ कि उस स्त्री का पति कौन सा था।" कह कर सेब ने अपनी कहानी खत्म की।

लड़के ने अपनी ऑखें खोलीं और कहा — "निश्चित रूप से वही उसका पति था जिसके शरीर पर ठीक सिर था।"

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ।

सेब फिर बोला — "एक बार एक मिलाने वाला[53] एक दर्जी और एक पादरी एक साथ कहीं जा रहे थे। चलते चलते उनको जंगल में रात हो गयी सो उन्होंने एक बहुत बड़ी आग जलायी खाना खाया फिर बोले — "हमको नौकरी दिलवा दीजिये। हममें से हर एक बारी बारी से पहरा देगा और अपने अपने काम में कुछ न कुछ करेगा।"

मिलाने वाले की बारी पहली थी सो उसने एक पेड़ काटा और उसकी लकड़ी से एक आदमी बनाया। फिर वह लेट गया और सो गया। अब दर्जी की पहरा देने की बारी आयी। तो उसने एक आदमी की मूर्ति देखी तो उसने अपने कपड़े उतारे और उसको पहना दिये।

[53] Translated for the word "Joiner"

दर्जी के बाद अब पादरी की पहरा देने की बारी थी। जब उसने एक आदमी कपड़े पहने हुए देखा तो उसने भगवान से प्रार्थना की वह उसमें आत्मा डाल दे। उसने प्रार्थना की और भगवान ने उसकी इच्छा पूरी की।

अब यह बताओ मेरे बच्चे कि उस आदमी को किसने बनाया?"

"जिसने उसमें आत्मा डाली।" लड़के ने जवाब दिया।

राजा यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने अपने मन में सोचा "ये दो सवाल हो गये।"

सेब फिर बोला — "एक बार एक ज्योतिषी था एक डाक्टर था और एक तेज़ भागने वाला था। ज्योतिषी बोला — "एक जगह एक राजकुमार है जो फलॉ फलॉ बीमारी से बीमार है।"

डाक्टर बोला — "मैं जानता हूँ कि उसका इलाज क्या है।"

तो तेज़ भागने वाला बोला — "मैं उस दवा को वहॉ जल्दी से जल्दी ले जा सकता हूँ।"

सो डाक्टर ने उसके लिये दवा तैयार की और वह तेज़ भागने वाला उस दवा को ले कर वहॉ भाग गया। और राजकुमार ठीक हो गया।

अब यह बताओ कि राजकुमार को किसने ठीक किया – ज्योतिषी ने जिसने राजकुमार के बारे में बताया या फिर डाक्टर ने जिसने दवा तैयार की या फिर उस आदमी ने जो दवा ले कर भाग कर गया।"

लड़का बोला — "जिसने दवा तैयार की।"

जब लड़के ने तीनों के जवाब दे दिये तो सेब फिर से अपनी सन्दूकची में जा कर बैठ गया। और राजा ने वह सन्दूकची अपनी जेब में रख ली।

लड़का उठा उसने राजा को गले लगाया और बोला — "यहॉ बहुत लोग आये पर इससे पहले मैं बोल नहीं सका। अब तुम मुझे अपनी इच्छा बताओ कि तुम्हारी क्या इच्छा है मैं वही पूरी करूॅगा।"

राजा ने कहा कि उसके मन्त्री जो मर चुके थे उनको ज़िन्दा कर दिया जाये।

लड़के ने वैसा ही किया। लड़के ने राजा को बहुत सारी भेंटें भी दीं। सब लोग बहुत सारी भेंटें ले कर अपने घर वापस गये।

12 तीन सुनहरे सन्तरे[54]

सन्तरों की यह पहली लोक कथा यूरोप महाद्वीप के स्पेन देश में कही सुनी जाती है।

डूबता हुआ सूरज अपना सुनहरा साया एक सादे से कलई किये गये मकान पर पड़ रहा था कि उस समय तीन भाई सैनटियागो, टोमस और मैटियास[55] खेतों से अपने घर की तरफ लौट रहे थे।

दोनों बड़े भाई आगे आगे जल्दी जल्दी चल रहे थे क्योंकि उनके पास ले जाने के लिये कोई बोझा नहीं था और उनका छोटा भाई उनके पीछे पीछे धीरे धीरे चल रहा था क्योंकि उसके कन्धे पर गेंहू की बालियॉ रखी हुई थीं।

जब वे तीनों घर पहुँचे तो उनकी मॉ सैरा[56] ने कहा — "बैठ जाओ बेटे और थोड़ा आराम कर लो। मैं तुम तीनों से कुछ बात करना चाहती हूँ।"

जब वे थोड़ी देर आराम कर चुके तो वह बोली — "मैंने सोच लिया है कि मैं अब दादी बनना चाहती हूँ। इसलिये मैंने यह भी तय कर लिया है कि अब समय आ गया है जबकि तुम्हारे लिये लड़कियॉ

[54] The Three Golden Oranges – a folktale from Spain, Europe. Adapted from the book : "The Three Golden Oranges", by Almaflor Ada. NY, Atheneum Books for Young Readers. 1999. unnumbered 30 pages. A 1-story picture book.
[This story is similar to the story "Gypsy Queen" – a folktale from Mexico, Central America given later in this book]

[55] Santiago, Tomas and Matias

[56] Sara – name of the mother of the three boys – Santiago, Tomas, Matias

ढूँढ ली जायें ताकि तुम लोग अपना परिवार शुरू कर सको। इस लिये तुम लोग अपने लिये तुरन्त ही लड़कियॉ ढूँढना शुरू कर दो।"

तीनों भाइयों ने कुछ सोचते हुए एक दूसरे की तरफ देखा। वे जानते थे कि सारी घाटी में जो पहाड़ों से ले कर समुद्र तक फैली हुई थी एक भी लड़की ऐसी नहीं थी जिसकी शादी न हुई हो।

जब वे अगले दिन खेतों पर गये तब भी यह मामला उनके दिमाग में घूम रहा था। मैटियास बोला — "क्यों न हम उस बूढ़ी अम्मा से पूछें जो समुद्र के किनारे वाली पहाड़ी पर रहती है।"

मैटियास के आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसके भाई उसकी कही बात पर राजी हो गये क्योंकि वे तो कभी उसकी बात सुनते भी नहीं थे।

तीनों भाई उस पहाड़ी पर जाने वाले तंग रास्ते पर चढ़ते चले गये जहॉ से समुद्र दिखायी देता था। वे तीनों उस गुफा के सामने पहुँच गये जहॉ वह बुढ़िया रहती थी। जब वे वहॉ पहुँचे तो वहॉ वह बूढ़ी अम्मा ऊन कात रही थी।

उसने अपना काम जारी रखते हुए उन भाइयों से पूछा — "कैसे आये हो?"

मैटियास ने सादे और नम्र तरीके से उसको बताया — "हम शादी करना चाहते हैं और इस बारे में हम आपसे सलाह लेने आये हैं।"

बूढ़ी अम्मा ने पूछा — "और तुम सबको कैसी पत्नियॉ चाहिये?"

सैनटियागो तुरन्त बोला — "मुझको तो बहुत सुन्दर लड़की चाहिये।"

टोमस भी तुरन्त बोला — "मुझे ऐसी एक लड़की चाहिये जो अमीर भी हो और सुन्दर भी।"

बूढ़ी अम्मा ने देखा कि मैटियास कुछ नहीं बोला तो उसने उसकी तरफ मुॅह कर के पूछा — "और तुम्हें?"

मैटियास बोला — "मुझे तो एक ऐसी जवान लड़की चाहिये जो दयालु हो, खुशमिजाज हो और ऐसी हो जिसको मैं बहुत प्यार कर सकूॅ।"

बूढ़ी अम्मा जवाब में बोली — "तुममें से हर एक को तुम्हारी पसन्द की लड़की मिल जायेगी पर इसके लिये तुम लोगों को एक साथ मिल कर काम करना पड़ेगा।"

फिर वह एक नंगी ढालू जमीन जिसकी चोटी बादलों में छिपी हुई थी की तरफ इशारा करते हुए बोली — "तीन दिन तक तुम लोग उस पहाड़ी की तरफ जाओगे। उस पहाड़ी के दूसरी तरफ एक किला है जो सन्तरे के बाग से घिरा हुआ है।

उसमें बहुत सारे सन्तरे के पेड़ लगे हुए हैं उन पर लगे हुए सारे सन्तरे अभी भी हरे होंगे। पर उनमें से एक पेड़ की केवल एक शाख पर तुमको तीन सुनहरे सन्तरे लटके दिखायी देंगे।

वे तीनों सन्तरे तुम शाख को बिना कोई नुकसान पहुँचाये तोड़ लेना और तोड़ कर उनको तुम मेरे पास ले आना तो तुमको अपनी अपनी पसन्द की पत्नियाँ मिल जायेंगी। पर याद रखना अगर तुमने मेरी बात नहीं मानी तो पछताओगे।"

तीनों भाई अगले दिन के सफर की तैयारी करने के लिये जल्दी ही घर लौट आये। अगले दिन उन सबने अपनी अपनी जेबें गिरियों, खजूरों और डबल रोटियों[57] से भरीं और अपने सफर पर चल दिये।

वे सारे दिन चले। जब रात हुई तो वे एक अनाज रखने वाली जगह में रात काटने के लिये रुक गये। वहाँ वे एक भूसे का बिस्तर बना कर सो गये।

पर थोड़ी ही देर में सैनटियागो चाँद की एक किरन के अन्दर आने से जाग गया। वह किरन उस अनाजघर के दरवाजे से हो कर अनाजघर में आ रही थी।

उसने अपने आपसे पूछा — "मैं यहाँ अपने भाइयों के साथ अपना समय क्यों बर्बाद कर रहा हूँ? जब हमको सन्तरे मिलेंगे तो शायद हम लोग उनमें से सबसे अच्छा सन्तरा लेने के लिये लड़ें।

[57] Nuts (see their picture above), dates and bread

अगर मैं वहॉ सबसे पहले पहुँच जाता हूँ तो मैं उनमें से जो भी मुझे सबसे अच्छा सन्तरा लगेगा मैं वह सन्तरा ले लूँगा। फिर मेरे भाई लोग उन दो सन्तरों के ऊपर लड़ते रहें।"

यह सोच कर सैनटियागो उठा और सारी रात चलता रहा। तीसरे दिन सुबह सवेरे ही वह किले पर आ गया। तब तक सूरज की किरनें भी उस सन्तरे को बाग पर नहीं पड़ी थीं।

सन्तरे के सफेद फूल सुबह की रोशनी में चमक रहे थे। और जैसा उस बूढी अम्मा ने कहा था सारे सन्तरे अभी भी हरे ही थे।

सैनटियागो उन सुनहरे सन्तरों की खोज में लग गया। तभी एक पेड़ की सुनहरी चमक ने उसका ध्यान खींचा जो किले के दरवाजे के पास ही लगा था।

वे तीनों सन्तरे उस पेड़ की सबसे ऊँची शाख पर असली सोने के सन्तरों की तरह चमक रहे थे। यह शाख बहुत ऊँची थी वह उस शाख तक नहीं पहुँच सकता था पर वह उनको छोड़ने वाला भी नहीं था।

उसने पेड़ को पकड़ा और यह देखने की कोशिश की कि वह उसको हिला कर वे सन्तरे तोड़ सकता था कि नहीं। पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि उसका तो हाथ ही उस पेड़ के तने से ही चिपक गया। वह तो वहॉ फँस गया था।

उसी समय किले में से निकल कर एक बूढ़ा आदमी बहुत सारे चौकीदारों के साथ वहॉ आया। उसने अपनी जादू की छड़ी उस पेड़

पर धीरे से छुआई और सैनटियागो को पेड़ से छुड़ा दिया। पर फिर उसको तुरन्त ही उन चौकीदारों ने पकड़ लिया और एक तहखाने में डाल दिया।

उस तहखाने से सैनटियागो ने सुना कि वह बूढ़ा आदमी अपने आप से रो रोकर कह रहा था — "ओ मेरी प्यारी पत्नी, ओ मेरी कीमती बेटियों। तुम कब तक इस तरह से कैद रहोगी?"

उधर अगले दिन टोमस और मैटियास सो कर उठे तो उन्होंने देखा कि सैनटियागो तो धोखा दे कर भाग गया था।

वे उठ कर अपने सफर पर चल दिये। उस दिन शाम को रात को ठहरने के लिये उनको पहाड़ी के एक तरफ एक गुफा मिली सो वे लोग वहीं ठहर गये।

जब मैटियास सो गया तो टोमस दबे पॉव उठा और यह सोच कर वहॉ से चल दिया — "सैनटियागो तो पहले ही चला गया है पर मैं उसको पकड़ लूँगा। मैं इस बेवकूफ मैटियास को यहीं छोड़ जाऊँगा फिर यह जैसा चाहे वैसा करे।"

तीसरे दिन दोपहर को टोमस किले पर पहुँच गया पर उसको सैनटियागो वहॉ कहीं दिखायी नहीं दिया। टोमस को वहॉ की सन्तरों की खुशबू बहुत ही अच्छी लगी।

उसने भी देखा कि जैसा कि उस बूढ़ी अम्मा ने कहा था वहॉ अभी सारे सन्तरे कच्चे ही थे। तभी उसकी निगाह किले के दरवाजे

के पास लगे एक पेड़ पर पड़ी जिससे रोशनी निकल कर आ रही थी। वह उधर खिंचा चला गया।

वहॉ जा कर उसने देखा कि वह रोशनी तो उस पेड़ पर लगे तीन सुनहरी सन्तरों में से आ रही थी। उन सुनहरे सन्तरों को देख कर तो वह पागल सा हो गया और पेड़ की तरफ लपका।

लेकिन जैसे ही वह पेड़ से लिपट कर उस पर चढ़ने लगा उसका तो सारा शरीर ही पेड़ से चिपक गया और वह तो हिल भी नहीं सका।

कुछ पल बाद ही वह पहले वाला बूढ़ा आदमी फिर वहॉ अपने चौकीदारों के साथ आया और अपनी जादू की छड़ी टोमस के शरीर से छुआ कर उसको पेड़ से छुड़ा लिया।

उसके चौकीदारों ने उसको भी उसी तहखाने में डाल दिया जहॉ उसका बड़ा भाई सैनटियागो पड़ा हुआ था।

इस बार दोनों ने उस बूढ़े को रोते हुए सुना — "ओ मेरी पत्नी, ओ मेरी कीमती बेटियों। एक भयानक जादूगर ने तुमको इस तरह कैद कर रखा है। तुम कब वापस आओगी?"

उधर अगले दिन जब मैटियास सो कर उठा तो उसने देखा कि टोमस भी उसको छोड़ कर भाग गया है। उसने सोचा कि अब उस को जल्दी करनी चाहिये क्योंकि उस समुद्र के किनारे वाली बूढ़ी अम्मा ने कहा था कि सब साथ साथ रहना।

फिर भी किले पर पहुँचते पहुँचते उसको तीसरे दिन का तीसरा पहर हो गया। उसको भी सन्तरों के फूलों की खुशबू आयी तो उनका पीछा करते करते वह भी उन सुनहरे सन्तरों के पेड़ के सामने आ पहुँचा।

उसने सोचा कि उसे वे सन्तरे जल्दी से तोड़ लेने चाहिये और फिर उसे अपने भाइयों को ढूँढना चाहिये। वह सन्तरे तोड़ने के लिये उछला और उछल कर वह शाख पकड़ ली जिस पर सन्तरे लगे हुए थे।

उसके सावधानी से पकड़ने के बावजूद वह शाख टूट गयी और पेड़ चिल्ला उठा। उस पेड़ के चिल्लाते ही वह बूढ़ा आदमी अपने कई चौकीदारों के साथ एक बार फिर से बाहर आगया।

वह बूढ़ा आदमी बोला — "तुमने तो सन्तरे पहले ही तोड़ लिये इसलिये अब मैं तुमको गिरफ्तार नहीं कर सकता।"

मैटियास ने पूछा — "मेरे भाई कहाँ हैं?"

बूढ़ा आदमी बोला — "ये सन्तरे तुम्हारे लिये सारे दरवाजे खोल देंगे। केवल डबल रोटी और पानी ले लो और कुछ नहीं। और हाँ देखो इन सन्तरों को कोई नुकसान नहीं पहुँचाना नहीं तो वे सारे दरवाजे बन्द हो जायेंगे।"

मैटियास किले की तरफ दौड़ा तो उस बूढ़े आदमी के कहे अनुसार किले के लोहे के सब भारी भारी दरवाजे उसके आगे आगे खुलते चलते गये।

किले के अन्दर किले की ऊँची ऊँची दीवारें बढ़िया परदों से ढकी हुई थीं। मैटियास का ध्यान एक खास परदे की तरफ गया जिसमें एक जवान लड़की एक घाटी में एक सन्तरे के बागीचे में खड़ी थी।

हालाँकि उसका मन वहाँ से हटने के लिये नहीं कर रहा था पर फिर भी वह अपने भाइयों की खोज जारी रखने के लिये वहाँ से आगे बढ़ा।

आखिर उसने उनको पा ही लिया। उस तहखाने का दरवाजा अपने आप ही खुल गया था जिसमें उसके भाई कैद थे।

सैनटियागो और टोमस दोनों उसके सामने गिड़गिड़ाये — "हम तुमको अकेला छोड़ आये थे उसके लिये तुम हमको माफ कर दो।"

मैटियास बोला — "अब इन सब बातों का कोई मतलब नहीं है। हमें इन सन्तरों को ले कर उस बूढ़ी अम्मा के पास जल्दी ही पहुँचना चाहिये।"

सो सैनटियागो और टोमस उस किले की शान से प्रभावित होते हुए बेमन से मैटियास के पीछे पीछे हो लिये।

मैटियास बोला — "हमको किसी चीज़ को छूना नहीं है। सफर के लिये केवल डबल रोटी और पानी ले लो।"

पर जैसे ही वे मैटियास के पीछे पीछे किले के बाहर जा रहे थे उन्होंने जो भी सोने और चाँदी की चीज़ें उनके हाथ लगीं उनसे अपनी जेबें भर लीं।

मैटियास जल्दी जल्दी बिना खाने और पीने के लिये रुके चला जा रहा था। हालॉकि सूरज बहुत गर्म था पर सन्तरे ताजा ही रहे।

पर इससे पहले कि वे किले से बहुत दूर पहुँचें मैटियास के दोनों भाइयों ने अपनी डबल रोटी पहले ही खा ली थी और अपना सारा पानी भी खत्म कर लिया था। उन्होंने यह भी नहीं सोचा कि सफर के अभी दो दिन और बचे हैं।

वह रात तीनों भाइयों ने एक चरवाहे की झोंपड़ी में बिताने का निश्चय किया पर सैनटियागो को रात भर नींद नहीं आयी।

वह इस बात से बहुत दुखी था कि उसका सबसे छोटा भाई वे सन्तरे ले कर जा रहा था जबकि वह सबसे बड़ा था और वह खुद इस काम को नहीं कर सका।

सो आधी रात को वह उठा और अपने छोटे भाई के हाथ में लगी सन्तरों की शाख से सबसे बड़ा सन्तरा लिया और अपने सफर पर चल दिया।

सैनटियागो सारी रात चला और फिर अगली सारी सुबह चला। जल्दी ही सूरज ज़ोर से चमकने लगा और सैनटियागो को प्यास लग आयी। उसको लगा कि वह तो प्यास के मारे मर ही जायेगा।

जब वह प्यास और नहीं सह सका तो उसने वह रसीला सन्तरा खाने का निश्चय किया। पर जब उसने सन्तरे को बीच में से फाड़ा तो उसमें से एक बहुत ही सुन्दर जवान लड़की निकल पड़ी।

सन्तरे में से निकलते ही उसने उससे डबल रोटी मॉगी।

सैनटियागो केवल यही कह सका — "डबल रोटी तो मेरे पास नहीं है वह तो मैंने सारी खा ली।"

फिर उस लडकी ने उससे थोड़ा सा पानी माँगा।

वह फिर बोला — "मैंने तो पानी भी सारा पी लिया।"

"तो फिर मैं अपने सन्तरे में वापस जाती हूँ और फिर अपने पेड़ में।" यह कह कर वह लड़की गायब हो गयी।

उसके जाने के बाद वह धूल के एक तेज़ तूफान में फँस गया। अचानक उसके चारों तरफ किले की दीवारें खड़ी हो गयीं।

उसकी कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह सब क्या हो रहा था। इतने में ही वे चौकीदार फिर से आ गये और उन्होंने उसको फिर से पकड़ कर उसी तहखाने में डाल दिया।

इस बीच टोमस सुबह उठा। जब उसने देखा कि सैनटियागो एक सन्तरा ले कर वहाँ से गायब है तो उसने भी अपने बड़े भाई की देखा देखी वही करने की सोची।

उसने भी बचे हुए दो सन्तरों में से बड़ा वाला सन्तरा शाख पर से तोड़ा और वहाँ से चल दिया। मैटियास आराम से सोता रहा।

टोमस को भी पथरीला रास्ता और खूब गर्म सूरज मिला। जब उससे भी वह गर्मी नहीं सही गयी तो उसने भी मरने की बजाय सन्तरा खाना ज्यादा अच्छा समझा।

जब उसने सन्तरा छीलना शुरू किया वह भी आश्चर्यचकित रह गया जब अचानक ही उसके सामने एक बहुत ही सुन्दर लड़की उसमें से निकल कर खड़ी हो गयी।

इतनी सुन्दर लड़की तो उसने पहले कभी नहीं देखी थी। उसके कीमती जवाहरातों और कपड़ों से लग रहा था कि वह बहुत अमीर थी।

निकलते ही उसने कहा — "मेहरबानी कर के मुझे थोड़ी डबल रोटी दो।"

टोमस भी बस इतना ही बोल सका — "मेरे पास तो कोई डबल रोटी नहीं है। मैंने तो वह सारी खा ली।"

वह लड़की फिर बोली — "तो फिर थोड़ा सा पानी ही दे दो।"

वह दुखी हो कर बोला — "मेरे पास तो वह भी नहीं है। मैंने वह भी सारा पी लिया।"

वह लड़की बोली — "तब मैं अपने सन्तरे में और फिर अपने पेड़ में वापस जाती हूँ।" यह कह कर वह भी गायब हो गयी।

उसके गायब हो जाने के बाद टोमस ने भी अपने आपको धूल के तूफान में घिरा पाया। उसके चारों तरफ भी किले की दीवार खड़ी हो गयीं और वे चौकीदार उसको भी पकड़ कर उसी तहखाने में डाल आये जहाँ सैनटियागो पड़ा हुआ था।

जब मैटियास सुबह जागा तो उसने देखा कि उसकी शाख पर तो अब केवल एक ही सन्तरा रह गया है। वह अपने भाइयों के लिये बहुत दुखी हुआ। उसने सोचा कितने जल्दबाज हैं वे लोग।

डबल रोटी और पानी जो उसने बचा कर रखा था उसके सहारे मैटियास वह गर्म सूखी घाटी पार कर गया। शाम तक वह समुद्र के पास और फिर उस बूढ़ी अम्मा की गुफा तक पहुँच गया।

वह बूढ़ी अम्मा बोली — "मैं देख रही हूँ कि तुम तो पूरी शाख की शाख ही तोड़ लाये हो और तुमने तीनों सन्तरों को भी अलग अलग कर दिया है।

क्योंकि तुमने मेरा कहा नहीं माना इसलिये इससे तुम लोगों के ऊपर जो आफत आने वाली है उससे मैं तुममें से किसी को नहीं बचा पाऊँगी।"

मैटियास ने पूछा — "पर मेरी पत्नी का क्या होगा? और मेरे भाई?"

वह बूढ़ी अम्मा बोली — "अभी सब कुछ खत्म नहीं हुआ है। तुम अपने घर वापस जाओ और अपने खेतों पर जाओ। इन्तजार करो और हमेशा अपने दिल की सुनो।" इतना कह कर वह अपनी गुफा में चली गयी।

मैटियास दुखी हो कर अपने घर लौट आया और अपनी माँ को आ कर उसने अपने सफर का हाल और अपनी मुसीबतों के बारे में बताया।

हालॉकि सैरा अपने बड़े बेटों के गायब हो जाने के बारे में सुन कर बहुत दुखी हुई पर वह मैटियास को वापस आया देख कर खुश भी बहुत थी।

हर सुबह जब मैटियास खेतों पर चला जाता तो एक सफेद फाख्ता आ कर सैरा के कन्धे पर बैठ जाती जैसे वह उसको तसल्ली दे रही हो।

जब सैरा अपने घर का काम करती रहती तो वह फाख्ता उसके साथ सारा दिन रहती। इससे सैरा को ऐसा लगता कि सब कुछ ठीक हो जायेगा।

एक सुबह जब गर्मियॉ खत्म हो रही थीं तो मैटियास खेत छोड़ कर जल्दी ही घर आ गया और मॉ से बोला — "मॉ मैं एक बार फिर से उस किले पर जाना चाहता हूॅ। मैं जा कर देखता हूॅ कि मैं अपने बड़े भाइयों को फिर से पा सकता हूॅ या नहीं।"

फिर उसकी निगाह उस फाख्ता पर जा कर ठहर गयी जो उसकी मॉ के कन्धे पर बैठी हुई थी।

उसने मॉ से पूछा — "मॉ यह फाख्ता कहॉ से आयी?"

मॉ बोली — "यह तो मेरे पास रोज आती है और जब तुम खेतों पर होते हो तो यह सारा दिन मेरे साथ ही रहती है। मैं इस को ब्लैनक्विटा[58] कह कर पुकारती हूॅ।"

[58] Blanquita

मैटियास ने अपना हाथ बढ़ाया तो वह फाख्ता उसके हाथ पर आ कर बैठ गयी। वह उसके ऊपर प्यार से हाथ फेरने लगा तो उसने उसकी गर्दन में एक कॉटा सा चुभा हुआ महसूस किया।

उसने वह कॉटा बड़ी सावधानी से खींच कर निकाल दिया तो वह फाख्ता तो एक लड़की में बदल गयी।

वह लड़की बोली — "मेरा नाम ब्लैन्काफ्लोर[59] है। हम लोगों को यहॉ से तुरन्त ही चलना चाहिये। हमारे पास समय नहीं है। मैं खुद तुम्हारे साथ उस किले तक चलूॅगी।"

इस बार उस किले तक का सफर मैटियास को बहुत छोटा लगा।

जब वे दोनों किले की तरफ जा रहे थे तो ब्लैन्काफ्लोर ने मैटियास को बताया कि कैसे उसकी दो बहिनें और मॉ और वह खुद भी एक नीच जादूगर के शाप में जकड़ी हुई थीं क्योंकि उसके पिता ने अपनी किसी भी लड़की की शादी उससे करने से मना कर दिया था।

वह लड़की आगे बोली — "यह तो स्त्री का अधिकार है न? कि वह किसी से भी शादी करे जिससे उसका मन करे। क्या तुम ऐसा नहीं सोचते?"

[59] Blancaflor

मैटियास की समझ में नहीं आया कि वह उसको उसकी इस बात का क्या जवाब दे जो वह उसको चुन ले। सो वह चुप ही रहा।

जब वे उस सन्तरे के बाग में पहुँच गये तो उन्होंने देखा कि सारे सन्तरे पक गये हैं पर ब्लैन्काफ्लोर मैटियास को सीधे उसी पेड़ के पास ले गयी जिससे वह पहले शाख तोड़ कर लाया था। वहाँ अब दो सन्तरे लटके हुए थे।

मैटियास ने ब्लैन्काफ्लोर को ऊपर उठाया ताकि वह उस शाख तक पहुँच सके। ब्लैन्काफ्लोर ने सावधानी से वे दोनों सन्तरे तोड़ लिये और उनको घास पर रख दिया।

जैसे ही उसने उनको घास पर रखा वे दोनों दो लड़कियों में बदल गये। ये दोनों लड़कियाँ ब्लैन्काफ्लोर की बहिनें थीं। उसी समय वह बूढ़ा आदमी भी किले में से बाहर आ गया और अपनी तीनों बेटियों को देख कर बहुत खुश हुआ।

इतने में वह पेड़ भी हिला और सबकी आँखों के सामने देखते देखते वह एक स्त्री बन गया। तीनों बहिनें चिल्लायीं "माँ"।

उस बूढ़े आदमी ने भी अपनी पत्नी को गले से लगाया और अपनी बेटियों को उनके दोनों गालों पर चूमा।

ब्लैन्काफ्लोर बोली — "मेरे माता पिता से मिलो और मेरी बहिनों से भी – ज़ैनाइडा और ज़ोराइडा[60]।"

[60] Zenaida and Zoraida

मैटियास बोला — "अब मुझे अपने भाइयों को ढूँढना है।"

बूढ़े आदमी ने किले के दरवाजे की तरफ इशारा करते हुए कहा — "अब तुम्हारो लिये किले के सारे दरवाजे खुले हैं।"

मैटियास ने देखा कि उसके भाई सैनटियागो और टोमस दोनों उस किले के दरवाजे में से चले आ रहे हैं।

मैटियास और ब्लैन्काफ्लोर दोनों ने दोनों भाइयों को नमस्ते की पर जब सैनटियागो ने ज़ैनाइडा से पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी तो उसने जवाब दिया — "एक बेवकूफ बेकार के आदमी से शादी करने की बजाय तो मैं अकेला रहना ज़्यादा पसन्द करूँगी।"

और जब टोमस ने ज़ोराइडा से पूछा कि क्या वह उससे शादी करेगी तो उसने भी यही कहा — "मैं किसी बेवकूफ लालची आदमी से शादी करने की बजाय अकेला रहना ज़्यादा पसन्द करूँगी।" इस लिये महल में केवल एक ही शादी हुई।

शादी के बाद मैटियास और ब्लैन्काफ्लोर दोनों अपने उस सफेद कलई वाले घर को लौट आये जो समुद्र के पास था जहाँ की खिड़कियों के पत्थरों पर उन्होंने जिरेनियम के फूलों से भरे गमले रखे और सैरा का दिल खुशियों से भर दिया।

किसी को नहीं पता कि सैनटियागो और टोमस का क्या हुआ पर अगर हमें उनके बारे में कुछ भी पता चला तो हम तुम लोगों को जरूर बतायेंगे।

पर तुमको भी अगर कहीं से उन दोनों का पता चल जाये तो तुम हमें ई–मेल कर देना क्योंकि उनकी मॉ सैरा अभी भी उनका इन्तजार देख रही है।

13 प्यार के तीन सन्तरे[61]

सन्तरों की यह दूसरी लोक कथा यूरोप के पुर्तगाल देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक राजा था जिसको शिकार का बहुत शौक था। एक दिन वह शिकार खेलने जंगल में गया। वहाँ उसको एक बहुत दुखी बुढ़िया मिली। वह भूख से मरी जा रही थी।

उस राजकुमार के पास उसको देने के लिये उस समय पैसे तो नहीं थे पर उसके पास काफी सारा खाना था जो वह अपने महल से रास्ते में खाने के लिये लाया था।

उसने अपने नौकरों को बुलाया और उनको उस बुढ़िया को जो कुछ भी वह अपने साथ खाना ले कर आया था वह सब उसको देने के लिये कहा।

बुढ़िया ने खूब पेट भर कर खाया पिया और खाने पीने के बाद राजकुमार को बहुत धन्यवाद दिया। वह बोली कि वह उसको उस के बदले में कुछ और नहीं दे सकती थी क्यों कि उसके पास कुछ और था ही नहीं।

[61] The Three Citrons of Love – a folktale from Portugal, Europe. Adapted from the Web Site : https://www.surlalunefairytales.com/book.php?id=54&tale=1681

पर फिर भी उसके पास तीन सन्तरे थे जो उसने राजकुमार को दिये और उससे कहा कि वह किसी भी हालत में उनको न खोले और जब खोले तो किसी पानी की जगह के पास ही खोले और लम्बा लम्बा खोले, न कि चौड़ाई में।

राजकुमार ने उससे वे सन्तरे ले लिये, उसको धन्यवाद दिया और फिर अपने रास्ते चल दिया।

कुछ दूर जाने पर राजकुमार को लगा कि उसको एक सन्तरा खोल कर देखना चाहिये कि उसमें क्या था। पर वह यह भूल गया कि उस बुढ़िया ने उसको वह सन्तरा पानी के पास खोलने के लिये कहा था।

जैसे ही उसने पहला सन्तरा खोला तो उसमें से एक बहुत सुन्दर लड़की निकली। सन्तरे में से निकलते ही उसने पीने के लिये पानी माँगा। उसने कहा कि अगर उसको पीने के लिये पानी नहीं मिला तो वह मर जायेगी।

अब राजकुमार के पास पानी तो था नहीं सो वह उसको पानी नहीं दे सका सो वह बेचारी लड़की मर गयी। राजकुमार को उसके मरने का बहुत दुख हुआ। पर क्योंकि उसके पास अभी दो सन्तरे और थे इसलिये वह इस लड़की की मौत को झेल गया।

वह अपनी यात्रा पर और आगे बढ़ा। आगे चल कर उसने एक सन्तरा और खोला पर इस बार भी वह यह भूल गया कि उस को वह पानी के पास खोलना था।

उसने जैसे ही दूसरा सन्तरा खोला उसमें से भी एक पहले से भी ज़्यादा सुन्दर लड़की निकली। बाहर निकलते ही उसने भी राजकुमार से पानी माँगा पर राजकुमार के पास पहले की तरह से अब भी पानी नहीं था और इस तरह बिना पानी के पहले की तरह से यह लड़की भी मर गयी। अबकी बार राजकुमार को बहुत दुख हुआ।

पर वह फिर अपनी यात्रा पर आगे चल दिया। पर अबकी बार उसको तीसरा सन्तरा बिना पानी की जगह के खोलने की हिम्मत नहीं हुई कि कहीं ऐसा न हो कि इसमें से भी कोई लड़की निकले और वह भी बिना पानी के मर जाये।

पर उसको यह जानने की इच्छा बहुत ज़्यादा थी कि इस तीसरे सन्तरे में क्या हो सकता था सो उसने पानी ढूँढना शुरू किया ताकि उसके पास वह यह तीसरा सन्तरा खोल सके।

पानी मिलने पर उसने वह तीसरा सन्तरा खोल दिया। उसमें से भी एक लड़की निकली जो पहले वाली लड़कियों से कहीं ज़्यादा सुन्दर थी। उसने भी निकलते ही पानी माँगा। इस बार राजकुमार के पास पानी था सो उसने तुरन्त ही उसको पानी पिला दिया।

पर क्योंकि वह लड़की बहुत ही पतली और नाजुक सी थी राजकुमार उसको अपने साथ अपनी यात्रा पर आगे नहीं ले जा सकता था सो उसने महल लौटने का विचार किया।

उसने उससे पास के एक पेड़ पर चढ़ जाने के लिये कहा और खुद उसके लिये एक गाड़ी लाने चला गया। सो वह लड़की तो पेड़ पर चढ़ गयी और राजकुमार वहॉ से अपने महल चला गया।

कुछ देर बाद एक नीग्रो[62] स्त्री जो बहुत ही बदसूरत थी अपने मालिक के लिये वहॉ पानी भरने आयी। उसने पानी में झॉका। पानी बहुत साफ और शान्त था। पर उस पानी में उसको उस सुन्दर लड़की की परछाईं दिखायी दी जो पेड़ पर बैठी थी।

उसको लगा कि वह उसका खुद का चेहरा था सो वह कह उठी — "अरे तुम तो इतनी सुन्दर हो फिर तुम किसी का पानी क्यों भरती हो? तोड़ दो इस घड़े को।" और उसने उस घड़े को जमीन पर मार मार कर तोड़ दिया।

उधर पेड़ पर बैठी लड़की यह सब देख कर मुस्कुरा रही थी। केवल मुस्कुराना ही नहीं बल्कि वह तो ज़ोर से हॅसना चाह रही थी पर कहीं वह नीग्रो स्त्री उसको सुन न ले और देख न ले इस वजह से वह डर रही थी। पर फिर उससे रहा नहीं गया और वह ज़ोर से हॅस पड़ी।

[62] Negro – African origin people are called Negro. It is a race. They can be recognized easily.

उसकी हॅसी की आवाज सुन कर उस नीग्रो स्त्री ने चारों तरफ देखा कि कौन हॅसा पर उसको कोई दिखायी नहीं दिया। काफी देर के बाद उसको पेड़ पर बैठी वह लड़की दिखायी दी।

उसको देख कर उसने कई तरह के इशारों से उसको पेड़ से नीचे आने के लिये कहा पर उस लड़की ने यह कहते हुए उसको नीचे आने से मना कर दिया कि वह वहॉ राजकुमार का इन्तजार कर रही थी।

पर उस नीग्रो स्त्री ने जो एक जादूगरनी भी थी उसको फिर से नीचे आने की जिद की — "आओ तुम नीचे आ जाओ ताकि मैं कम से कम तुम्हारा मुॅह तो साफ कर दूॅ।"

उसने उस पेड़ वाली लड़की से इतनी जिद की कि उस लड़की को पेड़ से नीचे उतरना ही पड़ा। उसके नीचे उतरते ही उस स्त्री ने उसको पकड़ लिया और उसका मुॅह और सिर धोने का बहाना करने लगी।

उसने उससे बहुत सारे सवाल भी पूछे। उस लड़की ने उसके सब सवालों के सही सही जवाब दे दिये।

जब उस जादूगरनी को सब कुछ मालूम चल गया जो वह जानना चाहती थी तो उसने अपने पास से एक पिन निकाली और उस लड़की के सिर में घुसा दी। जैसे ही उसने वह पिन उसके सिर में घुसायी उसी समय वह लड़की एक फाख्ता बन गयी और उड़ गयी।

उसके बाद वह नीग्रो स्त्री उस लडकी की जगह उस पेड़ पर जा कर बैठ गयी और राजकुमार का इन्तजार करने लगी। इस सबके जल्दी ही बाद राजकुमार भी वापस आ गया।

उसने पेड़ के ऊपर देखा तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह तो वहॉ एक बहुत सुन्दर लड़की छोड़ कर गया था और वहॉ तो यह नीग्रो स्त्री बैठी हुई है।

वह उस पर बहुत गुस्सा हुआ तो वह नीग्रो स्त्री रोने लगी और बोली कि किसी ने उसके ऊपर एक ऐसा जादू कर दिया है जिससे वह कभी तो सुन्दर हो जाती है और कभी ऐसी नीग्रो जैसी हो जाती है।

राजकुमार ने उसके ऊपर विश्वास कर लिया और उसको पेड़ से नीचे उतरने के लिये कहा। फिर उसके ऊपर दया कर के वह उसको घर ले आया।

अगले दिन वह सुबह सवेरे बहुत जल्दी उठा और अपने बागीचे में टहलने के लिये चला गया। कुछ देर बाद ही उसने एक सफेद फाख्ता देखी जो उसको बागीचे के माली से बात कर रही थी — "राजकुमार उस काली, बदसूरत और बुरी नीग्रो स्त्री के साथ कैसे अपने दिन गुजार रहे हैं?" और यह कह कर वह उड़ गयी।

माली ने उसको तो कोई जवाब नहीं दिया पर वह राजकुमार के पास पहुँचा और उससे यह सब कह कर उसके हाल चाल पूछे — "आप मुझसे उसे क्या जवाब दिलवाना चाहते हैं?"

राजकुमार बोला — "उसको कहना कि मैं ठीक हूँ और खुशी खुशी रह रहा हूँ।"

अगले दिन वह फाख्ता फिर वापस आयी और माली से बोली — "ओ मेरे बागीचे के माली, राजकुमार उस काली बदसूरत नीग्रो के साथ कैसे रह रहे हैं?"

माली ने कह दिया कि वह खुशी से रह रहे हैं और अच्छी ज़िन्दगी बिता रहे हैं।

इस पर वह फाख्ता बोली — "और मैं बेचारी दुनियॉ में बिना किसी काम के इधर उधर उड़ती फिर रही हूँ।" इस पर माली फिर से राजकुमार के पास गया और राजकुमार से जा कर वह कहा जो उस फाख्ता ने उससे कहा था।

तब राजकुमार ने माली को एक रिबन का जाल बिछाने के लिये कहा ताकि वह उस फाख्ता को उस जाल में फॉस कर पकड़ सके। क्योंकि वह उसको बहुत अच्छी लग गयी थी। माली ने उसको पकड़ने के लिये रिबन का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर वहॉ आयी और उसने माली से फिर वही पूछा तो माली ने फिर वही जवाब दिया।

फिर उसने इधर उधर देखा तो खुद को फॉसने के लिये रिबन का जाल देख कर ज़ोर से हॅसी और बोली — "यह रिबन का जाल मेरी टॉगों को फॅसाने के लिये नहीं हो सकता।" और यह कह कर वह उड़ गयी।

माली फिर राजकुमार के पास गया और फाख्ता ने जो कहा था वह उससे जा कर कह दिया। अबकी बार राजकुमार ने उसको पकड़ने के लिये चॉदी के तारों का जाल बिछवाया। माली ने उसको पकड़ने के लिये इस बार चॉदी के तारों का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर आयी और उसने माली से वही कहा जो वह पहले से कहती चली आ रही थी और माली ने भी उसको वही जवाब दिया जो राजकुमार उससे कहता चला आ रहा था।

फिर वह चॉदी के तारों का जाल देख कर बोली — "हा हा हा हा, यह चॉदी के तारों का जाल मुझे पकड़ने के लिये नहीं हो सकता।" और यह कह कर वह फिर उड़ गयी।

माली फिर राजकुमार के पास गया और उसको वह सब कुछ बताया जो फाख्ता ने उससे कहा था। इस बार राजकुमार ने उसको सोने के तारों का जाल बिछाने के लिये कहा। माली ने इस बार सोने के तारों का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर आयी और उसने माली से वही कहा जो वह पहले से कहती चली आ रही थी और माली ने भी उसको वही जवाब दिया जो राजकुमार उससे कहता चला आ रहा था।

फिर वह सोने के तारों का जाल देख कर बोली — "हा हा हा हा, यह सोने के तारों का जाल मुझे पकड़ने के लिये नहीं हो सकता।" और यह कह कर वह फिर उड़ गयी।

माली फिर राजकुमार के पास गया और उसको वह सब कुछ बताया जो फाख्ता ने उससे कहा था। इस बार राजकुमार ने उसको हीरों का जाल बिछाने के लिये कहा। माली ने इस बार हीरों का जाल बिछाया।

अगले दिन वह फाख्ता फिर आयी। पर अबकी बार उसने इधर उधर नहीं देखा और उस जाल में आ कर फॅस गयी और बोली — "हॉ, यह जाल मुझे पकड़ने के लिये ठीक है।" और इस तरह उस फाख्ता ने अपने आपको उस जाल में फॅस कर पकड़वा लिया।

माली उस फाख्ता को पकड़ कर राजकुमार के पास ले गया। जैसे ही उस नीग्रो स्त्री ने देखा कि उसकी वह फाख्ता तो पकड़ी गयी तो वह राजकुमार से बोली कि वह अपने आपको बहुत बीमार महसूस कर रही थी और उस बीमारी को ठीक करने के लिये उसको फाख्ता का सूप चाहिये।

यह सुन कर राजकुमार ने कहा कि यह फाख्ता मारे जाने के लिये नहीं थी और वह उस फाख्ता को प्यार से सहलाने लगा। उसने उसके सिर पर हाथ फेरा तो उसको लगा कि उसमें तो एक पिन घुसी हुई थी। उसने उस पिन को तुरन्त ही खींच कर बाहर निकाल दिया।

पिन के बाहर निकलते ही वह फाख्ता फिर से एक सुन्दर लड़की में बदल गयी और उसी शक्ल में आ गयी जिस शक्ल में राजकुमार उसको पेड़ पर चढ़ा कर गया था। उसको अचानक अपने सामने देख कर राजकुमार को बहुत आश्चर्य हुआ।

तब उसने राजकुमार को सब बताया जो कुछ भी उस नीग्रो स्त्री ने उसके साथ किया था। यह सुनते ही राजकुमार ने उस नीग्रो स्त्री को मरवाने का हुक्म दे दिया।

मरने के बाद उस नीग्रो स्त्री की खाल का एक ढोल बनवा दिया गया और उसकी हड्डियों की सीढ़ियॉ बनवा दी गयीं जिनसे हो कर उसकी रानी अपने पलंग पर चढ़ती थी।

उसने उस लड़की से शादी कर ली और वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

14 तीन सन्तरों से प्यार[63]

सन्तरों की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

पैन्टेलून[64] जोकर अपनी ऊँची आवाज में बोला — "आओ आओ सब लोग यहाँ आ कर इकट्ठे हो जाओ। अभी हम एक बहुत ही अच्छा नाटक खेलने जा रहे हैं।"

एक ने पूछा — "किस तरह का नाटक? क्या यह हँसी वाला नाटक है? यह नाटक जितना हँसाने वाला होगा उतना ही ज़्यादा अच्छा होगा।" यह सुन कर कई लोगों ने हाँ में अपने सिर हिलाये।

पर किसी ने कहा — "अगर कोई दुख भरा नाटक भी है तो वह भी क्या बुरा है? हम उनका रोना ही सुनेंगे।"

पैन्टेलून ने सबको चुप कराने की कोशिश की — "चुप हो जाओ चुप हो जाओ। मैं तुम लोगों से वायदा करता हूँ कि यह नाटक अपने में एक अकेला और बहुत ही बढ़िया नाटक होगा। ऐसा नाटक तुम लोगों ने पहले कभी कहीं नहीं देखा होगा। सो अब हम पेश करते हैं आज का नाटक तीन सन्तरों से प्यार।"

---

[63] The Love for Three Oranges – a story adapted from the book "The Love for Three Oranges", by Sergei Prokofiev. Grimm Press. 2006. unnumbered 30 pages. A 1-story picture book. This is a very famous opera. This book is based on a play that is why some dramatic effect may be seen.
[It is a famous Italian fairy tale written by Giamattista Basile in the Pentamerone. It has a variant too – "The Love of Three Pomegranates".]

[64] Pentaloon is the clown

एक बूढ़ा बोला — "तीन सन्तरों से प्यार? इसका क्या मतलब हुआ?" पर वहॉ बैठे बच्चों को यह नाम अच्छा लगा और उन्होंने ज़ोर से ताली बजायी।

वे चिल्लाये — "हमको तीन सन्तरों से प्यार चाहिये। हमको तीन सन्तरों से प्यार चाहिये।"

जोकर को यह सुन कर बड़ा अच्छा लगा कि बच्चे उसका नाटक देखने के लिये उत्सुक हैं।

उसने उनके सामने सिर झुकाया और बोला — "बच्चो, तुम लोग तो हमेशा से ही मेरे बहुत अच्छे नाटक देखने वालों में से रहे हो। अच्छा अब देखो नाटक शुरू होता है और राजा आने वाला है।"

और सचमुच में ही एक राजा वहॉ आ गया बहुत ही बढ़िया कपड़े पहने। पर यह क्या। वह तो बहुत ही चिन्तित दिखायी दे रहा था। यह चिन्ता तो उसकी चटकीली रंगीन पोशाक से बिल्कुल भी मेल नहीं खा रही थी।

ऐसा इसलिये था क्योंकि वह अपने बेटे राजकुमार के बारे में बहुत चिन्तित था। उसने पूछा — "मेरे राजकुमार को क्या हुआ है? राजकुमार के पेट में दर्द है? या फिर उसके सिर में दर्द है? या फिर उसकी कमर में दर्द है? या उसके हाथ या पैर में दर्द है?

उसकी ऑखें खाली खाली दिखायी देती हैं और वह एक शब्द भी नहीं बोलता। दुनिया भर के सैंकड़ों डाक्टरों ने उसको देख लिया और सब एक ही निश्चय पर पहुँचे हैं कि उसको हॅसना चाहिये। पर भगवान जानता है कि मेरा बेचारा बेटा तो कभी हॅसा ही नहीं।"

राजा बेचारा एक गहरी सॉस ले कर रह गया। फिर वह उस जोकर की तरफ घूम कर बोला — "पैन्टेलून, तुम ही इसका कुछ हल निकालो।"

पैन्टेलून ने सलाह दी कि राजा को अपने दरबार के हॅसोड़िये ट्रुफ़ालडीनो[65] को बुलाना चाहिये जिसका काम ही सबको हॅसाना और दिल बहलाना था।

उसके चुटकुले और उसकी बेवकूफी की बातें शायद राजकुमार को हॅसा सकें। यह सलाह सुन कर राजा ने अपने दरबारियों को हुक्म दिया कि वे ट्रुफ़ालडीनो को ढूँढ कर लायें।

जब ट्रुफ़ालडीनो मिल गया तो सारे देश के लोग उसके शो का इन्तजार करने लगे। इस बीच चैलियो जादूगर और फ़ैटा मौरगैना जादूगरनी[66] ने भी उसकी तैयारी करने में काफी सहायता की।

[65] Truffaldino jester

[66] Chelio wizard and Fata Morgana witch – Fata Morgana witch seems to be a famous witch of Italy. She is mentioned in several other stories also.

चैलियो को शक था कि फ़ैटा मोरगैना जादूगरनी जरूर ही कुछ गड़बड़ चाल चलेगी इसलिये वह गहरी अँधेरी घाटी की तरफ चल पड़ा जहाँ वह बूढ़ी जादूगरनी रहती थी।

वह यह सोच रहा था कि वह उसको इस बात के लिये विश्वास दिला सकता था कि वह अपनी चाल न खेले। जब वह फ़ैटा के पास पहुँचा तो फ़ैटा ने चैलियो का एक भेदभरी मुस्कान के साथ स्वागत किया।

उसने पूछा — "तुम मुझे यह बताने के लिये कि मैं क्या करूँ और क्या न करूँ यहाँ किस अधिकार से आये हो?"

बात करते करते उसने अपना ताश की गड्डी उठा ली और बोली — "क्या तुम फ़ैटा मौरगैना के ताश का पत्ता खींचने की हिम्मत कर सकते हो□अगर कर सकते हो तो करो। पर देखना कि अगर मैं हार गयी तो फिर जो तुम कहोगे मैं वही करूँगी।"

यह कह कर उसने ताश का एक पत्ता जादूगर को दिया और एक खुद लिया। एक पल बाद ही वह पागलों की तरह अपना पत्ता हिलाते हुए खुशी से बोली — "हा हा हा। हुक्म की रानी। अब तुम अगर अपना पत्ता दिखा सकते हो तो दिखाओ।"

चैलियो हार गया था। फ़ैटा खुशी से बोली — "मैं जीत गयी, मैं जीत गयी।" और ऐसा कहते हुए वह महल की तरफ भाग गयी।

ट्रुफ़ालडीनो ने जो दरबार का हॅसोड़िया था उसने राज्य के सारे जोकरों को इकट्ठा कर रखा था। और वह तो बस क्या ही बढ़िया शो था।

मजाकिया चेहरे और कपड़े पहन कर सब लोग मंच पर घूम रहे थे जिससे कि सारे देखने वाले हॅसी से दोहरे हुए जा रहे थे। हॅसते हॅसते उनकी ऑखों से उनके गालों पर ऑसू बहे जा रहे थे।

पर अफसोस राजकुमार ऐसे ही बैठा था। इतनी सब हॅसी की चीज़ें होते हुए भी राजकुमार का चेहरा वैसा ही पीला और उदास रहा।

हर आदमी राजकुमार को हॅसाने की इतनी कोशिश कर रहा था कि उनमें से किसी ने देखा ही नहीं कि फ़ैटा मौरगैना कब महल में खिसक आयी।

बहुत ऊॅची एड़ी के जूते पहने वह राजकुमार की तरफ चली जा रही थी जैसे वह उसे बहुत करीब से देखना चाहती थी।

इतने में उसका ध्यान बॅटा और वह अपने स्कर्ट की झालर में अटक कर राजकुमार के सामने गिर गयी। उसके हाथ पैर सब तरफ फैल गये और उसका धारी वाला निकर भी सबको दिखायी देने लगा।

कमरे में बैठे सारे लोग इस सबको देख कर आश्चर्य में पड़ गये और फिर जल्दी ही ज़ोर ज़ोर से हॅसने लगे। पर पता है क्या हुआ□ वह आदमी जो सबसे ज्यादा ज़ोर से हॅसा वह था राजकुमार।

पर क्या वह सचमुच राजकुमार ही था जो हॅसा था? उसकी तो हॅसी इतनी ज़्यादा थी कि उसको तो सॉस भी लेने का मौका नहीं मिल रहा था। वह तो बस उस अजीब सी हालत में पड़ी जादूगरनी को देखे जा रहा था जो उसके सामने पड़ी थी।

"यह तो सबसे अजीब निकर होगा जो दुनियॉ में पहले कभी किसी ने देखा होगा।"

जब वह लाल पड़े चेहरे वाली जादूगरनी उठने की कोशिश कर रही थी तो उसने गुस्से से राजकुमार की तरफ इशारा कर के कहा — "फ़ैटा मौरगैना पर हॅसने की तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई□मैं अभी तुमको सबक सिखाती हूॅ तब तुमको अपनी इस हरकत पर अफसोस होगा।

यह कह कर उस बूढ़ी जादूगरनी ने शाप के कुछ शब्द बुड़बुड़ाने शुरू किये तो महल के उस कमरे में बैठे सब डर गये और डर के मारे एकदम चुप हो गये।

जब फ़ैटा मौरगैना ने अपना जादू राजकुमार पर डाला तो सबकी ऑखें राजकुमार पर ठहर गयी — "मैं तुम्हें हुक्म देती हूॅ कि तुम तीन सन्तरों के प्रेम में पड़ जाओ।"

जैसे ही उसने ये शब्द कहे राजकुमार बोल पड़ा — "मैं तीन सन्तरों को प्यार करता हूॅ, मैं तीन सन्तरों को प्यार करता हूॅ।"

अपने शाप को काम करते देख कर सन्तुष्ट होते हुए उसने राजकुमार की तरफ देखा और फिर अपना हाथ हिलाया जिससे उसका पालतू राक्षस एक बहुत बड़ी धौंकनी[67] खिसकाता हुआ वहॉ ले आया।

उस धौंकनी से उसने एक बड़ा सा हवा का झोंका फेंका और उस झोंके से वह राजकुमार और वह हॅसोड़िया दोनों ही उस कमरे से बाहर जा पड़े – दूर कहीं बहुत दूर किसी दूसरे देश में।

राजकुमार और हॅसोड़िया दोनों ही अपने होश खो चुके थे और उनको यह भी नहीं पता था कि वे हैं कहॉ। वे एक जलते हुए रेगिस्तान में पड़े थे।

जब वे दोनों यह पता लगाने की कोशिश कर रहे थे कि उत्तर किधर है और दक्षिण किधर है, पूर्व किधर है और पश्चिम किधर है तभी वह चैलियो जादूगर वहॉ प्रगट हो गया।

वह राजकुमार और ट्रुफ़ालडीनो को यह बताने आया था कि वे इस शाप से कैसे आजाद हो सकते थे। चैलियो ने बताया कि जिन तीन सन्तरों के प्रेम में राजकुमार पड़ गया है वे तीनों सन्तरे एक किले में रखे हैं जो एक रेगिस्तान के बीच में है।

[67] Translated for the words “A pair of bellows” – a pair of bellows is a device constructed to furnish a strong blast of air. The simplest type consists of a flexible bag comprising a pair of rigid boards ... See its picture above.

एक डरावना राक्षस उनकी रात दिन रखवाली करता है। यह राक्षस दुनियॉ के सबसे ज़्यादा लम्बे पेड़ से भी ज़्यादा लम्बा है और अफ्रीका के तीन हाथियों से भी ज़्यादा ताकतवर है।

यह राक्षस खाना बनाने के पीछे पागल है। अगर कोई अनजाने में भी उसके पास चला जाये तो वह रसोई के चाकू से उस आने वाले को बिना किसी वजह के खच खच कर के तुरन्त ही बहुत छोटे छोटे टुकड़ों मे काट देता है।

जब राजकुमार और ट्रुफ़ालडीनो ने उन सन्तरों की खोज में जाने का यह भयानक हाल सुना तो वे बहुत डर गये।

पर चैलियो ने अपने कपड़ों की आस्तीन के अन्दर से जादू की एक छड़ी निकाली जिसके एक सिरे पर पॉच अलग अलग रंगों के रिबन लगे हुए थे। वे सारे रिबन हवा में एक घंटी के बजने पर नाच उठते थे जो उस जादू की छड़ी में लगी हुई थी।

जादूगर चैलियो ने उनको तसल्ली दी और कहा — "जब तक तुम इस जादू की छड़ी से उस राक्षस का ध्यान बॅटा सकते हो तब तक तुम लोगों को उन सन्तरों को लेने की चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं है।

इस जादू की छड़ी से तुम उतनी देर तक उस राक्षस का ध्यान उन सन्तरों पर से हटा सकते हो जितनी देर में तुम उनको वहॉ से ले सकते हो।"

फिर उसने उनको चेतावनी दी कि इस बात का ध्यान रखना कि अगर तुम उन सन्तरों को लेने में कामयाब हो जाओ तो उनको पानी के पास ही तोड़ना।

चैलियो से वह जादू की छड़ी ले कर वे दोनों उस किले को ढूँढने चले। जल्दी ही उनको वह किला मिल गया। हिम्मत बटोरते हुए वे दोनों उस किले में दबे पॉव दाखिल हुए।

पॉच सात मिनट में ही उन्होंने उस राक्षस रसोइये को ढूँढ लिया। उनको देखते ही वह उन पर गरजा — "आहा, क्या ही बहादुर लोग आज मेरी रसोई में आये हैं। तुम लोग ठीक समय पर आये हो। मुझे अपना सूप बनाने के लिये बहुत अच्छा मॉस चाहिये था।"

राजकुमार ने जल्दी में तुरन्त ही जादू की वह छड़ी हिला दी। तुरन्त ही वह राक्षस उस छड़ी के हिलते हुए रिबनों और बजती हुई घंटी से अपने होश खो बैठा और उस जादू की छड़ी की तरफ देखता ही रह गया।

ट्रुफ़ालडीनो तुरन्त ही उस राक्षस के पास से गुजरा और बिजली की सी तेज़ी से वहॉ रखे उसके तीनों सन्तरे उठा लिये और उनको अपनी जेब में डाल लिया।

सन्तरे अपनी जेब में डालने के बाद उसने राजकुमार की बॉह खींची और बोला — "चलो चलो, जल्दी चलो।" और फिर बिजली

की सी तेज़ी से वे दोनों उस किले के बाहर निकल कर अपनी जान बचा कर भाग लिये।

जब वे अपने घर जाने वाले रास्ते पर आये तो अचानक ही उन सन्तरों में कुछ बदलाव आने लगा। वे साइज में बड़े होते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था जैसे कि वे ज़िन्दा हों।

कुछ ही देर में वे इतने बड़े हो गये कि वे ट्रुफ़ालडीनो की जेब से निकल कर सड़क पर नीचे लुढ़कने लगे। और अब वे इतने बड़े हो गये थे कि राजकुमार और ट्रुफ़ालडीनो दोनों को उन लुढ़कते हुए सन्तरों को पकड़ कर रखने में बड़ी ताकत लगानी पड़ रही थी।

सूरज की कड़ी धूप से नीचे रेगिस्तान की रेत बुरी तरह से जल रही थी। ट्रुफ़ालडीनो थकान और प्यास की वजह से उन सन्तरों को वहीं छोड़ने को तैयार था।

वह बोला — "चलो, इन सन्तरों को भूल जाओ। हम इनको यहीं छोड़े देते हैं।" हालॉकि राजकुमार भी उतना ही थका और प्यासा था पर फिर भी वह उन सन्तरों को छोड़ने के लिये तैयार नहीं था। उसके वे प्यारे सन्तरे छोड़ जाने के लायक थे ही नहीं।

वह तो फ़ैटा मौरगैना के शाप के असर में था इसलिये वह उन सन्तरों को बहुत प्यार करता था।

वह थोड़ा रुक कर बोला — "हम इनको यहॉ अकेले नहीं छोड़ सकते।" फिर उसने एक पल के लिये कुछ सोचा और बोला ऐसा

करते हैं कि हम थोड़ी देर के लिये आराम कर लें फिर चलेंगे। ऐसा कह कर वह सन्तरों के साये में लेट गया और सो गया।

पर ट्रुफ़ालडीनो तो सारा पसीने से भीगा हुआ था। वह गुस्से से में बुड़बुड़ाया — "इस भट्टी में कोई कैसे सो सकता है? मुझे तो ऐसा लग रहा है जैसे मैं इस गर्मी में ज़िन्दा ही भुन रहा हूँ। मैं तो गर्मी में भुन भुन कर चमड़ा हो गया हूँ, पानी कहाँ से लाऊँ?"

यह कह कर उसने उन परेशान करने वाले सन्तरों की तरफ देखा तो एक अजीब सा विचार उसके मन में आया। और उस विचार के साथ ही वह हँस पड़ा जैसे उसने कोई बड़ा इनाम जीत लिया हो।

अपने विचार पर खुश हो कर उसने अपने आपसे कहा — "मैं बस एक सन्तरा खा लूँ। वही मुझे इस गर्मी और प्यास से बचाने के लिये काफी रहेगा।"

उस समय दरबार के उस हँसोड़िये की निगाहों में वे तीन बड़े और पके सन्तरे किसी शाही पकवान से कम नहीं थे।

वह धीरे से एक सबसे पास वाले सन्तरे के पास गया जिसके पीछे राजकुमार लेटा हुआ सो रहा था और उस सन्तरे को छीलना शुरू कर दिया।

पौप। उसका छिलका तो हाथ लगाते ही अपने आप फट गया और उसमें से रसीला गूदा नहीं बल्कि एक सुन्दर सी राजकुमारी बाहर निकल कर आ गयी और उस सन्तरे का छिलका जमीन पर

चारों तरफ बिखर गया। वह राजकुमारी ट्रुफ़ालडीनो की तरफ देख रही थी।

बाहर निकलते ही वह राजकुमारी बोली — "ओ भले आदमी, मेहरबानी कर के मुझे पानी दो वरना मैं प्यास से मर जाऊँगी।"

ट्रुफ़ालडीनो जो कुछ अभी उसकी ऑखों के सामने हुआ था उसको देखते हुए आश्चर्यचकित होता हुआ बोला — "मगर मेरे पास तो पानी नहीं है।"

सो उस राजकुमारी की प्यास बुझाने के लिये पानी पाने के लिये जल्दी में उसने दूसरा सन्तरा छील दिया।

पौप। पहले सन्तरे की तरह से इस सन्तरे का छिलका भी अपने आप ही फट गया और इसमें से भी एक राजकुमारी निकल आयी और इस सन्तरे का छिलका भी जमीन पर चारों तरफ बिखर गया।

इस राजकुमारी ने भी बाहर निकल कर कहा — "ओ भले आदमी, मेहरबानी कर के मुझे पानी दो वरना मैं प्यास से मर जाऊँगी।"

अब तो ट्रुफ़ालडीनो को इस बात का बिल्कुल भी अन्दाजा नहीं था कि वह इस सबसे मुसीबत से कैसे छुटकारा पाये। वह यह सोच ही रहा था कि वह क्या करे कि इतने में वे दोनों राजकुमारियॉ मर कर जमीन पर गिर पड़ीं।

वह हॅसोड़िया ट्रुफ़ालडीनो रो पड़ा और चिल्लाया — "ओह मेरे भगवान, मेरी सहायता करो। यह सब कैसे हो गया? मुझे यह सब क्यों देखना पड़ा?

मैं तो एक सादा सा शाही हॅसोड़िया हूॅ जिसका काम लोगों को हॅसाना है। मैं तो ऐसी मौत देखने के लिये पैदा नहीं हुआ था। और कोई और भी ऐसी चीज़ का सामना कैसे कर सकता था। मुझे यहॉ से चले जाना चाहिये और आज जो कुछ भी यहॉ हुआ है उसे भूल जाना चाहिये।"

और यह कह कर वह वहॉ से खोये हुए बच्चे की तरह रोता हुआ भाग लिया।

ट्रुफ़ालडीनो के रोने की आवाज सुन कर और जो कुछ भी उसके आस पास हो रहा था उसको महसूस कर के राजकुमार की ऑख खुल गयी। उसने पूछा — "यह सब यहॉ क्या हो रहा है?"

और जैसे ही उसने दो मरी हुई राजकुमारियों को अपने से कुछ गजों की दूरी पर जमीन पर पड़े देखा तो वह तो बहुत ही डर गया।

वह अपने आपसे ही बोला — "हे भगवान। दो मरी हुई राजकुमारियॉ? किसी ने मुझे कभी सिखाया ही नहीं कि इस दशा में मुझे क्या करना चाहिये। अब यह राजकुमार क्या करे?"

डरे हुए और प्यासे राजकुमार ने तीसरे और आखिरी सन्तरे की तरफ देखा तो उसका रस पीने के लिये उसके मुँह से लार टपकने लगी।

आखिर जब उससे नहीं सहा गया तो वह अपने प्यारे सन्तरे को छीलने पर मजबूर हो गया। पौप। उस सन्तरे का छिलका भी अपने आप फट कर खुल गया और उसमें से एक तीसरी राजकुमारी बाहर निकल आयी।

बाहर निकल कर वह राजकुमारी बोली — "मेरा नाम निनैटा[68] है। मुझे थोड़ा पानी चाहिये।"

राजकुमारी को देख कर राजकुमार का दुखी चेहरा खुशी से खिल उठा। वह बोला — "तुम इतनी सुन्दर हो कि मैं तो तुमको देखते ही प्यार करने लगा हूँ। क्या तुम मुझसे शादी करोगी?"

राजकुमारी बोली — "हाँ, मैं तुमसे शादी करूँगी पर मैं तुमसे इस पोशाक में शादी नही कर सकती। तुम पहले महल जाओ और मेरे लिये मेरे पहनने लायक कपड़े ले कर आओ।"

राजकुमार खुश हो कर बोला — "अच्छा तुम यहीं मेरा इन्तजार करो मैं तुम्हारे लिये शाही कपड़े ले कर अभी आता हूँ।" और यह कह कर अपने महल की तरफ भाग गया।

राजकुमार को जाये हुए अभी बहुत देर नहीं हुई थी कि रेगिस्तान की चिलचिलाती हुई धूप और उसकी गर्मी से वह सूखी हुई

[68] Ninetta

राजकुमारी धीरे धीरे सुकड़ने लगी जैसे किसी सन्तरे का रस निकल जाने के बाद सन्तरा निचुड़ा हुआ सा दिखायी देता है।

तभी अचानक एक जादू सा हुआ और उस जादू से हॅसोड़ियों का एक समूह पानी से भरे हुए बर्तन और बालटियॉ लिये हुए उसको बचाने के लिये वहॉ प्रगट हो गया।

लेकिन जैसे ही वे हॅसोड़िये वहॉ से गये कि फ़ैटा मौरगैना ने दोबारा वहॉ आने का विचार किया और हवा के एक झोंके के साथ वह वहॉ आ गयी।

वह बोली — "हॅुह, मुझे खुशी का अन्त[69] अच्छा नहीं लगता। राजकुमार को तो कपड़े मिल ही चुके हैं। वह और राजा और उन का शाही जुलूस बस किसी समय भी आता ही होगा। तो मुझे कोई और तरीका सोचना पड़ेगा जिससे कि मैं उनकी खुशियॉ रोक सकूँ।"

और उसने अपना कोई बुरा जादू डालने के लिये कुछ बुड़बुड़ाना शुरू कर दिया। देखते देखते वह राजकुमारी एक चूहे में बदल गयी। फिर उसने अपने पालतू राक्षस को राजकुमारी के कपड़े पहना दिये और उसको वहॉ खड़ा कर दिया।

जब महल से वह शाही जुलूस आया तो राजा जिसने असली राजकुमारी को पहले कभी देखा नहीं था उस जादूगरनी के जादू के

[69] Translated for the words "Happy ending"

धोखे में आ गया और फ़ैटा के पालतू राक्षस को ही वह राजकुमारी समझ बैठा जिसके लिये राजकुमार शाही कपड़े ले कर आया था।

पर राजकुमार जानता था कि वहॉ कुछ था जो गड़बड़ था। वह चिल्लाया — "नहीं नहीं, यह मेरी राजकुमारी निनैटा नहीं है। यह इतनी बदसूरत कैसे हो गयी?"

यह सुन कर राजा बोला — "हूँ, ऐसा ही सही कि यह वह नहीं है जिसको मैं सुन्दर कहूँगा पर अब तो तुमको इसी से शादी करनी पड़ेगी क्योंकि एक राजकुमार को तो अपना वायदा निभाना ही चाहिये।"

और फिर वह उस जादूगरनी के उस पालतू राक्षस की तरफ घूमा और बोला — "प्रिय राजकुमारी, अगर तुम्हारी इच्छा हो तो तुम हमारे साथ आओ।"

बेचारे राजकुमार के पास कोई और चारा नहीं था सिवाय इसके कि वह अपने पिता और अपनी होने वाली पत्नी के पीछे पीछे महल वापस जाता। वह बहुत दुखी था और अपने लिये बहुत पछता रहा था।

सब लोगों के पहुँचते ही महल में राजकुमार की शादी की तैयारियॉ होने लगीं। पर जैसे ही राजा अपने सिंहासन पर बैठने को था कि ज़रा सोचो कि वहॉ उसके बैठने पहले उस सिंहासन पर क्या था? एक चूहा।

राजा चिल्लाया — "चूहा।"

चैलियो जादूगर ने उन सब लोगों को पीछे किया जिनकी चीखों की आवाज से सारा कमरा गूँज रहा था। वह जल्दी से उस चूहे को देखने के लिये उस चूहे के सामने आया।

उसने भी कुछ जादू के शब्द बड़बड़ाये और उसके जादू के असर से असली राजकुमारी निनैटा अपनी पूरी सुन्दरता के साथ वहाँ प्रगट होगयी।

राजकुमार खुशी से चिल्ला पड़ा — "आखिर मुझे अपनी प्यारी राजकुमारी मिल ही गयी।"

आखिर में फ़ैटा मौरगैना की चाल का सारा कच्चा चिट्ठा खुल गया। वह और उसका पालतू राक्षस महल से ही नहीं बल्कि राज्य से भी बाहर निकाल दिये गये।

राजा ने राजकुमार की राजकुमारी से शादी करते हुए खुश हो कर सन्तुष्ट होते हुए कहा — "बहुत अच्छे, मुझे तो खुशी का अन्त ही अच्छा लगता है।"

खुशी के उस हल्ले गुल्ले में नाटक देखने वालों के सामने पैन्टैलून फिर प्रगट हुआ और बोला — "चाहे ऑसू खुशी के हों या गम के, हम सब आगे बढ़ते रहते हैं। एक अच्छे नाटक का ऐसा अन्त होना चाहिये जो एक दूसरे नाटक की शुरूआत को जन्म दे। सो विदा। हम फिर मिलेंगे।"

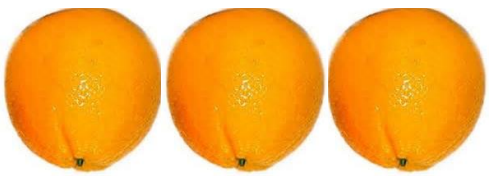

15 जिप्सी रानी[70]

बच्चो यह लोक कथा मध्य अमेरिका के मैक्सिको देश[71] में कही सुनी जाती है। भूमध्य रेखीय देश होने की वजह से यहाँ सन्तरे बहुत बढ़िया, रसीले, मीठे और बहुत सारे होते हैं।

बहुत दिन पहले की बात है कि मेक्सिको में एक राजा रहता था। उसके एक बेटा था।

जब राजकुमार शादी के लायक हुआ तो उसने अपने माता पिता से कहा कि वह दुनियाँ की सबसे सुन्दर लड़की से शादी करना चाहता है इसलिये उसको ढूँढने को लिये वह दुनियाँ घूमने जारहा है।

सो वह राजकुमार महल छोड़ कर चल दिया और चलते चलते एक फव्वारे के पास आ पहुँचा। वहाँ वह पानी पीने के लिये रुका।

जैसे ही वह पानी पीने के लिये झुका तो उस को उस पानी में तीन सन्तरों की परछाईं दिखायी दी सो उसने ऊपर की तरफ देखा तो एक पेड़ की डाली पर तीन सन्तरे लगे हुए थे।

राजकुमार ने सोचा ये सन्तरे कितने मीठे और

---

[70] The Gypsy Queen (La Reina Mora) – a folktale from Mexico, Central America. Adapted from the Website : http://www.g-world.org/magictales/reina.html
Adopted, retold and written by Srita. Angela Ruiz

[71] Mexico – a country just South of USA.

रसीले दिखायी देते हैं। बजाय पानी पीने के इन्हीं सन्तरों का रस पिया जाये। सो वह उस पेड़ पर चढ़ गया और उसने वे तीनों सन्तरे तोड़ लिये।

उसने एक सन्तरा छीला और तोड़ा तो उसमें से एक बहुत सुन्दर लड़की निकली। निकलते ही वह राजकुमार से बोली मुझे रोटी चाहिये।

राजकुमार बोला — "मैं तुमको रोटी नहीं दे सकता क्योंकि मेरे पास तो रोटी है ही नहीं।"

वह लड़की बोली — "तो मैं अपने सन्तरे में वापस जाती हूँ।" कह कर वह लड़की उस सन्तरे में वापस चली गयी और वह सन्तरा फिर से साबुत हो गया।

राजकुमार ने दूसरा सन्तरा छील कर तोड़ा तो उसमें से भी एक लड़की निकली जो पहली लड़की से भी ज़्यादा सुन्दर थी। उसने भी सन्तरे में से निकल कर रोटी माँगी तो राजकुमार बोला — "मैं तुमको रोटी नहीं दे सकता क्योंकि मेरे पास तो रोटी है ही नहीं।"

वह लड़की बोली — "तो मैं अपने सन्तरे में वापस जाती हूँ।" कह कर वह लड़की भी अपने सन्तरे में वापस चली गयी और वह सन्तरा भी फिर से साबुत हो गया।

अब उस राजकुमार की समझ में कुछ कुछ आया तो उसने सोचा कि तीसरा सन्तरा तोड़ने से पहले उसको कहीं से रोटी ले लेनी चाहिये ताकि ऐसा न हो कि तीसरे सन्तरे में से निकल कर वह

लड़की भी रोटी मॉगे और रोटी न मिलने की वजह से वह भी सन्तरे में गायब हो जाये।

वह राजकुमार अभी यह सब सोच ही रहा था कि वहॉ से एक जिप्सी अपनी गाड़ी में बैठा गुजर रहा था। उसको देख कर वह राजकुमार चिल्लाया — "नमस्ते। मुझे एक रोटी दे दो मैं तुमको उस के लिये एक सोने का सिक्का दूँगा।"

उस जिप्सी ने जल्दी से अपनी गाड़ी से उतर कर राजकुमार को एक रोटी दे दी और राजकुमार ने उसको एक सोने का सिक्का दे दिया। अब राजकुमार ने खुशी से सन्तुष्ट होते हुए तीसरा सन्तरा छीला और तोड़ा।

उसमें से भी पहले की तरह एक लड़की निकली। यह लड़की पहली दो लड़कियों से भी ज्यादा सुन्दर थी। इसने भी निकलते ही राजकुमार से रोटी मॉगी।

अब तो राजकुमार के पास रोटी थी सो राजकुमार ने खुशी खुशी उसको रोटी दे दी। रोटी खा कर वह बोली — "अब मैं तुम्हारी हूँ और तुम मेरे साथ कुछ भी कर सकते हो।"

राजकुमार बोला — "मैं तो तुमसे शादी करना चाहता हूँ।"

उस लड़की ने कोई कपड़ा नहीं पहना हुआ था और क्योंकि राजकुमार उसको अपने महल ले जाना चाहता था और वह उसको इस हालत में अपने घर ले जा नहीं सकता था।

राजकुमार ने जिप्सी के कपड़े देखे तो वे तो बहुत ही गन्दे थे। सो राजकुमार ने उस लड़की से कहा — "तुम यहीं इस जिप्सी के पास ठहरो तब तक मैं तुम्हारे लिये कुछ कपड़े ले कर आता हूँ।

जिप्सी के भी एक बेटी थी जो गाड़ी में सो रही थी इसलिये वह यह सब नहीं देख पायी थी जो वहाँ हो रहा था।

जब राजकुमार वहाँ से जा रहा था तब वह लड़की जाग गयी और उसने उसको जाते हुए देख लिया। राजकुमार को देखते ही वह उसको प्यार करने लगी।

वह तुरन्त ही गाड़ी में से कूद पड़ी और अपने पिता से पूछा कि वहाँ क्या हुआ था। जिप्सी ने उसको सब कुछ बता दिया।

उस जिप्सी लड़की ने जब उस सन्तरे वाली लड़की को देखा तो वह उससे बोली — "लाओ मैं तुम्हारे बाल सँवार दूँ। इससे जब राजकुमार आयेगा तब तुम बहुत सुन्दर दिखाई दोगी।"

वह लड़की तैयार हो गयी। जैसे ही उस जिप्सी लड़की ने उस के बालों में कंघी करनी शुरू की अचानक ही उसने एक पिन उसके सिर में चुभो दी और तुरन्त ही वह लड़की एक फाख्ता के रूप में बदल गयी।

फिर उस जिप्सी लड़की ने अपने कपड़े उतार दिये और उस सन्तरे वाली लड़की की जगह बैठ गयी।

जल्दी ही राजकुमार कपड़े ले कर लौट आया तो उसने उस लड़की को देख कर उससे पूछा — "अरे तुम इतनी सॉवली कैसे हो गयीं?"

उस जादूगरनी जिप्सी ने जवाब दिया — "इस तेज़ धूप से मेरा रंग सॉवला पड़ गया है।"

राजकुमार ने उस जिप्सी लड़की का विश्वास कर लिया कि वह वही सन्तरे वाली लड़की थी और अब उसका रंग सॉवला पड़ गया है। वह उसको अपने महल ले गया और वहॉ जा कर उसने उससे शादी कर ली।

एक दिन एक फाख्ता राजा के बागीचे में आयी और वहॉ के माली से पूछा — "ओ राजा के माली, राजकुमार और उसकी पत्नी कैसे हैं?"

माली बोला — "कभी कभी तो राजकुमार गाते हैं पर अक्सर तो वह रोया ही करते हैं।" उसके बाद वह फाख्ता वहॉ बराबर आती रही और राजकुमार के बारे में पूछती रही।

एक दिन उस माली ने राजकुमार को उस फाख्ता के बारे में बताया तो राजकुमार ने माली को कहा कि अगली बार जब भी वह फाख्ता बागीचे में आये तो वह उसको पकड़ ले और उसको उसके पास ले आये।

माली ने उस पेड़ पर जहॉ वह फाख्ता आ कर बैठती थी एक जाल बिछा दिया सो अगली बार जब वह फाख्ता वहॉ आयी और

फिर वहॉ से उसने उड़ने की कोशिश की तो उड़ ही नहीं पायी। वह तो जाल में फॅस गयी थी। माली उसको पकड़ कर राजकुमार के पास ले गया।

राजकुमार को वह छोटी सी फाख्ता बहुत अच्छी लगी सो उसने उसको अपने हाथों में ले लिया और उसके सिर पर हाथ फेरने लगा।

जब वह उस फाख्ता के सिर पर हाथ फेर रहा था तो उसको उसके सिर में एक पिन महसूस हुई। उसने उस पिन को खींच कर बाहर निकाल दिया। जैसे ही उसके सिर से वह पिन बाहर निकली वह फाख्ता फिर से वही सन्तरे वाली लड़की बन गयी।

उसने राजकुमार को अपनी सारी कहानी बतायी और राजकुमार ने वह सारी कहानी अपने पिता राजा को सुनायी।

राजा यह सुन कर बहुत गुस्सा हुआ और उस जिप्सी को जला कर मारने की सजा सुना दी। राजकुमार और सन्तरे वाली लड़की की शादी हो गयी और वे दोनों खुशी खुशी रहने लगे।

16 जादुई सन्तरे का पेड़[72]

सन्तरे की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये उत्तरी अमेरिका के हेटी[73] देश के मूल निवासियों की लोक कथाओं से ली है।

एक बार एक लड़की थी जिसके जन्मते ही उसकी माँ मर गयी थी। कुछ समय तक तो उसके पिता ने इन्तजार किया पर फिर उसने दूसरी शादी कर ली। जब उसने दूसरी शादी की तो उसको अपनी नयी पत्नी बड़ी नीच और बहुत ही बेरहम किस्म की मिली।

कभी कभी तो वह उस लडकी के साथ इतनी नीचता का बर्ताव करती कि वह उस लड़की को सारा सारा दिन खाना भी नहीं देती थी। वह लड़की बेचारी अक्सर ही भूखी रहती।

एक दिन वह लड़की जब स्कूल से घर लौटी तो उसने देखा कि एक मेज पर तीन पके हुए सन्तरे रखे हैं और उनकी खुशबू से सारा कमरा महक रहा है।

उनको देख कर उस लड़की के मुँह में पानी भर आया। उसने इधर देखा उधर देखा और जब देख लिया कि कोई आस पास में नहीं था तो उसने उनमें से एक सन्तरा उठाया, छीला और खा लिया।

---

[72] The Magic Orange Tree – a folktale from Haiti, North America. Adapted from the Web Site : http://spiritoftrees.org/the-magic-orange-tree Retold by Diane Wolkstein

[73] Haiti – is a country in Caribbean Sea but still in the continent of North America

पर वह सन्तरा इतना मीठा और रसीला था कि एक सन्तरे से उसका मन नहीं भरा। उसने फिर चारों तरफ देखा और दूसरा सन्तरा भी उठा कर खा लिया, और फिर तीसरा भी।

पर जैसे ही उसने तीसरा सन्तरा खा कर खत्म किया कि उसकी सौतेली मॉ वहॉ आ गयी। आ कर उसने देखा कि उसने मेज पर जो सन्तरे रखे थे वे वहॉ नहीं हैं।

वह चिल्लायी — "किसने लिये मेरे सन्तरे जो मैंने अभी अभी मेज पर रखे थे। जिसने भी मेरे सन्तरे चुराये हैं वह अपनी आखिरी प्रार्थना कर ले क्योंकि बाद में उसको उसका भी मौका नहीं मिलेगा।"

लड़की यह सुन कर डर गयी और घर से भाग गयी। भागते भागते जंगल से होती हुई वह अपनी मॉ की कब्र पर आ पहुँची और वहॉ बैठ कर रोने लगी।

वह सारी रात वहॉ बैठी बैठी रोती रही और अपनी मॉ से सहायता की प्रार्थना करती रही। रोते रोते पता नहीं कब उसकी ऑख लग गयी और वह वहीं सो गयी।

सुबह को सूरज निकलने के साथ साथ ही वह भी जाग गयी। पर जब वह उठी तो उसकी स्कर्ट में से कुछ नीचे गिरा। वह क्या था यह देखने के लिये वह नीचे झुकी तो उसने देखा कि वह तो सन्तरे का एक बीज था।

जैसे ही वह बीज जमीन पर गिरा वह जमीन में अन्दर तक धँस गया और उसमें से दो छोटे छोटे हरे पत्ते निकल आये। लड़की को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ और आश्चर्य से उसने गाया —

ओ सन्तरे के पेड़ तू बड़ा हो जा, तू बड़ा हो जा
वह सौतेली माँ है वह असली माँ नहीं है
तू बड़ा हो जा ओ सन्तरे के पेड़, तू बड़ा हो जा

लड़की के गाने के साथ साथ सन्तरे का पेड़ बड़ा होने लगा और वह लड़की के बराबर ही ऊँचा हो गया। उस लड़की ने फिर गाया —

ओ सन्तरे के पेड़, शाखें निकालो, शाखें निकालो
सौतेली माँ असली माँ नहीं है, ओ सन्तरे के पेड़

बस उसमें से शाखें निकलने लगीं टेढ़ी मेढ़ी, लम्बी चौड़ी, मोटी पतली। उसने फिर गाया

ओ सन्तरे के पेड़, फूलो फूलो
सौतेली माँ असली माँ नहीं है, ओ सन्तरे के पेड़

फिर उसमें से फूल निकलने लगे। बहुत सारे फूल निकले। कुछ ही देर में वे फूल मुरझा गये और उनकी जगह सन्तरे के छोटे छोटे फल निकल आये। वे छोटे छोटे सन्तरे देख कर लड़की बहुत खुश हुई तो उसने फिर गाया —

पक जाओ ओ सन्तरे के पेड़ के फल पक जाओ
सौतेली मॉ असली मॉ नहीं है, ओ सन्तरे के पेड़

कुछ ही पल में वह पेड़ मीठे पके सुनहरी सन्तरों से भर गया। यह देख कर तो वह खुशी से नाच उठी। पर जब उसका नाचना कुछ कम हुआ तो उसने ऊपर की तरफ देखा तो देखा कि वह पेड़ तो आसमान तक पहुॅच गया है और वह तो किसी तरह भी वहॉ तक नहीं पहुॅच सकती। अब वह क्या करे?

पर वह एक बहुत ही समझदार लड़की थी सो उसने फिर गाया —

नीचे आओ ओ सन्तरे के पेड़ नीचे आओ, और नीचे आओ
सौतेली मॉ असली मॉ नहीं है, ओ सन्तरे के पेड़

उसका गाना सुन कर वह सन्तरे का पेड़ नीचे आ गया। जब वह उस लड़की की ऊॅचाई तक आ गया तो उसने उस पेड़ पर से बहुत सारे सन्तरे तोड़े और उनको ले कर घर चली गयी।

जैसे ही उसकी सौतेली मॉ ने उस लड़की के हाथ में सुनहरी सन्तरे देखे उसने वे सन्तरे उसके हाथ से छीन लिये और उनको खुद खाने लगी।

उसने बहुत जल्दी ही वे सारे सन्तरे खत्म कर लिये। फिर वह बोली — "मेरी प्यारी बिटिया, यह तो बता तुझे इतने मीठे और रसीले सन्तरे कहॉ से मिले?"

लड़की थोड़ा हिचकिचायी। असल में वह उसको यह बताना नहीं चाहती थी कि उसको वे सन्तरे कहॉ से मिले सो वह चुप खड़ी रह गयी।

पर लड़की को कुछ न बोलते देख कर उसकी सौतेली मॉ ने उसकी कलाई पकड़ कर ऐंठनी शुरू कर दी और बोली — "बता, कहॉ से आये ये सन्तरे?"

तब लड़की उसको जंगल में उस सन्तरे के पेड़ के पास ले गयी। पर जैसा कि तुमको मालूम है कि लड़की बहुत समझदार थी। जैसे ही वह उस सन्तरे के पेड़ के पास आयी उसने गाया —

ओ सन्तरे के पेड़ तू बड़ा हो जा, तू बड़ा हो जा
वह सौतेली मॉ है वह असली मॉ नहीं है
तू बड़ा हो जा, ओ सन्तरे के पेड़, तू बड़ा हो जा

और सन्तरे के पेड़ ने बढ़ना शुरू कर दिया। वह फिर आसमान तक पहुॅच गया था। अब उसकी सौतेली मॉ क्या करे?

उसने फिर से उससे कहना शुरू किया — "तू ही तो मेरी प्यारी बेटी है। तू आज से जितना चाहे उतना खा लिया करना। पेड़ से कह कि वह नीचे आ जाये फिर तू उस पर से मेरे लिये सन्तरे तोड़ देना।"

यह सुन कर लड़की ने बहुत ही नीची आवाज में गाया —

नीचे आओ ओ सन्तरे के पेड़ नीचे आओ, और नीचे आओ
सौतेली मॉ असली मॉ नहीं है, ओ सन्तरे के पेड़

अब वह पेड़ नीचा होना शुरू हो गया। जब वह पेड़ उसकी मॉ की ऊॅचाई तक आ गया तो उसकी मॉ उसके ऊपर कूद पड़ी और इतनी जल्दी जल्दी चढ़ने लगी जैसे कोई बन्दर चढ़ता है। जैसे जैसे वह हर शाख पर चढ़ती गयी वह उस पेड़ के सारे सन्तरे खाती गयी।

लड़की ने देखा कि जिस तरह से उसकी सौतेली मॉ उस पेड़ से सन्तरे तोड़ तोड़ कर खा रही थी उस तरह से तो उसके लिये कोई भी सन्तरा नहीं बचेगा। तो फिर वह क्या करेगी।

सो उसने फिर से नीची आवाज में गाया —

ओ सन्तरे के पेड़, तू बड़ा हो जा, तू बड़ा हो जा
वह सौतेली मॉ है वह असली मॉ नहीं है
तू बड़ा हो जा, ओ सन्तरे के पेड़, तू बड़ा हो जा

और वह पेड़ फिर बढ़ने लगा। और उसके साथ साथ ऊॅची होने लगी उसकी मॉ भी। यह देख कर वह चिल्लायी — "अरे कोई है? मुझे बचाओ, मुझे कोई बचाओ।"

लड़की चिल्लायी — "ओ सन्तरे के पेड़ टूट जा, ओ सन्तरे के पेड़ टूट जा।" बस यह सुनते ही वह सन्तरे का पेड़ तो हजारों टुकड़ों में टूट कर नीचे गिर गया और साथ में उसकी मॉ भी।

फिर उसने उस पेड़ की टूटी शाखाओं में उस पेड़ के बीज को ढूँढा तो बड़ी मुश्किल से उसको एक छोटा सा सन्तरे का बीज मिला। उसने उसको फिर से बो दिया और गाया —

ओ सन्तरे के पेड़ तू बड़ा हो जा, तू बड़ा हो जा
वह सौतेली माँ है वह असली माँ नहीं है
तू बड़ा हो जा, ओ सन्तरे के पेड़, तू बड़ा हो जा

जब वह पेड़ उसकी अपनी ऊँचाई तक का हो गया तो उसने उसमें बहुत सारे सन्तरे तोड़ लिये और जा कर उनको बाजार में बेच आयी। वे सन्तरे इतने मीठे थे कि लोगों ने उसके सारे सन्तरे बहुत अच्छे दामों पर खरीद लिये।

17 बेकर का आलसी बेटा[74]

सन्तरों की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के पुर्तगाल देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार की बात है कि एक स्त्री बेकर[75] थी। उसके एक बहुत ही आलसी बेटा था। जब सारे बच्चे आग जलाने के लिये लकड़ी इकट्ठा करने के लिये जाते थे तो उसको भी लकड़ी लाने के लिये कहा जाता था पर वह कभी नहीं जाता था।

अपने ऐसे आलसी बेटे को देख कर उस स्त्री को बहुत दुख होता था पर उसकी समझ में नहीं आता कि वह उसके बारे में करे क्या।

सो एक दिन उसने उस बेटे को जबरदस्ती उन बच्चों के साथ लकड़ियॉ लाने के लिये भेज दिया सो वह दूसरे बच्चों के साथ चला गया।

पर जैसे ही वह जंगल पहुॅचा तो दूसरे बच्चे तो लकड़ियॉ और पेड़ों की छोटी छोटी शाखें इकट्ठा करने में लग गये पर वह एक नदी के किनारे अपना खाना खाने बैठ गया जो वह अपने घर से लाया था।

---

[74] Baker's Idle Son – a folktale from Portugal, Europe. Adapted from the book : "Portugese Folk-Tales" at https://www.surlalunefairytales.com/book.php?id=54&tale=1695

[75] Baker is the man who bakes bread, biscuits, cookies cakes etc… Baking is a process of cooking food.

जब वह खाना खा रहा था तो एक मछली वहॉ आयी और उसका गिरा हुआ खाना खाने लगी। आखिर उसने उसको पकड़ लिया। मछली ने उससे प्रार्थना की कि वह उसको मारे नहीं बल्कि वह उसकी हर इच्छा पूरी करेगी।

पर उस आलसी लड़के को उस मछली पर विश्वास नहीं हुआ तो वह उससे बोला — "मेरे भगवान और मेरी मछली के नाम पर मैं यह इच्छा करता हूॅ कि लकड़ी का एक बहुत बड़ा ढेर जो मेरे साथ वाले सब बच्चों के लकड़ी के ढेरों से भी बड़ा हो मेरे सामने आ जाये। और वह मेरे बिना देखे ही यहॉ से चलता जाये।"

तुरन्त ही लकड़ी का बॅधा हुआ एक बहुत बड़ा ढेर उसके सामने आगया और तभी उसने उस मछली को समुद्र में जाने दिया।

अब वह घर वापस चला। घर जाते समय वह बीच में महल के सामने से गुजर रहा था। महल की खिड़की पर राजकुमारी के साथ राजा भी बैठा था।

उसको उस लकड़ी के ढेर को अपने आप चलते देख कर बहुत आनन्द आया। राजकुमारी को भी वह देखने में इतना अच्छा लगा कि वह हॅस पड़ी।

उस आलसी लड़के ने राजकुमारी के देख कर कहा — "मेरे भगवान और मेरी मछली के नाम पर मैं यह इच्छा करता हूॅ कि राजकुमारी के एक बेटा हो और उसको यह पता न चले कि उसका पिता कौन है।"

राजकुमारी को उसी समय से लगने लगा कि उसको बच्चा होने वाला है। यह जान कर राजा उससे बहुत खुश हुआ। उसने उसको उसकी प्रिय दासियों के साथ एक महल में बन्द करवा दिया। समय आने पर राजकुमारी ने एक बेटे को जन्म दिया।

वह आलसी लड़का फिर जंगल लौटा तो वह मछली फिर आयी और उसने लड़के को बताया कि उस राजकुमारी के बेटा हुआ है।

मछली के कहे अनुसार उसने राजा के महल के सामने एक महल बनवाया जो राजा के महल से भी ज़्यादा शानदार था। इसके

महल के बागीचे में हर रंग के फूल थे और उसमें एक फलों के पेड़ों का बागीचा भी था। इस फल के बागीचे में एक सन्तरे का पेड़ था जिस पर **12** सुन्हरी सन्तरे लगे थे।

यह सब उसे उस मछली और परियों का दिया हुआ था। वह आलसी लड़का उस महल में गया और एक राजकुमार बन कर रहने लगा। दूसरे लोग उसको केवल राजकुमार की तरह से ही जानते थे किसी और तरह जानते ही नहीं थे।

एक दिन राजा ने उस लड़के के पास यह सन्देश भेजा कि वह उसका महल देखना चाहता है। उस आलसी लड़के ने कहा कि वह खुशी से अपना महल उसको दिखायेगा। उसने राजा और उसके सारे दरबारियों को सुबह के नाश्ते के लिये बुला लिया।

राजा और उसके दरबारी उसका महल देख कर बहुत खुश हुए कि उसमें कितने आराम के साधन थे। महल देखने के बाद वे उसका बागीचा देखने गये।

बागीचे में इतने सारे फूल देख कर वे तो आश्चर्यचकित रह गये पर सबसे ज्यादा आश्चर्य तो उनको उसके सन्तरे का पेड़ देख कर हुआ जो उसके फलों के बागीचे में लगा हुआ था और जिस पर सुनहरी सन्तरे लगे हुए थे।

उस आलसी लड़के ने राजा और उसके दरबारियों से कहा कि वह वहॉ से कुछ भी ले जा सकते था सिवाय सुनहरी सन्तरों के।

सब कुछ देख कर वे सब नाश्ते के लिये महल लौटे और नाश्ते के लिये बैठे। जब नाश्ता खत्म हो गया तो राजा और दरबारी लोग अपने महल जाने के लिये लौटे।

जाते समय उस लड़के ने राजा से कहा कि वह उन सबको अपने महल में बुला कर बहुत खुश था और उसने उनका बहुत अच्छे से स्वागत किया पर वह इस बात से बहुत दुखी था कि उस के उन सुनहरी सन्तरों में से एक सन्तरा गायब था।

दरबारियों ने तो साफ मना कर दिया कि उनमें किसी ने कोई सन्तरा नहीं लिया। राजा को यह सुन कर बहुत शर्म आयी क्योंकि अब केवल वही एक देखने से रह गया था।

उसने अपना कोट उतारा पर जॉच करने पर उसकी जेबों से कुछ नहीं मिला। सो वह जब अपने कोट को दोबारा पहनने लगा

तो उस लड़के ने उससे एक बार फिर से अपनी जेबें दिखाने के लिये कहा क्योंकि जब वह सन्तरा उसके दरबारियों ने नहीं लिया था तो जरूर उसी ने लिया होगा।

सो राजा ने फिर से अपनी जेब में हाथ डाला और एक सन्तरा निकाला। राजा यह देख कर बहुत परेशान होगया कि यह सन्तरा उसकी जेब में आया कहॉ से? क्योंकि उसने तो सन्तरा छुआ भी नहीं था। उसको बहुत शर्म आयी।

आलसी लड़के ने कहा कि आप चिन्ता न करें क्योंकि यही राजकुमारी के साथ भी हुआ जिसने यह जाने बिना एक बेटे को जन्म दिया कि उसका पिता कौन था।

इस तरह मछली के ऊपर जो जादू पड़ा हुआ था वह टूट गया। अब वह एक सुन्दर राजकुमार बन गयी और उसने राजकुमारी से शादी कर ली। और वह आलसी लड़का एक बहुत ही अमीर आदमी बन कर अपने घर लौट गया।

18 क्रिसमस का सन्तरा[76]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के डेनमार्क देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक बहुत छोटी लड़की डेनमार्क के एक अनाथालय में रहने के लिये आयी।

जैसे जैसे क्रिसमस का समय पास आया तो दूसरे बच्चों ने उस लड़की से क्रिसमस के उस सुन्दर पेड़ के बारे में बात करनी शुरू की जो क्रिसमस की सुबह को नीचे बड़े कमरे में लगने वाला था।

अपने रोज के मामूली से नाश्ते के बाद हर बच्चे को उस दिन एक और केवल एक ही क्रिसमस भेंट मिलने वाली थी और वह था एक सन्तरा।

उस अनाथालय का हेडमास्टर बड़े जिद्दी किस्म का आदमी था और वह क्रिसमस को एक मुसीबत समझता था। वह क्रिसमस की सुबह तक किसी बच्चे को क्रिसमस का पेड़ देखने के लिये नीचे भी नहीं आने देता था।

सो क्रिसमस के पहले दिन की शाम को जब उसने उस छोटी लड़की को क्रिसमस के पेड़ को देखने के लिये चोरी से सीढ़ियों से नीचे जाते देखा तो उसने यह घोषणा कर दी कि उसको उसकी

[76] The Christmas Orange – a folktale from Denmark, Europe. Adapted from the Web site : http://www.motivateus.com/stories/c-orange.htm

क्रिसमस की भेंट का सन्तरा नहीं मिलेगा क्योंकि वह उस पेड़ को देखने के लिये इतनी उत्सुक थी कि उसने अनाथालय के नियमों को तोड़ा था।

वह छोटी लड़की बेचारी रोती हुई अपने कमरे में भाग गयी। उसका दिल टूट गया था और वह अपनी बुरी किस्मत पर रो रही थी कि मैं नीचे उस पेड़ को देखने गयी ही क्यों।

अगली सुबह जब बड़े बच्चे नाश्ते के लिये नीचे जा रहे थे तो वह छोटी लड़की नीचे नाश्ते के लिये नहीं गयी और अपने बिस्तर में ही पड़ी रही। वह यह सहन नहीं कर सकती थी कि दूसरी लड़कियों को तो क्रिसमस की भेंट मिले और वह खड़ी उनका मुँह देखती रहे।

बाद में जब सब बच्चे अपना अपना नाश्ता कर के ऊपर आये तो एक बच्चे ने उसको एक रूमाल दिया।

उस लड़की को वह रूमाल देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने सावधानी से उस रूमाल को खोला तो उसे विश्वास ही नहीं हुआ कि उसमें एक छिला हुआ और फॉकें किया गया सन्तरा रखा था।

उसने पूछा — "यह कैसे हुआ?"

बच्चे ने जवाब दिया — "यह ऐसे हुआ कि हर बच्चे ने अपने छिले हुए और फॉकें किये गये सन्तरे में से एक एक फॉक निकाल कर तुम्हारे लिये रख दी थी ताकि तुमको भी तुम्हारी क्रिसमस की भेंट का सन्तरा मिल सके।"

यह देख कर उस लड़की की ऑखों में ऑसू आ गये।

List of Stories in "Fruits in Folktales-1"
(Apples and Oranges)

1. Dorothy and the Seed of Apple
2. Apple of Contentment
3. A Prince and the Apple
4. Lough-Earne's Gold Apples
5. The Little Shepherd
6. Apple Girl
7. Why the Hawk Preys on Chicks
8. Cloven Youth
9. Pom and Peel
10. Iduna and the Magic Apples
11. The King and the Apple
12. The Three Golden Oranges
13. The Three Citrons of Love
14. The Love for Three Oranges
15. The Gypsy Queen
16. The Magic Orange Tree
17. Baker's Idle Son
18. The Christmas Orange

List of Stories in "Fruits in Folktales-2"
(Coconuts, Figs, Grapes, Watermelon, Mulberry, Peach, Pear, Plum, Multiple)

1. Pippina the Serpent
2. The King's Daughter Who Could Never Get Enough Figs
3. The Princess With the Horns
4. Buchettino
5. Spider and the Crows
6. Salamanna Grapes
7. Hwan and Dang
8. The Child of Mulberry Tree
9. Momotaro or Little Peachling
10. The Magic Pear Tree
11. The Little Girl Sold With the Pears
12. Olive
13. Giovannuza Fox
14. Yo Lung Mountain
15. Plum Tree
16. The Foolish Monkey and the Crab
17. The Mincing Princess
18. The Love of the Three Pomegranates
19. The Snake
20. The Little Fox and the Pomegranate King
21. Spider and the Honey Tree
22. Pippina the Serpent

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस सीरीज़ में 100 से अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं।
पूरे सूचीपत्र के लिये इस पते पर लिखें ः hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
जून 2022